श्रीः ।

प्रश्नज्ञानप्रदीपः ।

(केरलीयप्रश्नशास्त्रम्.)

श्रीमंतपँवारवंशावतंससुठालियाधीशमहाराज-
शंभुसिंहविरचितया-
भाषाटीकया समलंकृतः ।

सोयं

खेमराज श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणालये
मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।

संवत् १९५९, शके १८२४.

श्रीगणेशाय नमः ।

प्रस्तावना.

अचिंत्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥ १ ॥

सच्चिदानंद सर्वशक्तिमान् नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव अद्वितीय अनुपम, जगदाधार, अज, निराकार, न्यायकारी, सनातन, सर्वमंगलमय परमसहायक, सर्वानंदप्रद, सकलदुःखविनाशक, अविद्यान्धकारनिर्मूलक, अधमोद्धारक, पतितपावन, विश्वविनोदक, निरंजन, निर्विकार, मोक्षप्रद, निरामय, निरीह, दीनदयाल, अनंतकोटिब्रह्मांडाधीश, जगदीशको कोटिशः धन्यवाद हैं जिसने इस सृष्टिको उत्पन्न किया और प्रत्येक जीवधारिके सौख्यार्थ सम्पूर्ण वस्तु उत्पन्न कीं ऐसा कोईभी विषय नहीं है जिसके जाननेके लिये ईश्वरने कोई न कोई युक्ति पैदा न की हो जो युक्ति विद्वानोंके ध्यानमें आगई उन्होंका प्राकट्य होगया और जो विषय उन्होंके विचारमें न आया वह गुप्त रहा जैसे रोगसे निवृत्ति होनेके लिये उस परमात्माने औषधि सृजीं और प्राचीन ऋषियोंने उन औषधियोंसे अनुभव लेकर वैद्यक ग्रंथ रचे इसी तरह भूत, भविष्य, वर्तमान जाननेके लिये उसने ज्योतिषशास्त्रका उत्पादन किया जिसको पुराने महर्षियोंने प्रकरणबद्ध रचकर प्रकाशित किया आज कल ज्योतिष विद्या लुप्तप्राय होरही है और जो कुछ भाग्यवश शेष रह गई है उसके माननेमें बहुधा लोग वितंडा वाद करते हैं और जो शंकाएँ उन्होंकी ओरसे प्रायः उपस्थित होती हैं उन्होंका समाधान प्रश्नोत्तरकी रीतिसे नीचे लिखा जाता है ।

प्रश्न—ज्योतिषका क्या अर्थ है और किसे कहते हैं ?

उत्तर—ज्योतिषका अर्थ प्रकाश है जिसमें प्रकाशवान् पदार्थोंका

वर्णनहो अथवा जैसे प्रकाशसे अंधकारस्थ पदार्थ स्पष्ट हो जाते हैं इसी तरह इस ज्योतिष वियारूपी प्रकाशसे समस्त भूत भावी वर्तमान फल प्रगट होजाते हैं इसीसे इसका नाम ज्योतिष विद्या है।

प्रश्न–यह विद्या ब्राह्मणोंने ठगनेके लिये बनाई है ग्रहोंसे हमसे क्या संबंध है जो सुख दुःख पहुँचावे ग्रह जड़पदार्थ हैं सिवाय प्रकाशके और कुछ सुख दुःख नहीं पहुँचाते सुख दुःख अपने कर्माधीन है?

उत्तर–यह विद्या ब्राह्मणोंने बनाई है यह कहना आपका बिलकुल असंगतहै क्योंकि बनाना शब्दका अर्थ किसी वस्तुको निर्माण करनेका है सो यह विद्या किसीने निर्माण नहीं की बरन् जबसे यह सृष्टि उत्पन्न हुईहै तबहीसे संपूर्ण जीवधारियोंके साथ ग्रहोंका निरंतर संबंध होगया है जैसे पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश, सब पदार्थोंमें व्याप्तहै इसीतरह ये ग्रह संपूर्ण विश्वको आक्रमणकर रहे हैं, ब्राह्मण जैसे अब निर्धन हैं पहिले नहीं थे यह भारतवर्ष प्राचीन समयमें स्वर्णभूमि था द्रव्यकी किसीको इतनी आवश्यकता नहीं थी जो ठगनेके लिये नयी विद्या रचते और जो आपने फर्माया कि, ग्रह जड़पदार्थहैं उनसे हमसे क्या संबंध है वे प्रकाश अतिरिक्त सुख दुःख कुछ नहीं देसक्ते सो संबंध क्या आपका सारा कामही उन्हींसे चल रहाह संपूण नवग्रहोंकी कौन कहे अकेला सूर्यकाही प्रताप देखलीजिये कि, जो जगत्प्रकाशक होरहा है, इसीके उदयसे आप सबकार्योंमें प्रवृत्त होतेहैं मनुष्योंके शरीरमें जो उष्णताहै वह सूर्यकीहीहै इस संसारके जितने कारखाने रेल, तार, डांक, अस्पताल, कचहरी, पुलिस, म्यूनिसिपलटी, मदरसा, कृषि, वाणिज्य, लेन, देन, सब सूर्यकेही आधारसे हैं और जड़पदार्थ जो आपने ग्रहोंको बताए इसमें क्या प्रमाणहै? खैर जड़ही मानो तोभी क्या दोष है जड़पदार्थ तो ऐसा सुख दुःख पहुँचा सक्तेहैं जिसका प्रमाण नहीं। देख लीजिये अग्नि जड़ होतीहै दुःख पहुँचानेके लिये काफीहै चैतन्यसे नहो

वह अग्नि करसक्तीहै इसी तरह जल, वायु, रेल, तार, पाषाण, शस्त्र, बंदूक, तलवार ये जड़ही हैं परंतु सुख दुःख इनसे मनुष्योंको भली भांति पहुँच सक्ताहै दुःख क्या बल्कि मनुष्यका प्राणतक ये हरलेतेहैं और जो सुख दुःख आपने कर्माधीन कहा सो ठीकहै परंतु ग्रह उसके सूचक हैं जैसे किसीने किसीको मारडाला और राजासे यह हुकुम हुआ कि, इसको २० रोज बाद फाँसी दी जावे यह समाचार उसको किसी राजकर्म्मचारी द्वारा मिलजावे तो वह समाचारदाता सूचक हुआ कोई फाँसी देनेवाला नहीं हुआ क्योंकि, फाँसी तो उसको अपने कर्म्मोंसे मिलीहै किसीको यात्रासमय नकुलदर्शन हुआ और उसको आगे चल कर ५० की थैली मिलगई तो यह थैली कोई नकुल सौंपने नहीं आया वरन् उसने द्रव्यप्राप्तिकी सूचना करी वा अंधकारमें कोई चीज रक्खीहै और दीपक लेजानेसे वह पदार्थ स्पष्ट दीख जाताहै तो इससे दीपक उस पदार्थका धरनेवाला नहीं उसका सूचकहै इसीतरह फल कर्म्माधीन होताहै परंतु उसके बतलानेवाले ग्रह हैं पूर्वकर्मार्ज्जित फल अदृश्य हैं उसको दृश्यकरनेवाले ये ग्रह हैं।

प्रश्न–ग्रहोंके संबंधका प्रत्यक्ष प्रमाण बताइये क्योंकि ग्रह यहांसे बहुत दूर हैं इतने दूरस्थ ग्रहोंसे वह फल क्योंकर होगा इसमें कोई युक्ति हो तो बयान कीजिये?

उत्तर–"कारणाभावे कार्य्याभावः" कारण विना कार्य्य नहीं हो सक्ता परंतु सबही कारण सबके समझमें नहीं आते और कारणके प्रगट होनेसे प्रत्यक्ष कार्य्य मिथ्या नहीं होसक्ता जैसे हलदी पीली होती है और चूना सफेद होता है इन दोनोंके मिलानेसे मिश्रित रंग लाल होता है जो प्रत्यक्षहै यद्यपि इसका कारण हमको प्रगट नहींहै तौभी उस कारणके मालूम न होनेसे लालरंग मिथ्या नहीं हो सक्ता इसी तरह ज्योतिषका फल प्रत्यक्ष होजाये तो फिर कारण अज्ञात होनेसे मिथ्या

नहीं होसक्ता जैसे वैद्यकके ग्रंथकारोंने वारंवार यह परीक्षा करलीहै कि, अमुक रोग अमुक दवाईसे दूर होताहै तब उन्होंनें ग्रंथमें उस रोग-का नाशक वह औषध लिखाहै जैसे कोनेनसे बुखार जाताहै यह डाक्टरोंने परीक्षासे अनुभव करके उसको ज्वरघ्न औषधि लिखीहै यदि किसी रोगीको कोनेन देनेसे ज्वर नहीं गया तो इससे डाक्टरीमत मिथ्या नहीं होसक्ता क्योंकि, उस रोगके नाश न होनेका कारण यही है कि, उस औषधिकी कृति अच्छी नहीं बनी होगी या डाक्टरकी परीक्षामें फर्क होगा इसी तरह फलित शास्त्रके आचारियोंने बारंबार परीक्षा करके वह फल निर्णीत कियाहै वह किसी समय नहीं मिले तो शास्त्र मिथ्या नहीं होसक्ता वरन् ज्योति-षीकाही विचार दोष कहा जासक्ताहै और ग्रहोंका असर सूक्ष्म प्रकारसे होताहै वह मनुष्यके विचारमें नहीं आसक्ता प्रत्युत स्थूल प्रभाव उन्होंका समझमें आसक्ताहै यह स्पष्टहै कि, शीत, उष्ण, वृष्टि, अनावृष्टि ये संपूर्ण ग्रहजन्य हैं केवल शिशिर, वसंत, ग्रीष्मही इसके साक्षीभूत नहीं हैं वरन् इसकी सत्यता हमारी प्रकृतिसेही सिद्ध हो सक्तीहै क्योंकि जब ऋतु मेघाच्छन्न तथा तीक्ष्ण होतीहै तो हमारा शरीरभी निरुत्साह व शिथिल होजाता है और जब ऋतु उज्ज्व-ल कांतिमान् होतीहै तो हमारा चित्तभी सानंद होताहै जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्रपर आतेहैं तब श्वानोंको बहुधा जलभय रोग होता है क्योंकि आर्द्राको योनि श्वान ज्योतिषशास्त्रमें लिखीहै अंग्रेजीमें इसे dog-star कहतेहैं इसका नाम dog-star इसीलिये है कि जब इसपर सूर्य आतेहैं तो कुत्तोंपर असर होताहै जब रवि वृषपर आते हैं तब मनुष्यों की प्रकृतियोंमें उष्णता बढ़ जातीहै और प्रायः इस ऋतुमें महामारीका कोप होताहै जब रवि कन्या राशिपर आतेहैं तब विषमज्वर फैलता है इसे अंग्रेज लोग malaria मेलेरिया कहतेहैं मनुष्योंका सुखदुःख

बीमारी तन्दुरुस्ती ऋतुके आधारसे है और ऋतुकर्त्ता ग्रह हैं तो सिद्ध होगया कि, मनुष्यके जीवनके हर्त्ता कर्त्ता ग्रहहीं हैं जो लोग सूर्यके समीप उष्ण कटिबंधमें निवास करतेहैं वे प्रायः काले होते हैं युरोप देश पृथ्वीके वायव्य कोणमें है और मंगलकी राशि मेषके बहुत समीपहै अतएव भौमकी राशिके प्रभावसे वहाँवाले रक्तमुखके और महानुभावी होते हैं इतना वर्णन सूर्यके प्रभावका हुआ अब चंद्रमाका प्रभाव सुनिये पूर्णिमाके दिन समुद्रकी लहरें इतनी ऊंची उठती हैं कि, जिसका सुमार नहीं इसको ज्वार भाटा कहते हैं यह बात अँग्रेज महाशयोंने भी स्वीकार की है कि, लहरका कारण चंद्रमा है यह चंद्रमाका क्या स्वल्प प्रभाव है अपने शास्त्रोंमें इसी लिये चंद्रमाका नाम उदधिसुत लिखा है जैसे पुत्रको देखकर पिताका उत्साह बढ़ता है इसी तरह चंद्रको परिपूर्ण देखके समुद्र उमंगता है मार्जारके नेत्रकी पुतली चंद्रके ह्रासवृद्धिके अनुकूल कम बढ़ होती रहती है शुक्ल पक्षमें यदि मटर बोई जावे तो वह सदा विकसित (सरसब्ज) रहती है अनारका बीज जिस तिथिको बोया जावेगा वह ऊगनेपर उतनेही वर्षतक ठहरेगा जितनी संख्या तिथिकी बोनेके समय थी जो बीज चन्द्रमाकी वृद्धिमें बोया जावेगा उसके फल फूलकी सदा वृद्धि रहेगी नहीं मानो तो अनुभव कर देखो कुमोदिनी रात्रिकोही फूलती है सूर्य्यमुखी जिधर सूर्य हो उधरही अपना मुख रखती है पाटलका पुष्प सूर्यके अस्त होतेही मुरझा जाता है अर्कवृक्ष ज्येष्ठमें प्रफुल्लित रहता है और वर्षाऋतुमें सूख जाता है यह बातभी लोक प्रसिद्ध है कि, मधुमक्खी शुक्ल पक्षमें सब पुष्पोंसे रसका संचय करती है और कृष्ण पक्षमें उस संचित रसको पान करजाती है इसका कारण यही विदित होता है कि, शुक्ल पक्षमें चंद्रकी वृद्धि होनेसे पुष्पोंमें प्रकृतिसेहीरस पूर्ण रहता होगा इससे मधुमक्खी उसका आकर्षण करती

है और कृष्ण पक्षमें चंद्रमा क्षीण होनेसे पुष्प रसोंसे रहित हो जाते हैं इसीलिये मधुमक्खी इस पक्षमें रस संचय न करके उक्त रसका पान करजाती है आशय यह है कि, जैसे सूर्य चंद्रका प्रभाव पदार्थोंपर होता है इसी तरह शेष ग्रहोंकाभी होता है यह स्थालीपुलाकन्यायसे सिद्ध है मनुष्यका शरीर देखकर सम्पूर्ण जन्मग्रह, जन्मलग्न, मास, तिथि, वार कहे जा सक्ते हैं यह कितना बड़ा प्रमाण ग्रहोंकी सिद्धिका है कि, उन ग्रहोंसे वह शरीर बना है तबही शरीर देखकर जन्मग्रह जो अदृश्य हैं कहे गए यह स्पष्ट है और कई विद्वान् हस्तरेखा देखकर जन्म, संवत्, मास, तिथि, वार, इष्ट घटी, पल, मालुमकरके तत्काल जन्म कुंडली बना देतेहैं. गवालियरमें बच्चाशास्त्रीको सरकार जीवाजिराव शिंदे बहादुरने रक्खेथे यह महाशय तत्काल हस्तरेखा देखकर जन्म ग्रह कह दिया करते थे यह बात प्रसिद्ध है और शरीर देखकर जन्म ग्रह तो सिरोंज निवासी गंगाप्रसाद मिश्र बता सक्तेहैं और मुझेभी इसका कुछ अभ्यास है नहीं मानो तो परीक्षा कर देखो अब यह बात सिद्ध होगई कि, शरीर ग्रहोंसे बनाहै जबही शरीर देखकर जन्मसमयके ग्रहोंकी स्थिति मालूम हुई क्योंकि उन्हीं ग्रहोंसे शरीरकी ऐसी आकृति हुईथी और जो आपने ग्रह बहुत दूर होनेका कहा सो दूर हैं तबही सारे जगत्में इनका प्रकाश होरहाहै जो समीप होते तो एकही स्थानसे नजर आते. इसीलिये परमेश्वरने ग्रहोंको प्रकृतिसेही उसी प्रमाणकी दूरीपर रक्खे हैं जितनी आवश्यक थी और इतने दूरस्थ होकरभी ग्रहोंका सारे विश्वमें प्रकाशहै यह कितने बड़े सामर्थ्यकी बात है कुल बारह राशि और नव ग्रहहैं परंतु उनकी स्थितिके असंख्यात भेदहैं जो ग्रहोंकी स्थिति एक कालमें है वह न कभी पूर्व हुई थी न अब होगी इसीकारण जिस रूप, रंग, स्वभाव, वय भाग्यका एक पुरुषहै उसके तुल्य दूसरा न हुआ न होगा क्योंकि ग्रहजनित मनुष्योंके शरीर हैं जब ग्रहोंकी स्थिति जो आज है

वह न कभी पूर्व थी न अब होगी तो फिर मनुष्यका शरीर कैसे एक दूसरेसे मिल सक्ताहै अत एव यहभी ग्रहोंकी सत्यताका एक प्रमाण है॥

प्रश्न—आपने जड़पदार्थोंका उदाहरण दिया सो ठीक नहीं क्योंकि जड़पदार्थ स्वयं कुछ नहीं करसक्ते ये सामर्थ्य चैतन्यको है?

उत्तर—इसमें जड़ चैतन्यका कुछ हिसाब नहींहै जितनी सामर्थ्य जिसमें ईश्वरने रखदीहै उसमें उतनीही शक्ति होतीहै जो आपने कहा कि, जड़ स्वयं कुछ नहीं करसक्ते सो ठीक नहीं देखिये बिजली स्वयंही आसमानसे गिरकर मनुष्यका प्राण ले लेतीहै और मकान स्वयंही गिर कर जीवधारीको मारसक्तेहैं और वृक्ष चैतन्य हैं सो कहीं चल फिर नहीं सक्ते और पृथ्वी इत्यादि जड़ हैं परंतु चलतेहैं चुम्बक जड़है परंतु आकर्षण शक्ति उसमें इतनीहै कि, जो चैतन्यमें नहीं होसक्ती इसी तरह सूर्य चंद्रादि ग्रहोंमें सुखदुःख पहुँचानेकी प्राकृतिक शक्ति है सूक्ष्म दृष्टिसे देखा जाय तो जड़ चैतन्य दोनों स्वाधीन नहीं है जैसे जडपदार्थ कारण बिना कुछ नहीं करसक्ते इसी तरह चैतन्यभी कुछ नहीं करसक्ते जो कुछ करतेहैं सो बुद्धिके आधीन होकर करतेहैं और बुद्धिहै कर्म्माधीन जैसा भावी होताहै उसीके अनुकूल बुद्धि होजाती है इसलिये चैतन्यहीको स्वाधीन मानना ठीक नहीं।

प्रश्न—तुम्हारा फलित झूँठाहै जो तुम्हारा फलित सच्चा हो तो जेष्ठमासकी धूपमें ऐसे दो पुरुषोंको खड़ा करे कि, एकपर सूर्य प्रसन्नहो और दूसरेपर सूर्य क्रूर हो जब जाने प्रसन्नवालेके पाँव न जले और जो तुमने ग्रहोंका प्रभाव बताया सो ग्रहोंका प्रभाव सबपर एकसा है न्यूनाधिक नहीं।

उत्तर—ज्योतिषशास्त्रमें ऐसा कहीं नहीं लिखा कि, सूर्य अमुकपर प्रसन्न होतेहैं अमुकपर क्रुद्ध होते हैं ये आपने किसी अज्ञानीके मुखसे सुनलिया होगा सूर्यचंद्रादि किसीपर प्रसन्न व अप्रसन्न

होसक्ते क्योंकि उन्होंका किसीने अपराध नहीं किया जो अप्रसन्न हो और आपने ग्रहोंका सबपर एकसा प्रभाव बताया सो आपका कहना ठीक नहीं क्योंकि एकही पदार्थ एकको लाभदायक है और वही पदार्थ दूसरेको हानिकारक होजाता है जैसे घास पशुको लाभदायक और मनुष्यको हानिकारक है किसीको इमली खानेसे गुण होताहै और वही दूसरेको नुकसान पहुँचाती है एकही ऋतुमें बहुतसे नीरोग रहते हैं व बहुतसे रोगी रहतेहैं जो आपने सूर्यसे पैर जलनेका कहा सो उसकी किरणका प्रभावही है कि, वह उष्णता पहुँचातीहै ग्रहोंका काम तो मनुष्यके सुख दुःखके सूचना करनेकाहै जैसे दीपकका कामहै कि, वह अंधकारको नाशताहै परंतु जो कोई उसको हाथ लगावेगा तो उसका हाथ अवश्य दग्ध होगा क्योंकि उसका गुणही यहीहै जैसे एक मनुष्य यात्रासे घर आता था और दूसरा यात्राकेलिये घरसे चला गांवके बाहर दोनोंको एकही स्थानपर रीछ दीखा एकको रीछ दर्शन का शुभ शकुन हुआ और दूसरेको उसके दर्शनका अशुभ शकुन हुआ आगे चलकर शुभवालेको दोसौ रुपये मिलगये और अशुभवालेको दोसौ रुपयेका नुकसान हुआ अब देखिये रीछ किसीपर प्रसन्न व क्रुद्ध नहीं है यदि दोनों पुरुष इसके पास जावेंगे तो वह दोनोंको खाजावेगा क्योंकि उसका स्वभावही ऐसाहै परंतु शुभ अशुभ सूचना उसकी दोनोंके लिये पृथक् पृथक् है इसी तरह सूर्यके उष्णतादि गुण सबके लिये समान हैं परंतु सुख दुःखकी सूचना पृथक्पृथक् है ।

प्रश्न—हमारा विश्वास गणितपर है फलितपर नहीं फलित है सो अटकलपच्चहै संसारमें एकही समयमें हजारों आदमी जन्मते हैं परंतु उन सबों की वृत्ति एकसी नहीं होती और इसका स्पष्ट दृष्टांत यहहै कि, दो युग्म बालक जन्मते हैं उन्होंके जन्मलग्नमें तो क्या बल्कि नवांशमेंभी अंतर नहीं होता फिर उन दोनोंका भाग्य एकसा क्यों नहीं होता और जिस घड़ीमें

चक्रवर्ती राजा जन्मलेताहै उसी मुहूर्तमें कंगाल जन्मताहै मगर वह कंगाल चक्रवर्ती राजा क्यों नहीं होता ?

उत्तर—गणित है सो वृक्ष है और फलित है सो उस वृक्षरूपी गणितका फल है जैसे फलहीन वृक्ष शोभा नहीं देता इसी तरह फलित विना गणित वृथा है जितने गणित मात्र हैं उनमें सबमें थोड़ा बहुत भविष्य कहनेका सामर्थ्य है जैसे किसीने कहा कि, हमने आजकी मितीमें किसीको २००) रु० कर्जा१) रु०सैकडा मासिक व्याजकी दरसे दिये आज हीसे दो वर्षमें क्या व्याज होगा गणित किया गया तो मालुम हुआ कि, दोवर्षमें ४८) रु० होंगे अब देखिये कि, कहाँ दोवर्षकी बात आज प्रगट होगई गणितसे आसमानका ग्रहण बताया जाता है जो सब को प्रत्यक्ष होता है और जो आपने फरमाया कि, फलित अटकल पच्चू है सो आपभी तो अपनी कुशाग्रबुद्धिसे कुछ अटकलपच्चू कहियेगा यहाँ तो सं० १९५६ का फल तथा श्रीमहाराणी विक्टोरियाकी आयुर्दायका पूर्वसे विद्वानोंने निर्णय किया था सो वैसाही मिला आपभी तो किसी बादशाहके बारेमें कुछ फल अटकलपच्चू कहें तब मालुम हो जो आपने सहस्रों आदमियोंका तथा चक्रवर्ती राजाका एकही समयमें जन्मना कहा सो जिस समय चक्रवर्ती राजा जन्मेगा उस समय अन्य पुरुष नहीं जन्मेगा अगर जन्मनेका आपके पास कुछ प्रमाण हो तो फरमाइयेगा और ज्योतिषका फल मनुष्यके कुलानुमान होता है जैसी जिसकी वर्तमान स्थिति है उसीपर उन्नति अवनति कही जायगी जैसे किसी कंगालके घर बालक जन्मा और उसके बापकी तनखाह ५) थे और लडकेकी होगई २०) रु० तो इससे लडका भाग्यवान् कहां जावेगा किसीका जन्म एक लक्षाधीश राजाके घरमें हुआ और उसके राज्याधिकारी होनेपर उसका राज्य पचास सहस्रका रहगया तो यद्यपि बीस रुपये महिना पानेवालेसे उस राजाकी आय विशेष परंतु भाग्य उस कंगालपुरुषका विशेष कहा जायगा

फल जो है सो देश और कालके अनुसार होता है जैसे उष्ण कटिबंधके निवासी सूर्यके समीप होनेसे कृष्णरंगके होते हैं और यूरोप देशवासी पश्चिमस्थ होनेसे सूर्यसे दूर हैं अतः गौररंगके होते हैं अब यदि एकही लग्नमें हब्सदेशनिवासी तथा यूरोप देशस्थका जन्म हुआ तो वह एकही रंगके नहीं हो सक्ते क्योंकि इसमें देशभेद हो गया है जो जो देशग्रहोंके समीप हैं उन्होंपर उन ग्रहोंका प्रभाव बहुत शीघ्र तदनुरूप पहुँचता है और जो दूरहैं उन्होंपर इतना शीघ्र प्रभाव नहीं पहुँचसक्ता इसलिये एक कालमें जन्म होनेहीसे क्या है जब देश काल इत्यादि सब मिलेंगे तबही उन दोनोंकी वृत्ति एकसी होगी और जो आपने युग्म बालकोंका उदाहरण दिया कि १ नवांशमेंभी फर्क नहीं पड़ता सो यह बात मिथ्या है दोनों बालक एक साथ कभी न जन्मे न जन्म सक्के मनुष्य क्या पशुतकमें यह बात नहीं होसक्ती है याने मुर्गी एकदम दो अंडे नहीं देसक्ती है और श्वान मार्जार एकही दम दो बच्चोंका प्रसव नहीं कर सक्के कालांतरसे उन सबका प्रसव होता है इसीलिये सबका भाग्य एकसा नहीं होसक्ता ।

प्रश्न—नहीं जी ग्रहणका तो हिसाब है हिसाबसे मालुम होता है ।

उत्तर—धन्य है आपकी विशाल बुद्धि हिसाब तो है परंतु उस हिसाबसे भविष्य बात मालुम होती है कि, नहीं जो गणना कीजाय उसका नाम गणित है और उस गणितका जो जबाब आवे वहीं उसका फलित है जैसे १० आम पांच आदमियोंमें बांटे तो एक एकके कितने हिस्से आवेंगे स्लेटपर गणित किया गया वह हिसाब है और उस गणितका यह जबाब आया कि, दो दो आम प्रतिमनुष्यके बांटे आवेंगे यही उसका फलित हुआ इसी तरह बिना फलितका कोई गणित नहीं और फलितरहित उस गणितको करो तो वह वृथा है जैसे किसीने पंचतारा स्पष्ट किए उसमें दोरोज मेहनतके लगे और मालुम हुआ

कि, बुधके ५ अंश गये हैं शनिके १० अंश गये हैं बस सुनलिया कि, इतने अंश गये हैं हर हांसिल कुछ नहीं फिर खाली अंश सुन लेनेके लिये इतना गणित करना कराना वृथा है इससे बिहतर यह है कि, गणितभी न माना जावे और न किसीको गणित करना चाहिये।

प्रश्न—आकाशमें असंख्यात ग्रह हैं उनमें सिर्फ सातही मनुष्योंपर असर करते हैं बाकी क्यों नहीं करते ?

उत्तर—धन्य है आपकी बुद्धि भारतवर्षमें ३० करोड़ आदमी वसते हैं वे सवही हाकिम क्यों नहीं होजाते परंतु जो हाकिमहैं वही हाकिम रहेंगे और शरीर तो राजा और रंकका देखनेमें एकही होता है परंतु जो प्रभाव राजा का होता है वह गरीबका नहीं हो सक्ता इसी प्रकार ग्रह समझिये और सातवार तो सारे विश्वमें विदित हैं अंग्रेज, मुसलमान, ईसाई, जापानी, पारसी फरासीसी, रूसनिवासी, यहूदी इत्यादि सब मुल्कोंमें सातवार प्रचलित हैं ये सातवार सात ग्रहोंके हैं आठवाँ वार कहीं भी नहीं है परंतु आपको आकाशमें जितने तारे हैं उतनेही वार मानना चाहिये आप वृथा सात वारोंको मानते हैं क्योंकि, आप तो सातग्रहोंके तुल्य अन्य भी तारागणको मानते हैं फिर केवल सातही वारोंपर आरूढ होना नाहक है।

प्रश्न—ग्रहोंको सब मनुष्य क्यों नहीं मानते और इस विद्याको प्रगट हुये कितने वर्ष हुवे ?

उत्तर—इस संसारमें ऐसा कोई भी मत या विद्या नहीं है जिसको सब एकत्र होकर माने आप पूर्वजन्मके कर्म्मोंको मानते हैं उसको मुसलमान व ईसाई नहीं मानते जिस बाईबिलको ईसाई मानते हैं उसको आप व मुसलमान नहीं मानते और वास्तवमें मानना नहीं मानना मनुष्यकी कल्पना है पदार्थमें जो गुण है वह न माननेसे मिट नहीं सक्ता अग्निपर यदि कोई अग्नि न मानकर पैर रक्खे तो वह पाँवको दग्धही

करेगी दूसरे इस संसारमें देवासुरसंग्राम सदासे चला आया है अर्थात् प्रत्येक बातका प्रतिकूल उत्तर मोजूद है जैसे दिन,रात्रि,पाप, पुण्य,धर्म, अधर्म, सत्य, असत्य, यश, अपयश, सुख, दुःख, ज्ञान, अज्ञान, प्रकाश, अंधकार, मानना, नहीं मानना, संयोग, वियोग, जय, पराजय, खंडन, मंडन, शत्रु, मित्र, स्तुति, निंदा, अनुकूल, प्रतिकूल, उत्पन्न, विनाश, इत्यादि इसी तरह बहुतसे इस विद्याको मानते हैं और बहुतसे नहीं मानते हैं यह सृष्टिक्रम है इसमें अंतर नहीं आसक्ता ओरं ज्योतिष शास्त्र कबसे प्रगट हुवा इसकी एक तिथि ज्ञात नहीं होसक्ती क्योंकि, रामकृष्णकी जन्मकुंडलियाँ आजतक प्रचलित हैं जिनको लक्षावधि वर्ष होगये और पुराने इतिहासोंमें भी फलितका वर्णन लिखा है ग्रीस-देश तथा अरबमें इस विद्याका पहिले बहुत प्रचार था मुसलमानोंमें शियालोग अबतक फलितको मानते हैं इन सब कारणोंसे यह सिद्ध है कि, फलित शास्त्रका प्रचार इस देशमें अति प्राचीन कालसे है।

प्रश्न—अंग्रेज लोग जो आजकल कलानिधि हो रहे हैं और जिन्हों ने अपनी बुद्धिबलसे कई नवीन यंत्रादि निकाले वे ज्योतिषको क्यों नहीं मानते और फलितकी विधि आजकल पूरी पूरी क्यों नहीं मिलती?

उत्तर—जब आपही सरीखे भारतवासी इसके माननेमें शंका करते हैं तो अन्य देशस्थ क्यों नहीं करेंगे यूरोपदेशमें पहिले गणित विद्याका प्रचार फलितहीके लिये था अनुमान २०० वर्ष पूर्व जर्मनी देशमें केप्लर नामका एक बड़ा ज्योतिषी हुआ था उसने एक ग्रंथमें यों लिखा है कि, " गणित विद्यारूप एक विद्वान् माताकी फलित विद्या-रूप एक मूर्ख बेटी है और उस माताका जीवन केवल उसी मूर्ख बेटीके आधारसे है इति " नेपोलियन बोनापार्टी नामक विद्वान जो यूरोपदेशमें हो गये हैं उन्होंने फलितका ग्रंथ अंग्रे

जीमें बनाया है जो आजकल प्रचलित है और कलकत्तेमें छपा हुआ है और जो पुराने अंग्रेज लोग भारत वर्षके विद्याका गौरव जानते हैं वे निःसंदेह फलित विद्याको मानते हैं प्रोफेसर मोक्षमूलर साहब ओक्सफोर्ड निवासी फलित ज्योतिषको निःसंदेह मानते थे और संस्कृतके भी पूर्ण विद्वान् थे आपने वेदोंका भाष्य किया था तारणीप्रसाद नामक अंग्रेजी ज्योतिषी कलकत्तेमें रहते हैं वह हरसालका भविष्य अंग्रेजी अखवारोंमें छपवातेहैं और अब यूरोपदेशमें अनेक विद्वान अनुभव करकरके फलित विद्याको बढाने लगेहैं उन्होंका विश्वासभी इस विद्यापर क्रमशः बढ़ता जाताहै जो अँग्रेज लोग इसके गुणको नहीं समझतेहैं वे नहींभी मानतेहैं क्योंकि "न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षं स तस्य निंदां सततं करोति॥ यथा किराती करिकुंभजातां मुक्तां परित्यज्य बिभर्ति गुंजाम्॥" और अंग्रेज लोगोंने जो नवीन यंत्रादि रचे उसका कारण यह है कि, उस देशके विद्वानोंने अपना समय इन्हीं कला कौशल्यादिके खोजमें व्यतीत किया इसलिये वे कलानिधि होगये और इस देशके पूर्वजोंने अपना समय साहित्य विद्याके अनुसंधानमें खोया वे यंत्रविद्यासे तो वंचित रहे परंतु उन्होंने ऐसी ऐसी सिद्धांत विद्याओंका उत्पादन किया जिसको सीखकर मनुष्य दैवज्ञ होसक्ताहै यथा सामुद्रिक शास्त्र, स्वरशास्त्र, केरलशास्त्र, योगशास्त्र, कामशास्त्र, व्याकरण, छंदशास्त्र, वेदांत, संगीत-शास्त्र, सूपशास्त्र, कोकशास्त्र, न्यायशास्त्र, इत्यादि ये विद्याएँ एकसे एक विलक्षणहैं इन विद्यासे यूरोपनिवासी सर्वतः अनभिज्ञहैं और जो आपने विधि न मिलनेका कहा सो आजकल शिक्षा प्रणालीकाभी भेद है अर्थात् जो ज्योतिषीलोग बालकोंको पढ़ातेहैं वे गणितमें तो कुछ छिपा नहीं सक्के छिपावें तो अंक पूरा कैसे हो जैसे यह कौन कहसक्ताहै कि, आठको आठके गुणनेसे गुणन फल ६३ होताहै किंतु वहां तो पूरे ६४ ही

कहने पड़ेंगे और पूरे ६४ ही की क्रिया करनेमे आवेगी परंतु फलितमें यह भाव नहीं है पढानेवालेकी इच्छाहै चाहे विद्यार्थीको उसका भेद बतावे या न बतावे ज्योतिषके मर्मको पिता पुत्रको नहीं बतलाते यहां तक प्रतिज्ञा किया करतेहैं कि, हम मरण सन्निधि कालमें किसी प्रिय को बतावेंगे परंतु कालवश पंचत्वको प्राप्त होजातेहैं इसप्रकार किसीको बतलानेका अवसरही नहीं मिलता इसीतरह भारतवर्षकी विद्या नष्ट होगई और ज्योतिषका सार लोगोंने खोदिया और ग्रंथभी फलितके जो प्राचीनहैं वे अब नहीं मिलते इसके अतिरिक्त यहांके लोगोंने इस विद्याकी उन्नति करना छोड़दी जो कुछ पुराने जमानेमें विद्वानोंने अनु- भव करकरके योग बनायेहैं उन्हींको लोग घसीटते जातेहैं यह नहीं कि अपने स्वयं अनुभवसे नया फलित रचें कि, जिससे यह विद्या वृद्धिको प्राप्त हो देखिये अंग्रेज लोग डाक्टरी विद्याको प्रतिदिन बढाते जातेहैं और हरएक रोगकी औषधिकी परीक्षा करकरके नवीन रचना करते जातेहैं और जो इलाज पुराने होगए और देशकालके भेदसे जिनमें रोगनाशक गुण नरहा उन्होंको वैद्यक ग्रंथसे निकालदेतेहैं इसीतरह फलितके योग जो बहुत पुराने होगए उनमें कालांतरसे फर्क आने लगताहै और जैसे वैद्यको बहुत रोगोंका इलाज करते करते नवीन अनुभव प्राप्त होताहै और जिसको औषधि देताहै वह बहुधा गुणदायक होतीहै इसीतरह जिस ज्योतिषीकी दृष्टिसे सैकडों जन्मकुंडलियां निकल गई हैं उसका फलित औरोंकी अपेक्षा अच्छा होताहै मतलब यहहै कि, ज्योतिष और वैद्यक ये दोनों विद्या अनुभवकी हैं जिसको जितना अनुभव होगा उतनाही वह कम बढ़ फलित कह सकेगा इसीकारणसे आजकल फलितकी विधि न्यूनाधिक मिलतीहै ।

प्रश्न–मुहूर्तभी सच्चा है वा नहीं ?

उत्तर—हां मुहूर्त बहुत सच्चा है क्योंकि मुहूर्तभी फलितका एक अंगहै और जैसा फलितका आधार समयपर है ऐसेही मुहूर्तभी कालानूकुल है और यह प्रत्यक्ष देखनेमें आताहै कि, समयके अनुकूल इस भूमंडलके समस्त पदार्थोंमें न्हास वृद्धि होती रहतीहै जैसे ग्रीष्मऋतुमें अनेक पदार्थ उत्पन्न होते हैं अनेक नष्ट होतेहैं इस भूमंडलसे जिस जिस समय जिस जिस ग्रहका जितना जितना संबंध होताहै उसके अनुसार पदार्थोंमें न्हास वृद्धि होना संभवहै जो जो ग्रहमंडल अपनी गतिसे भूमंडलसे जितनी दूरीपर होताहै उसके स्वभावानुकूल भूमंडलके पदार्थोंकी व्यवस्था अदल बदल हुआकरतीहै इसीकारण फलितवक्ता आचार्योंने सूर्यादि ग्रहोंके स्वभावानुकूल फल दिखाये हैं किसी आचार्य्यने सूर्यका फल शीतकारक तथा चंद्रमाका फल उष्णकारक नहीं लिखा और जो पदार्थ व जीव जैसे समयमें उत्पन्न होतेहैं उनके गुण कर्म्म स्वभाव समयके अनुकूल अवश्य होते हैं और प्रारब्ध कर्मोंके अनुसार जो भावी फल है उसीके अनुकूल देशोंमें जीवोंका जन्म होता है इस भूमंडलपर नाना देशहैं कहीं शीत अधिकहै कहीं उष्णता अधिकहै कहीं जल वायु औरही प्रकारकी है इसी देशकालके भेदाभेदके तारतम्यसे जीवोंको सुख दुःख हुआ करतेहैं कही एकही देश और एकही कालमें जो जीवोंको सुख दुःख होतेहैं वह वस्तु भेदसेभीहै और समस्त जीवोंके प्रारब्ध कर्मसे जो भावी फल है उसके सूचक सूर्यादि ग्रह हैं इसीलिये ग्रहोंके संबंध असंबंधके तारतम्यपर सांसारिक व्यवहार व जीवोंके सुख दुःखका अनुमान किया गया तथा प्रारब्ध कर्म्मसूचक फलके विचारनेवाले विद्वान दैवज्ञ कहाते हैं आशय यह है कि, समयका प्रभाव कार्य्यपर अवश्य पडता है अच्छे समयका अच्छा फल है और बुरेका बुरा है अतएव शुभमुहूर्तसे कार्य्य करना

चाहिये इति । यहांतक ज्योतिषविद्याविषयक शंकासमाधान लिखा गया इसके अतिरिक्त और भी बहुतसी शंका इस विषयमें होसक्ती हैं क्योंकि, "शंकाभिः सर्वमाक्रान्तमन्नं पानं च भूतले ॥ प्रवृत्तिः कुत्र कर्तव्या जीवितव्यं कथं नु वा ॥ १ ॥"अर्थात् सम्पूर्ण पदार्थ शंकासे आक्रांत हैं ऐसे तो अन्न पानतकमें शंका हो सक्ती है यदि ऐसी शंकाकी प्रवृत्ति कीजाय तो जीनाही कठिन है ऐसी प्रतिज्ञा कोई नहीं कर सक्ता कि, इन प्रश्नोंके सिवाय और कोई फलितसम्बंधी प्रश्नही नहीं कर सकेगा क्योंकि, एकही बात व विषयपर देशकाल वस्तुके भेदसे नवीन नवीन प्रश्न होते आये हैं और होते रहेंगे इसकी सीमा नहीं मैंने भी अपनी समयानुसारिणी क्षुद्र बुद्धिके अनुसार इस विषयमें संक्षेपतः लिखा है और विचारशीलोंके समीप इतना लेख बहुत है वैसे तो अनेक विवाद और समाधान हैं जिनका पारावार नहीं ।

आजकल भारतवर्षमें जितना ताजिक ग्रंथोंका प्रचार है उतना प्रश्नके ग्रंथोंका नहीं है षट्पंचाशिका भुवनदीपक तथा प्रश्नतन्त्र नील-कंठीके अतिरिक्त और कोई नवीन ग्रंथ प्रश्नका नहीं छपा. प्रश्नका विशेष काम पड़ता है जिन लोगोंको जन्मग्रह ज्ञात नहीं हैं वे प्रश्नसेही अपना कार्य्य सम्पादन करते हैं और प्रायः मुष्टिप्रश्न मूलप्रश्न कार्य्य सिद्धय सिद्धि प्रश्न बहुत पूँछा करते हैं अतएव मैंने वर्तमानाऽभावके निवार-णार्थ प्रश्नके ग्रंथोंका खोज करना आरम्भ किया अंतमें मुझे "ज्ञान-प्रदीप" नामक मूल ग्रंथ प्राप्त हुआ जो मेरे अभिमत निकला यह अद्वितीय ग्रंथ देवनागरी लिपिमें आजतक कहीं नहीं छपा है और न किसीने इसपर टीका की मैंने इसको हृदयग्राही तथा सर्वोपयोगी जान सुबोधिनीभाषाटीकासे अलंकृत किया वेदशास्त्रसम्पन्न परोप-कारी धर्मव्रतधारी पं० गंगाधर शास्त्री बजरंगगढ़ निवासीका मैं बड़ा

कृतज्ञहूं जिन्होंने संस्कृतके पठन पाठनमें मेरे उत्साहको बढ़ाया उपसंहारमें मैं वैश्यकुलावतंस स्वधर्म्मपरायण सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीको अंतःकरणसे धन्यवाद देताहूं जिन्होंने स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यंत्रालयमें इस ग्रंथको छापकर प्रकाशित किया इस "ज्ञानप्रदीप"का सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसके अधीश उक्त सेठजीके आधीनहै अन्य कोई छापनेका वृथा परिश्रम नकरे, पाठकगणोंसे निवेदन है कि, यदि इसमें कहीं भूल रहगई हो तो क्षमाकरें यद्यपि सज्जनोंकी कृपादृष्टि योग्य इस भाषानुवादमें कोई गुण नहीं दिखाई देता तथापि गुणग्राही महाशय अपनी स्वाभाविक उपकार वृत्तिसे इसका प्रचार बढ़ावेंगे इयमेव जिज्ञासा. किंबहुना बुद्धिमत्सुराम् ॥

सज्जनोंका अनुगृहीत-

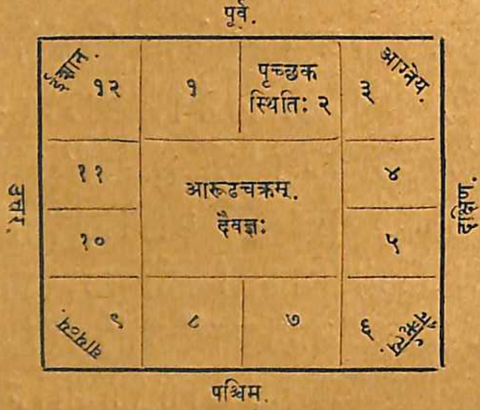
महाराज शम्भूसिंह सुठालियाधीश,

सुठालिया, ता० १-७-१९०१ ई० [स्थान सुठालिया मुत्तालिक अजंटी भूपाल]

(सेन्ट्रल इंडिया.)

अथ ज्ञानप्रदीपस्थचक्रसंग्रहः ।

आरूढज्ञानचक्रम् ।



वीथिचक्रम् ।

मेष.	मिथुन.	वृश्चिक.
२	८	१
३	९	१२
४	१०	७
५	११	६

राहु.	रवि.	मंगल.
चंद्र.		गुरु.
शनि.	शुक्र.	बुध.

अथ ग्रहाणां दिगादिनियमाः ।

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
दिशः	पू	वा	द	उ	ई	आ	प	नै	०
पुंस्त्र्यादि	पु	स्त्री	पु	न	पु	स्त्री	न	स्त्री	न
युग्मका	एकाकी	एका	एका	युग्म	युग्म	युग्म	युग्म	युग्म	०
राजादि	नृप	विप्र	नृप	वैश्य	विप्र	शूद्र	नीच	नीच	नीच
वर्ण	रक्त	श्वेत	रक्त	श्याम	पीत	श्वेत	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण
आकृति	चतुरस्र	वृत्त	कृश	मध्य	त्रिकोण	दीर्घवृत्त	अष्टास्र	चतुरस्र	दीर्घ
ह्रस्वदी-र्घादि	सम	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	सम	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ
योजनानि	१०	२१	७	१७	१०	१६	१७	०	०
वयः	५०	७०	१६	२०	३०	७	१००	१००	१००
स्वादुप दार्थ	कटु	क्षार	कटु	तुअर	मधुर	अम्ल	तिक्त	तिक्त	०
लांछन भागः	दक्षिणे	वामे	दक्षिणे	दक्षिणे	दक्षिणे	वामे	वामे	वामे	०
लांछना भागी	मूर्द्धनि	मूर्द्धनि	पृष्ठे	वक्षे	अंसे	वदने	ऊरौ	पदे	पदे
किरणाः	५	२१	७	९	१०	१६	४	०	०

अथ स्वप्रकाशाऽप्रकाशग्रहाणां संज्ञास्वरूपमित्रामित्रचक्रम् ।

सूर्य	चंद्र	परिधि	गुरु	धूम्र	बुध	शनि	भोगी	इंद्रचाप	मंगल	अणु	शुक्र	राहु	केतु	ग्रहाः
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	७	१	उच्चराशि
१०	३	०	५	०	१५	२०	०	०	२८	०	२७	०	०	उच्चांशाः
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	१	७	नीचराशि
गुरु	गुरु बुध	०	र.चं.बु. शु.श.	०	चं.मं. गु.शु.श.	बु.गु. शु.	०	०	बु.शु.	०	बु.गु. मं.श.	शु.बु.	०	मित्राणि
चं.मं.गु. शु.श.	र.मं. शु.श.	०	मं.	०	र.	र.चं. मं.	०	०	र.चं. गु.श.	०	र.चं.	०	०	शत्रवः
९ १२	३--९ ६--१२	०	५--२ ४--७ ० ३--१० ६--११	०	४--१ ८--२ ९--१२ ११--७ १०	३--६ ९--१२ ७--२	०	०	३--६ २--७	०	३--६ ९--१२ १--८ १०--११	७--२ ३--६ १०--९	०	मित्रराशयः
५	४	४	९ १२	४	३ ६	१० ११	०	५	१ ८	५	७ २	०	०	स्वगृह
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गणना

अथ राशिचक्रम् ।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
विप्रादि	क्षत्रिय	शूद्र	वैश्य	विप्र	क्षत्रिय	शूद्र	वैश्य	विप्र	क्षत्रिय	शूद्र	वैश्य	विप्र
वर्ण	रक्त	श्वेत	कृष्ण	श्वेत	रक्त	कृष्ण	श्वेत	श्याम	रक्त	कृष्ण	श्याम	श्याम
किरण	८	११	६	११	३	६	१४	१३	१०	१००	४	३४
मतांतर	७ ८	८ ६	५ ६	३ ८	७ ७	११ ७	२ ८	४ ४	६ ७	८ ६	७ ८	२० २७
चरादि	चर	स्थिर	द्विस्व-	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व	चर	स्थिर	द्विस्व
स्थिति	वने	कुल्यायां	पुरे	नद्यां	सलिले	पुरे	जले	कूपे	वन जले	जले	जलंघटे	जले
धात्वादि	धा.	मू.	जी.	धा.	मू.	जी.	धा.	मू.	जी.	धा.	मू.	जी.
वृक्षादि	क्षुद्रसस्य	लता	वृक्ष	लता	कंटकवृक्ष	वृक्ष	लता	क्षुद्रसस्य	शुभवृक्ष	कंटकद्रुम	कंटकद्रुम	इक्षु

ग्रहाः	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
शृंगाणि	भग्नशृंगी	शृंगहीन	तीक्ष्णशृंग	भग्नशृंगी	दीर्घशृंगी	दीर्घशृंगी	भग्नशृंगी	भग्नशृंगी	भग्नशृंगी
धातुमूलादि	मूल	धातु	धातु	जीव	जीव	मूल	धातु	धातु	धातु
धातु	ताम्र	कांस्य	ताम्र	त्रपु	कांचन	रौप्य	लोह	लोह	लोह
रत्नादि	शिलासू-र्यकांत	मृतपात्र चंद्रकांत	प्रवाल	मृत्पात्र	मनःशिला	मुक्तास्फ-टिकमरकत	लोहपात्र नीलमणि	वैडूर्य	०
मूलचिंतायां	वृक्ष	लता	क्षुद्रधान्य	धान्यतृण विरुद्ध	धान्य इक्षु	चिंचा	कंटक वृक्ष	कंटक वृक्ष	कंटक वृक्ष

अथ ग्रहसंज्ञाचक्रम् ।

ग्रहाः	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
पृष्ठोदयादि	पृष्ठोदय	तिर्यकुउ.	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	तिर्यकुउदय
पादसंज्ञा	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	बहुपद	द्विपद	द्विपद	चतुष्पद	०	०
गति	जानु	शीघ्र	पद्भ्यां	पद्भ्यां	पद्भ्यां	पद्भ्यां	जानु	०	०

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
पृष्ठोदयादि	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	शीर्षोदय	पृष्ठोदय	पृष्ठोदय उभयोदय	शीर्षोदय उभयोदय	शीर्षोदय उभयोदय
संज्ञा	चतुष्पद	चतुष्पद	मानव	बहुपद	चतुष्पद	मानव	मानव	बहुपद	०	चतुष्पद	मानव	पक्षी
दिक्सूचना	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	आग्नेय	नैर्ऋत्य	वायव्य	ईशान	आग्नेय	नैर्ऋत्य	वायव्य	ईशान
पुरुष स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
एकादिसंज्ञा	एकोनरः	एकास्त्री	बहुनर	एकास्त्री	एकोनरः	बहुनर	बहुनर	एकास्त्री	बहुनर	द्वेस्त्रियौ	बहुनर	द्वे स्त्रियौ
अंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

अथ रोगिणः पीडाज्ञानचक्रम् ।

कृ	शिरः	उ	कंठः	उ	जानु
रो	ललाटं	ह	पक्षौ	श्र	जंघा
मृ	भ्रुवौ	चि	स्तनौ	ध	पादौ
आ	नेत्रे	स्वा	उदरं	श	पृष्ठं
पु	नासिका	वि	मध्यं	पू	स्फिचूकूले
पु	कर्णौ	अ	नितंबं	उ	गुल्फ
आश्ले	अधरोष्ठः	ज्ये	शिश्नः	रे	पादाग्रे
म	चिबुकं	मू	अंडौ	अ	तालिका
पू	अंगुलं	पू	ओष्ठौ	भ	अंगुल्यः

राहु भविष्य	रवि भूत	मंगल भविष्य
चंद्र भूत		गुरु वर्त्तमान
शनि वर्त्तमान	शुक्र भविष्य	बुध भूत

अथ धातुचिंताज्ञानार्थं स्थानादिनिर्णयमाह ।

ग्रहाः	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
नष्टसूचका	वन	जल	वन	नगर	नगर	जल	वन	०	०
स्थानांतराणि	नभः	जल	भूमि	निष्कंटरंध्र	नभः	युद्धभूमि	निष्कंट रंध्र	०	०
बलयोगात्कालावधिः	मास ६	एक मुहूर्त्त	दिन १	मास २	मास १	पक्ष १	वर्ष १	०	०
स्वगृहेअवधिदिनानि	दिन ६	दिन १	दिन १	दिन २	दिन १	दिन १	दिन १	०	०
मित्रगृहे मासादि	मास ६	मास १	मास १	मास २	मास १	मास १	मास १	०	०
शत्रुनीच स्थवर्षादि	वर्ष ६	वर्ष १	वर्ष १	वर्ष २	वर्ष १	वर्ष १	वर्ष १	०	०

अथ जीविचिंताज्ञानार्थं ग्रहसंज्ञाचक्रम् ।

ग्रहाः	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तत्वानि	पिता	माता	अग्नि	जल	आकाश	वायु	भूमि	०	०
पंचेंद्रियाणि	०	०	नेत्र	जिह्वा	कर्ण	त्वक्	घ्राण	०	०
विषयाः	०	०	रूप	रस	शब्द	स्पर्श	गन्ध	०	०
ज्ञानसंज्ञा	०	०	३	२	५	४	१	०	०
प्राणिवर्गाः	०	०	षट्पद	शंखादयः	सर्पादयः	देवादयः	वृक्षादयः	०	०
ग्रहावयवाः	०	०	मुख	पाद	देहः	जिह्वा	श्रोत्र	०	०

चक्रसंग्रहः ।

इसे मातःकालसे मध्याह्नपर्यंतदेखना ।

अथ कूपखातचक्रम् ।

पूर्व.

उत्तर. — दक्षिण.

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	वि.	अ.
रे.	आ.	पु.	पु.	आ.	स्वा.	ज्ये.
उ.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	मू.
पू.	श.	ध.	श्र.	अ.	उ.	पू.

पश्चिम.

इसे मध्याह्नसे सायंकालपर्यंत देखना ।

अथ कूपखातचक्रम् ।

दक्षिण.

पूर्व — पश्चिम.

पु.	आश्ले.	म.	पू.	उ.	श्र.	ध.
पु.	वि.	स्वा.	चि.	ह.	अभि.	श.
आ.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.षा-	उ.षा.	पू.भा.
मृ.	रो.	कृ.	भ.	अ.	रे.	उ.भा.

उत्तर.

ज्ञानप्रदीप–चक्रसंग्रहः ।

इसे सायंकालसे अर्द्धरात्रिपर्यंतदेखना ।

अथ कूपखातचक्रम् ।

पश्चिम.

दक्षिण. / उत्तर.

स्वा.	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	भ.	कृ.
चि.	श्र.	अभि.	उ.षा.	पू.षा.	अ.	रो.
ह.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	मृ.
उ.	पू.	म.	आश्ले.	पु.	पु.	आ.

पूर्व.

इसे अर्द्धरात्रिसे प्रातःकालपर्यंत देखना ।

अथ कूपखातचक्रम् ।

उत्तर.

पश्चिम. / पूर्व.

अभि.	श्र.	ध.	श.	पू.भा.	आश्ले.	म.
उ.षा.	भ.	अ.	रे.	उ.भा.	पु.	पू.
पू.षा.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	उ.
मू.	ज्ये.	अ.	वि.	स्वा.	चि.	ह.

दक्षिण.

॥ श्रीः ॥

अथ प्रश्नज्ञानप्रदीपस्थविषयानुक्रमणिका प्रारभ्यते ।

नष्टकाण्डम् ।

लाभालाभकाण्डम् ।

रोगकाण्डम् ।

मरणकाण्डम् ।

भोजनकाण्डम् ।

स्वप्नकाण्डम् ।

शकुनकाण्डम् ।

विवाहकाण्डम् ।

समाप्तेयमनुक्रमणिका.

श्रीगणेशाय नमः ।



अथ प्रश्नज्ञानप्रदीपः ।

भाषाटीकासमेतः ।

शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशांतये ॥ १ ॥

ग्रंथके आरंभमें मंगल करनेसे सब विघ्न दूर होकर ग्रंथकी समाप्ति होतीहै इसकारण प्रथम श्रीभगवान्का ध्यान करतेहैं । श्वेतवस्त्रके धारणकरनेवाले चंद्रसरीखे गौरवर्णवाले चारभुजाधारी प्रसन्न मुखवाले ऐसे विष्णुभगवान्का ध्यान करताहूं जिनके स्मरणमात्रसे सर्वविघ्नोंकी शांति होतीहै ॥ १ ॥

श्रीमद्गंगाधरसुतं चंद्रलेखावतंसिनम् ॥
सिद्धिदं सर्वविघ्नानां वंदे दंतावलाननम् ॥ २ ॥

---

१ यहांपर कोई यह शंकाकरे कि, भगवान्का स्वरूप तो मेघवर्ण कहाहै इस श्लोकमें शुक्लवर्ण क्यों लिखा इसका उत्तर यह है कि, भगवान्के चारोंयुगोंके पृथक् पृथक् स्वरूप कहे गयेहैं यह ध्यान भगवान्के सतयुगावतारकाहै इसमें प्रमाण श्रीमद्भागवते एकादशस्कंधे पञ्चमाध्यायः २१ श्लोके "कृते शुक्लश्चतुर्बाहुर्जटिलो वल्कलांबरः । कृष्णाजिनोपवीताक्षान्बिभ्रद्दंडकमंडलू" । अर्थात् सतयुगमें भगवान् शुक्लवर्णका अवतार धारणकरते हैं ।

श्रीमद्गंगाधर महादेवके पुत्र चंद्रलेखावतंसी सर्वविद्याके सिद्धिदाता हाथीके मुखवाले ऐसे गणपतिकी वंदना करताहूं ॥ २ ॥

ज्ञानप्रदीपकं नाम शास्त्रं लोकोपकारकम् ॥
प्रश्नादर्शं प्रवक्ष्यामि सर्वशास्त्रानुसारतः ॥ ३ ॥

"ज्ञानप्रदीपक" नामका ग्रंथ लोकोंके उपकारके वास्ते वर्णन करूंगा कैसाहै ज्ञानप्रदीप प्रश्नका आदर्श काँचके समान और सब शास्त्रोंके मतोंसे भराहुआ ॥ ३ ॥

भूतं भावि वर्तमानं शुभाशुभनिरीक्षणम् ॥
पंचप्रकारमार्गं च चतुःकेंद्रबलाबलम् ॥ ४ ॥

अब इसग्रंथमें कितनेविषयहैं उनका वर्णन करतेहैं. भूत गुजरी हुई बात वर्तमान हाल होरहीहै और होनेवाली तथा शुभ वा अशुभका देखना पाँचप्रकारका और चारों केंद्रोंका बलाबल ॥ ४ ॥

आरूढच्छत्रवर्गं च उदयादिबलाबलम् ॥
क्षेत्र दृष्टिं नरं नारींयुग्मं वंशंच वर्णकम् ॥ ५ ॥

आरूढ छत्र लग्नका बल ग्रहोंके स्वगृहदृष्टि पुरुषग्रह स्त्रीग्रह नपुंसकग्रह तथा वंशवर्ण ॥ ५ ॥

मृगादिनररूपाणि किरणाणि योजनानि च ॥
आयुरासनमाद्यंतं परीक्ष्य कथयेद्बुधः ॥ ६ ॥

मृगादि नररूप किरण योजन आयुष्य आसन इन्होंका विचार करके बुद्धिमान् फल कहै ॥ ६ ॥

चरस्थिरोभयं राशिं तत्प्रवेशस्थलानि च ॥
निशादिवससंध्याश्च कालदेशस्वभावकान् ॥ ७ ॥

इसग्रंथमें आगे लिखेहुये विषय वर्णन करूंगा चर स्थिर द्विस्वभाव इन्होंकी रहनेकी जगह रात, दिन, संध्याकाल, देश, काल, स्वभाव ॥ ७ ॥

धातुर्मूलं च जीवं च नष्टं मुष्टिं च चिंतनम् ॥
लाभालाभौगदं मृत्युं भुक्तिं स्वप्नं च शाकुनम् ॥ ८ ॥

धातु, मूल, जीव, नष्टहुई मूठीमें जो चीज ॥ इन्होंकी चिंता, लाभ, अलाभ, रोग, मृत्यु, भोजन, स्वप्न, शकुन, ॥ ८ ॥

जातकर्मायुधं शल्यं कूपं सेनागमं तथा ॥
सरिदागमनं वृष्टिमर्घं नौ सिद्धिमादितः ॥ ९॥
क्रमेण कथयिष्यामि शास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ॥
इति ज्ञानप्रदीपे उपोद्धातकांडं प्रथमम् ॥ १ ॥

जन्म, शस्त्र, शल्य, कूवाँ, फौजका आगमन, याने आना, यायी आनेवाला चढकर स्थायी जो घरमें स्थित रहे और जिसपर युद्धकी चढ़ाई हो । इनोंको जय पराजय नदीका चढना, पानीका वरसना, भाव तेज सोंगा होना, नावका किनारेपर लगना, कार्यकी सिद्धि असिद्धि इनोंको आदिलेकर ज्ञानप्रदीपमें वर्णन करताहूं ९॥

इतिप्रथमकांडम् ॥ १ ॥

अथ वक्ष्ये विशेषेण ग्रहाणां मित्रनिर्णयम ॥१०॥

अब ग्रहोंके मित्रताका निर्णय करता हूं ॥ १० ॥

भौमस्य मित्रे शुक्रज्ञौ भृगोर्ज्ञारार्किमंत्रिणः ॥
अंगारकं विना सर्वे ग्रहा मित्राणि मंत्रिणः ॥ ११ ॥

मंगलके मित्र शुक्र बुध हैं शुक्रकेमित्र मंगल बुध गुरु शनिहैं, गुरुके मित्र सूर्य, चंद्र, बुध, शुक्र, शनि ॥ ११ ॥

आदित्यस्य गुरुर्मित्रं शनेर्विद्गुरुभार्गवाः ॥
भास्करेणविना सर्वे बुधस्य सुहृदस्तथा ॥ १२ ॥

सूर्यका मित्र गुरु है, । शनिके बुध, गुरु, शुक्र, जानो । बुधके मित्र चंद्र, मंगल, गुरु, शुक्र शनि ॥ १२ ॥

चंद्रस्यमित्रे जीवज्ञौ मित्रवर्ग उदाहृतः ॥
मेषवृश्चिकयोर्भौमस्तुलावृषभयोः सितः ॥ १३ ॥

चंद्रके मित्र गुरु, और बुध इसप्रकारसे मित्रोंका निर्णय कथन किया । अब ग्रहोंके स्वगृह वर्णन करतेहें मेष तथा वृश्चिकका स्वामी मंगलहै । तुला वृषभका स्वामी शुक्र है ॥ १३ ॥

कन्यामिथुनयोः सौम्यः शनिर्मकरकुंभयोः ॥
धिषणो मीनधनुषोः सिंहस्य दिनकृद्भवेत् ॥ १४ ॥

बुध मिथुन तथा कन्याका स्वामीहै शनि मकर कुंभका स्वामी है । गुरु धन मीनका स्वामीहै । सूर्य सिंहका स्वामी जानो ॥ १४॥

कुलीरस्य निशानाथः क्षेत्राधिपतयः क्रमात् ॥
धनुर्मिथुनपाठीनकन्योक्षाणां शनिः सुहृत् ॥ १५ ॥

चंद्र कर्कका स्वामी है । इसप्रकार ग्रहोंके स्वगृह कहे । अब ग्रहोंकी मित्रता राशिनसे वर्णन करतेहैं । धन मीन मिथुन, कन्या वृषभ, तुला, इनोंका शनि मित्र है ॥ १५ ॥

रविश्चापांत्ययोरारस्तुलायुग्मोक्षयोषिताम् ॥
कोदंडमीनमिथुनकन्यकानांशशी सुहृत् ॥ १६ ॥

सूर्य धन मीनका मित्रहै । मंगल तुला वृषभ मिथुन कन्याका मित्रहै । चंद्र मिथुन कन्या धन मीन का मित्रहै ॥ १६ ॥

बुधस्य चापनक्रालिकर्कयजोक्षस्तुलाघटाः ॥

क्रियो मिथुनकोदंड कुंभालिमकरा भृगोः ॥ १७॥

धन, मकर, वृश्चिक,कर्क, मेष, मीन,वृषभ तुला कुंभ इन्होंका मित्र बुधहै । मेष, मिथुन, धन, कुंभ, वृश्चिक, मकर, कन्या, मीन इनोंका मित्र शुक्रहै ॥ १७ ॥

गुरोः कर्कतुलाकुंभ मिथुनोक्षमृगेश्वराः ॥
राशिमैत्रं ग्रहाणां च मैत्रमेव मुदाहृतम् ॥ १८ ॥

गुरुके कर्क, तुला, कुंभ, मकर, वृषभ, कन्या, मिथुन, सिंह ये मित्रहैं । या प्रकार राशिमैत्री भी कही ॥ १८ ॥

सूर्येंद्वोःपरिघेजीवेधूमज्ञशनिभोगिनाम् ॥
शक्रचापकुजोणूनांशुक्रस्योच्चास्त्वजादयः ॥१९ ॥

अब उच्च कहतेहैं । सूर्य मेषका । चंद्र वृषभका । मिथुनका परिघ । कर्कका गुरु । सिंहका धूम । कन्याका बुध । तुलाका शनि । भोगी यानी उपग्रह जो केतु वह वृश्चिकका । शक्रचाप याने धनुः धनका । मंगल मकरका । कुंभका व्यतीपात व्यतीपातका दूसरा नाम अणुभी है । मीनका शुक्र इसप्रकार उच्चग्रहोंका वर्णन कराहै ॥ १९ ॥

अत्युच्चं दशमं वह्निमनुयुग्मतिथींद्रियैः ॥
सप्तविंशतिर्विंशत्या भागाःसप्त ग्रहाःक्रमात् ॥२०॥

उच्चराशिसे सप्तम नीचराशि होतीहै । प्रकाशकरनेवाले तथा प्रकाश करके रहित ग्रहोंका वर्णन कराहै अथात् नवग्रह जो आकाशमें दृष्टिआतेहैं वे प्रकाशकरनेवाले ग्रह कहे जातेहैं इनके अतिरिक्त जो शेष अणु इत्यादि पाँचग्रह रहैं वे अप्रकाशक ग्रह कहे जातेहैं अब इन अप्रकाशक ग्रहोंका बनाना लिखतेहैं स्पष्टरवि में ४ राशि १३ अंश २० कला जोड़ना जो योग फल हो उसे धूम

कहतेहैं उस धूमकी राशि अंश कला विकलाको १२ राशिमेंसे घटा देना जो शेष रहे उसका नाम व्यतीपातहै उस व्यतीपातकी राशिमें ६ राशि जोड़ना जो आवे उसका नाम परिवेषहै परिवेष को १२ राशिमेंसे घटाना शेषरहे उसका नाम इन्द्रधनुहै इसमें १६ अंश ४० कला जोड़ देनेसे ध्वज बनजाताहै ॥ उदाहरण ॥ जैसे रविस्पष्ट २ । ४ । २८ । १ में ४ । १३ । २० जोडे तो ६ । १७ ४८ । १ हुए यह धूमहै उसको १२ मेंसे घटाया तो ५ । १२ । ११ । ५९ रहे इसका नाम व्यतीपात वा अणुहै इसमें ६ जोड़े तो ११ । १२ । ११ । ५९ हुए यह परीवेष हुआ इसको १२ मेंसे घटाया तो ० । १७ । ४८ । १ रहे यह इंद्रधनुहै इसमें ० । १६ । ४० जोड़े तो १ । ४ । २८ । १ हुए यह ध्वज हुआ इस ध्वजमें एक जोड़दे तो फिर वही स्पष्ट सूर्य २ । ४ । २८ । १ होजावेगा व्यतीपात तथा इंद्रधनुका स्वक्षेत्र सिंहराशि है और धूम तथा परि-वेषका स्वक्षेत्र कर्कराशिहै इन ग्रहोंके उच्च नीच इसी ग्रंथके संज्ञा-प्रकरणमें लिखआयेहैं अतएव यहाँ लिखनेकी आवश्यकता नहीं अब अत्युच्च ग्रहोंका वर्णन करेहैं । सूर्य दशअंशतक अत्युच्च होताहै इसीप्रकार चंद्र तीन अंश मंगल अट्ठाईस अंशतक बुध पंद्रह अंशतक गुरुपाँचअंश शुक्र सत्ताईस शनि वीस ऐसे अत्युच्च कहे हैं ॥ २० ॥

बुधस्य वैरी दिनकृच्चंद्रादित्यौ भृगो रिपू ॥
बृहस्पते रिपुर्भौमः सितचंद्रात्मजौ विना ॥२१ ॥
भौमस्य रिपवो भानोर्विना जीवं परेऽरयः ॥
गुरुसौम्यौ विना चंद्रं रवींद्रवनिजान्विताः ॥२२॥

अब शत्रु कहतेहैं रविके चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र शनि हैं ।

चंद्रके मंगल शुक्र शनि रवि हैं । मंगलके रवि, चंद्र, गुरु, शनि, शुत्रु हैं । बुधका वैरी सूर्य हैं । गुरुका मंगल शुक्रका रवि चंद्रमा ॥ २१ ॥ २२ ॥

शनेश्च रिपवः सर्वे तेषां तत्तद्गृहाणि च ॥
रवेर्वाणिगलिस्त्विंदोः कुलीरोंगारकस्य च ॥ २३ ॥

शनिके रवि, चंद्र, मंगल । इसीप्रकार जिसग्रहका जो ग्रह वैरीहै उसका घरभी वैरी जानना । अब ग्रहोंकी नीचराशि कहतेहैं । सूर्यकी तुला चंद्रकी वृश्चिक मंगलकी कर्क ॥ २३ ॥

ज्ञस्य मीनमजः सौरेः कन्या शुक्रस्य कथ्यते ॥
सुराचार्यस्य मकरस्त्वेतेषांनीचराशयः ॥ २४ ॥

बुधकी मीन । गुरुकी मकर । शुक्रकी कन्या । शनिकी मेष । येनीचराशि हैं ॥ २४ ॥

राहोर्वृषो युगं चेंद्रधनुषोणोर्मृगेश्वरः ॥
परिवेषस्य कोदंडः कुंभो धूमस्य नीचभूः ॥२५॥

राहुका वृषभ । धंनुषका मिथुन । अणुका मकर । परिवेषका धन धूमकी कुंभराशि है ॥ २५ ॥

मित्रं तुलानक्रकन्यायुग्मचापवृषास्त्वहेः ॥
कुंभक्षेत्रमहेः शत्रुः कुलीरो नीचभूर्वृषः ॥ २६ ॥

अहिके मित्र तुला, मकर, कन्या, मिथुन, धन, वृष येहैं । अहिका स्वगृह कुंभ है । शत्रु कुलीर यानी कर्क है । नीच गृह वृषभ राशिहै ॥ २६ ॥

उदयादिचतुर्थं तु जलकेंद्रमुदाहृतम् ॥
तच्चतुर्थं चास्तमयं तत्तुर्यं वियदुच्यते ॥ २७ ॥

उदयसे याने लग्नसे चौथे स्थानका जलकेंद्र ऐसो नाम है । चौथेसे चोथेको अस्त कहतेहैं । अस्तसे चौथेको वियत् ऐसी संज्ञाहै ॥ २७ ॥

तच्चतुर्थमुदयं चैव चतुष्केंद्रं प्रकीर्तितम् ॥
चिंतनीयं तु हिबुके दशमे स्वप्नचिंतनम् ॥ २८ ॥

वियत्से चतुर्थका उदय नामहै । दशमसे और चतुर्थसे स्वप्नका विचार करना ॥ २८ ॥

छत्रे मुष्टिं च यन्नष्टमस्ते चारूढतोपि वा ॥
चापोक्षकर्किनक्राजास्ते पृष्ठोदयसंज्ञकाः ॥ २९ ॥

छत्रसे मुष्टिका चिंतन अस्त और आरूढसे खोई चीजका विचारना धन, वृष, कर्क, मकर, मेष ये पृष्ठोदयहैं ॥ २९ ॥

तिर्यङ्मीनस्तथा शेषा राशयो मस्तकोदयाः
द्वंद्वोदयौ मीनमृगावन्ये सर्वे स्वभावजाः ॥ ३० ॥

मीन तिर्यगुदय है । बाकीकी राशि शीर्षोदयहैं । मीन, मकर द्वंद्वोदय है ॥ ३० ॥

अर्कांगारकमंदास्तु संति पृष्ठोदया अमी ॥
राहुर्जीवभृगुज्ञाश्च ग्रहास्युर्मस्तकोदयाः ॥ ३१ ॥

सूर्य, मंगल, शनि, पृष्ठोदय हैं । राहु, गुरु, शुक्र, बुध, मस्तकोदय हैं ॥ ३१ ॥

उद्यतस्तिर्यगेवेंदुकेतू तत्र प्रकीर्तितौ ॥
उदये बलिनौ जीवबुधौ तु पुरुषाःपुनः ॥ ३२ ॥

चंद्र और केतु तिर्यक् उदय हैं । लग्नमें पुरुष राशि बलवान् है । और गुरु बुध बलवान् है ॥ ३२ ॥

मध्ये चतुष्पदौ सूर्यभूमिजौ बलिनौ तथा ॥
चतुर्थे शुक्रशशिनौ जलराशी बलोत्तरौ ॥ ३३ ॥

दशमस्थानमें सूर्य मंगल बलवान्हैं । और उसी स्थानमें चतुष्पद राशि बलवान्है चतुर्थ में शुक्र चंद्र बलवान्हैं । और उसी-स्थानमें जलराशि मकर मीन बलीहैं ॥ ३३ ॥

कर्कालिर्बलवानस्ते खेटकश्च शनैश्चरः ॥
युग्मकन्याधनुःकुंभतुला मानुषराशयः ॥ ३४ ॥

सप्तमस्थानमें कर्क वृश्चिक तथा शनि बलीहैं । मिथुन, कन्या धन, कुंभ, तुला ये मानुषराशिहैं ॥ ३४ ॥

चतुष्पदा मेषवृषसिंहचापा भवंति हि ॥
कुलीराली बहुपदौ पक्षिणौ मृगमीनभौ ॥ ३५ ॥

मेष, वृषभ, सिंह, धन ये चतुष्पदराशि हैं । कर्क वृश्चिक बहोत पाँवकेहैं मकर मीन पक्षीहैं ॥ ३५ ॥

द्विपदाःकुंभमिथुनतुलाकन्या भवंति हि ॥
द्विपदा जीवविच्छुक्राः शन्यर्काराश्चतुष्पदः॥ ३६॥

कुंभ मिथुन तुला कन्या ये राशि द्विपद । याने दोपाँवकीहैं । गुरु बुध शुक्र ये द्विपद यानी दोपाँवकेहैं । सूर्य, मंगल शनि ये तीन ग्रह चार पाँवकेहैं ॥ ३६ ॥

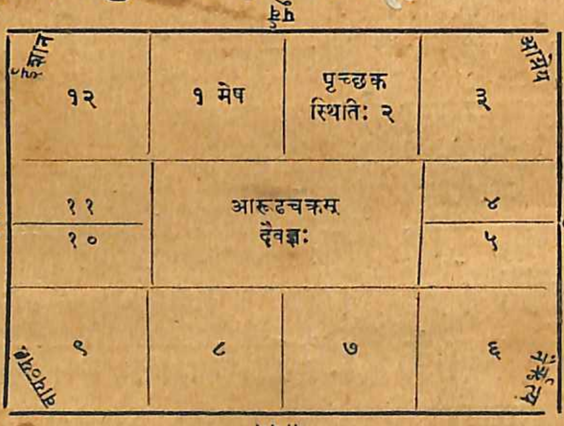
शशिसौम्यौ बहुपदौ द्रुतं याति निशाकरः ॥
शनिसूर्यौ जानुगती पद्भ्यां यांतीतरे ग्रहाः ॥ ३७ ॥

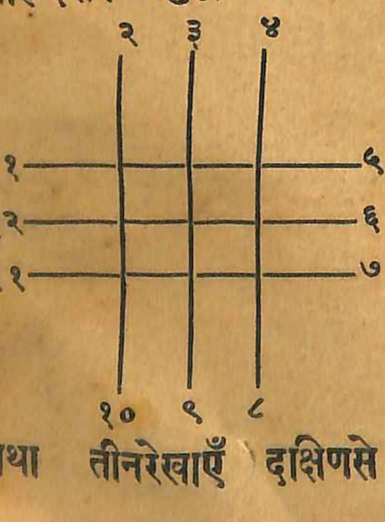
चंद्रमा और बुध बहोत पाँवकेहैं । चंद्रमा बहोत जल्दी चलेहैं। सूर्य और शनि ये घूंटेसे चलतेहैं । बाकीके ग्रह पाँवसे चलतेहैं ॥ ३७ ॥

उदीयंतेऽजवीथ्यां तु चत्वारो वृषभादयः ॥

युग्मवीथ्यामुदीयंते चत्वारो वृश्चिकादयः ॥ ३८ ॥
वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह ये चार मेषवीथीमें उदय होतेहैं ॥३८॥
उक्षवीथ्यामुदीयंते मेषमीनतुलास्त्रियः ॥
राशिचक्रं समालिख्य प्रागादिवृषभादिकम् ॥ ३९ ॥
मेष, मीन, तुला, कन्या ये वृषभ वीथीमें उदय पातेहैं। वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ ये मिथुन वीर्थीमें उदय होते हैं ॥ ३९ ॥
प्रदक्षिणक्रमेणैव द्वादशारूढसंज्ञकम् ॥
वृषस्य वृश्चिकश्चैव मिथुनस्य शरासनम् ॥ ४० ॥

अब आरूढ लग्न जाननेका प्रकार कहतेहैं कि, ज्योतिषीसे प्रश्नकर्त्ता जिसदिशाको बैठे उसदिशाकी जो राशिहै वही आरूढ लग्नहै दिशाकी राशि जाननेके-लिये यह कोष्ठक लिखाहै इसके अनुकूल अपने मनमें लग्नका अनुमान करलेना अथवा





इस कोष्ठकके ढंगकी एक जाजिम बना लेना बीचमें ज्योतिषी बैठजावे और आसपासके बारे घरोंमें जहाँ कहीं प्रश्न कर्त्ता आकर बैठे उसी कोठेके राश्यानुकूल आरूढ लग्न समझे दूसरा प्रकार यहभीहै कि बारह राशियोंका चक्र इसप्रकार तीनरेखाएँ पूर्व से पाश्चिम तथा तीनरेखाएँ दक्षिणसे उत्तरपट्टीपर खींचकर लिखे

और पृच्छक इसचक्रमें जिसराशिका स्पर्श करे उसी राशिको आरूढ लग्न कहना परंतु इसमें पूर्वका मत उत्तमहै जैमिनिसूत्रमें आरूढलग्नका ज्ञान इसतरह लिखाहै कि, वर्तमानलग्नसे लग्नेश्वर जौनसे घरमें हों उस घरसे उतनेही घर आगे गिनलेना वही आरूढलग्नहै जैसे लग्न मेष है इसका स्वामी मंगल मकरस्थहै यह लग्नसे दशवें घर है तो मकरसे दशवीं लग्न तुला हुई यहाँ आरूढ लग्नहै परंतु ज्ञानप्रदीपमें यह मत मान्य नहींहै इसमें तो पूर्वकाही मत मान्यहै जिसमें मीनलग्नको ईशानकोणमें मानकर मर्दराशिगणना की गई है अब राशियोंकी परस्पर दृष्टि कहतेहैं प्रत्येक राशि अपने स्थानसे सातवीं राशिको देखतीहै जैसे वृष वृश्चिकको देखतीहै और मिथुन धनको ॥ ४०॥

मकरस्तु कुलीरस्य सिंहस्य घट उच्यते ॥
मीनस्तु कन्यकायाश्च तुलाया मेष उच्यते ॥४१॥

कर्कको मकर, सिंहको कुंभ, मीनको कन्या, तुलाको मेष, इसप्रकारसे आपसमें दृष्टि होतीहै ॥ ४१ ॥

प्रतिसूत्रक्रमादेते परस्परनिरीक्षकाः ॥
गगनं भास्करः प्रोक्तश्चंद्रो भूमिरुदाहृतः ॥ ४२ ॥

पृथ्वीचक्रका देहधारी चंद्रमाहै सूर्य आकाशहै चद्रभूमि है॥४२॥

पुमान्भानुर्वधूश्चंद्रो भूचक्रप्राणवान्रविः ॥
भूचक्रदेहश्चंद्रः स्यादिति शास्त्रस्य निश्चयः ॥ ४३ ॥

सूर्य पुरुषहै, चंद्र वधू याने स्त्रीहै, भूचक्र याने पृथ्वीका प्राण सूर्यहै ॥ ४३ ॥

रविः शुक्रः कुजश्चार्किर्गुरुरिंदुरहिर्विदः ॥
ध्वजादिव्युत्क्रमेणैव तत्तत्कालं विचिंतयेत् ॥ ४४॥

ध्वज, धूम्र, सिंह, श्वान, वृष, खर, गज, ध्वांक्ष, इन आठ आयके स्वामी रवि, शुक्र, मंगल, शनि, गुरु, चंद्र, राहु, बुध, ये क्रमानुसार हैं और इसीतरह पूर्वादि अष्ट दिशाके ध्वजादि स्वामी हैं इनका काम इसग्रंथमें नहीं पड़ेगा ग्रंथान्तरोंमें इनका वर्णन सविस्तारहै केरलमें इन्हीं आठ ध्वजादिसे सम्पूर्ण फलित लिखाहै लग्न जाननेकी उसमें कुछ आवश्यकता नहीं पृच्छकके नामाक्षरों परसे सारा फलित वर्णन कियाहै यहाँ तो केवल नाममात्र सूचनार्थ लिखे गये हैं क्योंकि इस ग्रंथमें इनका काम नहीं पड़ेगा ॥ ४४ ॥

प्रष्टुरारूढभं ज्ञात्त्वा तद्वीर्थीमवलोक्य च ॥
आरूढाद्यावती वीथी तावती तूदयादिका ॥४५ ॥
तद्राशिश्छत्रमित्युक्तं शास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ॥
आरूढाद्वानुगां वीथीं परिगण्योदयात्तथा ॥४६ ॥
तावता राशिना छत्रमिति केचित्प्रचक्षते ॥
मेषस्य वृषभं छत्रं मेषश्छत्रं वृषस्य च ॥ ४७ ॥

अब छत्रज्ञान कहतेहैं कि पृच्छककी आरूढ़लग्नसे जितनी संख्यामें वीथी हो उतनीही संख्या वर्तमान लग्नसे गिनलेना वही छत्रहै । जैसे आरूढ मकरहै, । लग्न मेषहै, । मकरकी वीथी मिथुन है, । इसकारण मकरसे मिथुनतक गिनतीसे छः होतेहैं इसवास्ते लग्नमेषसे गिने तो कन्या छत्र सिद्धि हुवा । दूसरा मत आरूढ लग्नसे । उस समय सूर्य जिस राशिका होवे उसराशिकी वीथीको आरूढसे गिननेपर जितनी संख्या आवे उतनी संख्या तत्काल लग्नसे गिने वोही छत्रहै । आरूढ लग्न मकरहै उस समयमें वृषभका सूर्य है । वृषभकी वीथी मेषहै । मकरसे गिनती मेषतक करी तो चार है लग्न कर्क है, कर्कसे चौथी तुला वोही छत्रहै ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

युग्मकर्कटसिंहानां मेषश्छत्रमुदाहृतम् ॥
कन्यायाा मकरश्छत्रं तुलाया वृष उच्यते ॥ ४८ ॥

तीसरा मत—मेषका छत्र वृषभहै, वृषभका मेष छत्रहै, मिथुन, कर्क, सिंह इनोंका छत्र मेषहै, कन्याका छत्र मकर, तुलाका वृषहै ॥ ४८ ॥

वृश्चिकस्य युगं छत्रं धनुषो मिथुनं तथा ॥
नक्रस्य मिथुनं छत्रं मेषः कुंभस्य कीर्तितः ॥ ४९ ॥

वृश्चिकका मिथुन, धनका मिथुन मकरका मिथुन । कुंभका मेष छत्रहै ॥ ४९ ॥

मीनस्य वृषभश्छत्रं छत्रत्रयमुदाहृतम् ॥
उदये सप्तमे पूर्णमर्धं पश्येत्त्रिकोणके ॥ ५० ॥

मीनका वृषभ छत्रहै इसप्रकार छत्रका वर्णन कराहै । जो ग्रह जिसके साथ एकराशिमें बैठे उसको पूर्णदृष्टिसे देखताहै तथा सप्तम उसकी पूर्ण दृष्टिहै, पंचम नवम आधी दृष्टिहै ॥ ५० ॥

चतुरस्रे त्रिपादं च दशमे पादमेव च ॥
एकादशे तृतीये च पादार्धं वीक्षणं भवेत् ॥ ५१ ॥

चौथी अष्टम ये त्रिपाद दृष्टिहै, दशम पाददृष्टिहै, तीन ग्यारा ये रुपयेमें दोआना दृष्टिहै ॥ ५१ ॥

रवींदुसितसौम्यास्तु बलिनः पूर्णवीक्षणे ॥
अर्धेक्षणे सुराचार्यस्त्रिपात्पादार्धयोः कुजः ॥ ५२ ॥
पादेक्षणे बली सौरिर्वीक्षणाद्बलमीरितम् ॥
तिर्यक् पश्यंति तिर्यंचो मानुषाः समदृष्टयः ॥ ५३ ॥

सूर्य, चंद्र, शुक्र, बुध ये पूर्णदृष्टीसे बलवान्हैं आधी दृष्टि याने नवम पंचममें गुरु बलवान्है, मंगल चार आठ तीन ग्यारह याने

त्रिपात् पादार्धदृष्टिसे बलवान्है शनि पाद दृष्टिसे दशम दृष्टिसे बलवान्है । तात्पर्य्य यहहै कि, सूर्य, शुक्र, चंद्र, बुध ये प्रथम तथा सप्तम घरको पूर्णदृष्टिसे देखतेहैं नवम पंचम घरको गुरु पूर्णदृष्टिसे देखताहै चौथे आठवें, तीसरे ग्यरहवें मंगल तथा दशम घरको शनि पूर्ण देखता है । तिर्यञ्च मेष वृषभ सिंह वृश्चिक ये तिरछी नजरसे देखतेहैं । मनुष्य समदृष्टी हैं । मनुष्य मिथुन कन्या तुला धन कुंभ येहैं ॥ ५३ ॥

ऊर्ध्वेक्षणौ पत्त्ररथावधोनेत्राः सरीसृपाः ॥
अन्योन्यालोकिनौ जीवचंद्रावूर्ध्वेक्षणो रविः॥५४॥

पक्षी मकर मीन ये ऊर्ध्वदृष्टि हैं सरीसृप कर्क वृश्चिक ये नीचे देखतेहैं गुरु चंद्र ये दोनों परस्पर देखतेहैं, सूर्य ऊपर देखे हैं ॥ ५४ ॥

पश्यत्यारः कटाक्षेण पश्यतोधः कवींदुजौ ॥
एकदृष्ट्याहिमंदौ च ग्रहाणामवलोकनम् ॥ ५५ ॥

मंगल कटाक्षसे यानी तिरछा देखताहै; शुक्र बुध ये दोनों नीचे देखते हैं ॥ शनि राहु एकनजरसे देखतेहैं इस कारणसे काणे हैं ॥ इस प्रकार ग्रहोंकी दृष्टि वर्णन करीहै ॥ ५५ ॥

मेषः प्राच्यां धनुःसिंहावग्नावुक्षा च दक्षिणे ॥
मृगकन्ये च नैर्ऋत्यां मिथुनं पश्चिमे ततः ॥ ५६ ॥

मेष पूर्वको, धन सिंह आग्नेयीमें, दक्षिणमें वृषभ राशि है, मकर कन्या नैर्ऋत्यमें, पश्चिममें मिथुनहै ॥ ५६ ॥

वायुभागे तुलाकुंभावुदीच्यां कर्क उच्यते ॥
ईशभागेऽलिमीनौ च ज्ञेया नष्टादिसूचकाः ॥ ५७ ॥

वायव्यकोणमें तुला और कुंभ, उत्तरमें कर्क, ईशानमें वृश्चिक मीनहै, खोई रकम जानी जातीहै ॥ ५७ ॥

अर्कशुक्रारराह्वार्किंचंद्रज्ञगुरवः क्रमात् ॥
पूर्वादीनां क्रमादीशाः क्रमान्नष्टादिसूचकाः ॥ ५८ ॥

सूर्य पूर्वमें, शुक्र आग्नेयीमें, मंगल दक्षिण, राहु निर्ऋती, शनि पश्चिम, वायव्य चंद्र, उत्तरमें बुध, ईशानमें गुरुः इसप्रकार आठ दिशानके मालिकहैं गई रकमके देखनेमें हैं ॥ ५८ ॥

मेषयुग्मधनुःकुंभतुलासिंहाश्च पूरुषाः ॥
राशयोन्ये स्त्रियः प्रोक्ता ग्रहाणां भेद उच्यते ॥५९॥

तात्पर्य्य यहहै कि, जब किसी पदार्थकी दिशा जानना हो जैसे अमुक पदार्थ किसदिशामें है वा वह वस्तु किस दिशासे यहाँ आवेगी इत्यादि ऐसे अवसरोंपर ग्रह तथा राश्यनुकूल उक्त दिशा बतलाना मेष, मिथुन, धन, कुंभ, तुला, सिंह ये पुरुषहैं और शेष राशि स्त्रीहैं अब ग्रहोंके भेद कहतेहैं ॥ ५९ ॥

पुमांसोऽर्कारगुरवः शुक्रेंदुभुजगाः स्त्रियः ॥
मंदज्ञकेतवः क्लीवा ग्रहभेदाः प्रकीर्तिताः ॥ ६० ॥

सूर्य मंगल, गुरु ये पुरुषहैं । शुक्र, चंद्र, राहु ये स्त्रीग्रहहैं ॥ शनि, बुध, केतु, नपुंसक ग्रहहैं ॥ इसप्रकार ग्रहोंका भेद कहाहै ॥ ६० ॥

तुलाकोदंडमिथुनघटकन्या नराः स्मृताः ॥
एकाकिनौ मेषसिंहौ वृषकर्क्यलिकन्यकाः ॥ ६१ ॥

तुला, धन, मिथुन, कुंभ, कन्या ये पुरुषहैं. मेष, सिंह, ये अकेले पुरुषहैं । वृष, कर्क, वृश्चिक ये ॥ ६१ ॥

एकाकिन्यः स्त्रियःप्रोक्ता स्त्रियुग्मं मकरांतिमौ ॥
एकाकिनोर्केंदुकुजाः शुक्रज्ञार्क्यहिमंत्रिणः ॥ ६२ ॥
एते युग्मग्रहाः प्रोक्ताः शास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ॥ ६३ ॥

अकेली चलनेवाली स्त्रीहै मकर मीन स्त्रियोंकी जोड़ीहै अब ग्रहोंका भेद कहतेहैं सूर्य, चंद्र, मंगल ये अकेले जानेवालेहैं शुक्र बुध, शनि, गुरु, राहु ये जोड़ीसे जानेवालेहैं ऐसा ज्ञानप्रदीपका मतहै ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

विप्राः कर्क्यलिमीनाश्च धनुःसिंहक्रिया नृपाः ॥
तुलायुग्मघटा वैश्याः शूद्रा नक्रोक्षकन्यकाः॥६४॥

कर्क, वृश्चिक, मीन ये ब्राह्मणहैं मेष, सिंह, धन, क्षत्रिय हैं। तुला, मिथुन, कुंभ ये वैश्यहैं । मकर वृषभ कन्यका ये शूद्रहैं ॥ ६४ ॥

नृपावर्ककुजौ विप्रौ बृहस्पतिनिशाकरौ ॥
बुधो वैश्यो भृगुः शूद्रो नीचावार्किभुजंगमौ॥६५॥

गुरु, चंद्र, ब्राह्मणहैं सूर्य, मंगल, क्षत्रियहैं बुध वैश्यहैं शुक्र शूद्रहैं । शनि राहु नीच जातिहैं ॥ ६५ ॥

रक्ता मेषधनुःसिंहाःकुलीरोक्षतुलाः सिताः ॥
कुंभालिमीनाःश्यामाः स्युः कृष्णा युग्मांगनामृगाः

मेष, धन, सिंह लालहैं कर्क, वृषभ, तुला ये सुफ़ेदहैं कुम्भ वृश्चिक मीन श्यामहैं । मिथुन,कन्या मकर ये कालेहैं ॥ ६६ ॥

शुक्रः श्वेतः कुजो रक्तः पिंगलांगो बृहस्पतिः ॥
बुधःश्यामःशशीश्वेतोरक्तःसूर्योऽसितःशनिः॥६७॥

चंद्र, शुक्र, सुफ़ेदहैं मंगल लालहैं । गुरु पीतहैं तथा पिंगलांग भूरेरंगका, बुध श्याम सूर्य लालहैं, शनि राहु कालेरंगकेहैं ॥ ६७॥

राहुश्च कृष्णवर्णः स्याद्वर्णभेदा उदाहृताः ॥६८॥

इसप्रकारसे रंगोंका भेद वर्णन कराहै ॥ ६८॥

दीर्घवृत्तं तथाष्टास्रं चतुरस्रायतं तथा ॥
दीर्घश्चेति क्रमादेते सूर्याद्याकृतयो मताः ॥ ६९ ॥

राशिनके तीनों मतोंसे किरणवर्णन करतेहैं प्रथम ग्रहोंके आकार, सूर्य चौकोन, चंद्रगोल, मंगल कृश, बुध मध्य, गुरु त्रिकोण, शुक्र लंबा गोल, शनि आठकोन, राहु चौकोन केतु लंबा, ग्रहोंके किरण ॥ ६९ ॥

पंचैकविंशद्विरयो नवाशा षोडशाब्धयः ॥
भास्करादिग्रहाणां तु किरणाःपरिकीर्तिताः ॥७०॥

सूर्यके ५ चंद्रके २१ मंगलके ७ बुधके ९ गुरुके १० शुक्रके १६ शनिके ४ ॥ ७० ॥

वसुरुद्रर्तुरुद्राश्च वह्निषट्चतुर्दश ॥
विश्वाशाःशतवेदाश्चचतुस्त्रिंशदजादिनाम् ७१ ॥
कुलीराजतुलाकुंभकिरणा वसुसंख्यया ॥
मिथुनोक्षमृगाणां च किरणा ऋतुसंख्यया ॥ ७२ ॥
सिंहस्य किरणाः सप्त कन्याकार्मुकयोस्तथा ॥
चत्वारो वृश्चिकस्योक्ताःसप्तविंशज्झषस्य च ॥७३॥
सप्ताष्टशरवह्न्यद्रिरुद्रयुग्माब्धिषड्वसु ॥
सप्तविंशतिसंख्याश्च मेषादीनां परे विदुः ॥ ७४ ॥

और राशियोंकी किरण तीनों मतोंसे चक्रमें है वो देखना ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

कुजेंदुशनयो ह्रस्वा दीर्घा जीवबुधोरगाः ॥
रविशुक्रौ समौ प्रोक्तौ शास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ॥ ७५ ॥

मंगल चंद्र शनि पस्तेकदकेहैं, गुरु बुध, राहु लंबेकदकेहैं । सूर्य शुक्र मध्यम कदकेहैं ॥ ७५ ॥

आदित्यशनिसौम्यानां योजनान्यष्टसंख्यया ॥
शुक्रस्य षोडशोक्तानि गुरोश्च दशयोजनम् ॥७६॥

सूर्य, शनि, बुध इनोंके आठ योजनहै, शुक्रके सोलह योजन है, गुरुके दशयोजनहैं ॥ ७६ ॥

कुजस्य सप्त विख्याताः शशांकस्यैकविंशतिः ॥
भूमिजः षोडशवयाः शुक्रः सप्तवयास्तथा ॥ ७७ ॥

मंगलके सात चंद्रमाके इक्कीसहैं ॥ अब ग्रहोंकी उमर कहेंगे मंगल सोलह वरसके उमरकाहै, । शुक्र सातबरका ॥ ७७ ॥

विंशद्वयाश्चंद्रसुतो गुरुस्त्रिंशद्वयाः स्मृतः ॥
शशांकः सप्ततिवयाः पंचाशद्भास्वतो वयः ॥७८॥

बुध वीसबरसका, गुरु तीसबरसका, चंद्र सत्तरबरसका, सूर्यकी उमर पचास वर्षकी ॥ ७८ ॥

शनैश्चरस्य राहोश्च शतसंख्यावयो भवेत् ॥
तिक्तं शनेश्च राहोश्च मधुरं तु बृहस्पतेः ॥ ७९ ॥

शनि राहु दोनोंकी सौ वरसकी उमरहै. अब स्वाद कहतेहैं शनि राहु दोनोंको कड़ा रस अच्छा लगेहैं, मीठा गुरुको ॥ ७९ ॥

अम्लं भृगोर्विधोः क्षारः कुजस्य कुलजो रसः ॥
तुवरः सोमपुत्रस्य भास्करस्य कटुर्भवेत् ॥ ८० ॥

शुक्रको खट्टा, चंद्रको खारा, मंगलको मजमूंवाँ, बुध तोरा, सूर्य कड़वा ॥ ८० ॥

सौम्यार्ककुजजीवानां दक्षिणे लांछनं भवेत् ॥
फणींदुशुक्रमंदानां वामे भवति लांछनम् ॥ ८१ ॥

बुध, सूर्य, मंगल, गुरु इनोंके दक्षिण अंगमें चिह्नहै राहु, चंद्र, शुक्र, शनि इनोंके बाँयें अंगमें होताहै ॥ ८१ ॥

शुक्रस्य वदने पृष्ठे कुजस्यांशे बृहस्पतेः ॥
कक्षे बुधस्य चंद्रस्य मूर्ध्नि भानोः कटीतटे ॥ ८२ ॥

अब अलग अलग अंग सब ग्रहोंके वर्णन करतेहैं. शुक्रका अंग मुख यानी चेहरा मंगलकी पीठ, गुरुका कंधा, बुधकी, कांख चंद्रका माथा, सूर्यकी कमर ॥ ८२ ॥

उरौ शनेः पदे राहोर्लांछनानि भवंति हि ॥
बुधादित्यौ भग्नशृंगौ चंद्रः शृंगविवर्जितः ॥ ८३ ॥

शनीकी जंघा, राहुका पाँव, सब ग्रहोंके चिह्न कहेहैं. सूर्य बुध दोनोंके टूटे सींगहैं, चंद्र विना सींगकाहैं ॥ ८३ ॥

तीक्ष्णशृंगः कुजो दीर्घशृंगौ जीवकवी तथा ॥
शनिराहू वक्रशृंगौ शृंगभेद उदाहृतः ॥ ८४ ॥

मंगल तीखे सींगका, गुरु शुक्र लंबे सींगवाले, शनि राहु टेढे सींगके ॥ इस प्रकार सींगोंका वर्णन कराहै ॥ ८४ ॥

वृषसिंहालिकुंभाश्च तिष्ठंति स्थिरराशयः ॥
कर्किनक्रतुलामेषाश्चरंति चरराशयः ॥ ८५ ॥

अब चर स्थिर द्विस्वभावका वर्णन करतेहैं ॥ वृष सिंह वृश्चिक कुंभ ये स्थिर राशिहैं ॥ कर्क मकर तुला मेष ये चरराशिहैं ॥ ८५ ॥

युग्मकन्याधनुर्मीनाः स्वपंत्युभयराशयः ॥
धनुर्मेषौ वनप्रांते कन्यका मिथुनं पुरे ॥ ८६ ॥

बाकी द्विस्वभावहैं. धन मेष वनमें, मिथुन कन्या गांवमें ॥ ८६ ॥

हरिचापतुलामीनमकराः सलिलेषु च ॥
नद्यां कुलीरः कुल्यायां वृषः कुंभः पयोघटे ॥ ८७ ॥

सिंह, धन, तुला, मीन, मकर, जलमें, कर्क नदीमें, वृष नहरमें, कुंभ जलके घड़ामें ॥ ८७ ॥

वृश्चिकः कूपसलिले राशीनां स्थितिरीरिता ॥
वनकेदारकोद्यानकुल्याद्रिवनभूमयः ॥ ८८ ॥

वृश्चिक कूवाँके जलमें । अब राशिनका स्थिति याने रहनेके स्थानोंका वर्णन करतेहैं मेष वन, वृषभ खेत, मिथुन बाग, कर्क नहर, सिंह पहाड़ कन्या गाँवँ ॥ ८८ ॥

आपगातीरसद्वापीतडागसरितस्तथा ॥
जलकुंभश्च कूपश्च नष्टद्रव्यादिसूचकाः ॥ ८९ ॥

तुला नदीका तीर, वृश्चिक बावडी, धन तालाव, मकर नदी कुंभ भरी गागर मीन कूँवाँ ये जगह खोई हुई चीजको देखनेकीहै ॥ ८९ ॥

घटकन्यायुग्मतुलाग्रामेऽजाली धनुर्हरी ॥
वने चाथ कुलीरोक्षनक्रमीना जले स्थिताः ॥ ९० ॥

मिथुन, कन्या, तुला, कुंभ ये गाँवँ में, मेष वृश्चिक, धन, सिंह वनमें वा गाँवँके बाहर कर्क वृषभ मकर मीन जलमें है ॥ ९० ॥

विपिने शनिभौमाऽर्को भृगुचंद्रौ जले स्थितौ ॥
बुधजीवौ च नगरे नष्टद्रव्यादिसूचकाः ॥ ९१ ॥

अब ग्रहोंकी रहनेकी जगह कहतेहैं सूर्य, मंगल, शनि वनमें ठरतेहैं, । चंद्र और शुक्र जलमें रहतेहैं, बुध गुरु गाँवँ में हैं ये खोई हुई चीजकी स्थान बतलानेवालेहैं ॥ ९१ ॥

भौमो भूमिर्जलं काव्यशशिनौ बुधभोगिनौ ॥
निष्कंठं चैव रंध्रं च गुरुभास्करयोर्नभः ॥ ९२ ॥

मंगल जमीनहैं चंद्र शुक्र जलहैं, बुध राहु बिनाकां टेका तथा छेदवाला स्थानहैं गुरु सूर्यदोनों आकाश हैं ॥ ९२ ॥

मंदस्य युद्धभूमिश्च बलवर्तिग्रहे स्थिते ॥
सूर्यार्क्यारबले भूमौ गुरुशुक्रबले च खे ॥ ९३ ॥

शनिकी लड़ाईकी जमीन जो बलवान् ग्रह होवे उससे फल जानो सूर्य मंगल शनि ये बलवान् होवें तो जमीन जानो गुरु शुक्र बलवान् होवें तो आकाशमें ॥ ९३ ॥

चंद्रसौम्यबले मध्ये कैश्चिदेवमुदाहृतम् ॥
निशादिवससंऽध्याश्च भानुयुग्राशिमादितः ॥९४॥

चंद्र बुध बलवान्होवें तो बीचमें ऐसा कोई ज्योतिषीने कहाहै जिसराशिमें सूर्य होवें उसीराशिको आरंभ करके निशा दिवस संध्या कहै जैसे प्रश्नके समयमें सूर्य मिथुनकाहै तो और आरूढ़ लग्न वृषहै अब मिथुनसे वृषतक निशादिवस संध्या इसक्रमसे गिनते आवे तो वृषपर संध्या आई अतः पृच्छकको संध्याका समय बतला देना ॥ ९४ ॥

चरराशिवशादेवमिति केचित्प्रचक्षते ॥
ग्रहेषुबलवान्यस्तु तद्वशात्फलमीरयेत् ॥ ९५ ॥

किसी ज्योतिषीके मतसे चररात्रि स्थिरदिन,द्विस्वभाव सायंकाल, ऐसा कहतेहैं बलवान् ग्रहोंसे फल कहना ॥ ९५ ॥

शनेर्वर्षं तदर्धं स्याद्भानोर्मासद्वयं विदुः ॥
शुक्रस्यपक्षो जीवस्यमासो भौमस्य वासरः॥९६॥

शनिका वर्ष १, छः महीना सूर्य के, दोमास बुधके,शुक्रकेपंद्रह दिन, गुरुका महीना १, भौमका दिन १ ॥ ९६ ॥

इंदोर्मुहूर्तमित्युक्तं ग्रहाणां बलतो भवेत् ॥
एतेषां घटिकाप्रोक्ताउच्चस्थानजुषां क्रमात्॥९७॥

चंद्रकी घड़ी दो २ यह अवधि समका ग्रह हो तो कहना यदि उच्चका ग्रह हो तो पूर्वोक्त अवधिके स्थानमें उतनीही घटी कहना ॥ ९७ ॥

स्वगृहेषु दिनं प्रोक्तं मित्रभे मासमादिशेत् ॥
शत्रुस्थानेषु नीचेषुवत्सरानाहुरुत्तमान् ॥ ९८ ॥

अपने घरका ग्रह हो तो पूर्वोक्त अवधिके स्थानमें दिन कहना और मित्रराशिका हो तो उतनेही मास कहना और शत्रु नीच स्थानका हो तो पूर्वोक्त अवधिकी जगह उतनेही वर्ष कहना यह स्वाभाविक अवधि हुई इसमें राशिका संस्कार देनेसे और रद्द बदली होगी अर्थात् चरलग्न हो तो यथास्थित अवधि जो ग्रहबला नुसारहै कहना परंतु स्थिरसे उस कालका द्विगुणा और द्विस्वभावसे निर्द्धारितअवधिका त्रिगुण काल कहना इन सबका स्पष्ट भाव चक्रसे विदित होगा उदाहरण जैसे प्रश्नलग्नमें कार्येश शनैश्चर मकर राशिस्थहै यह शनिका घरहै इसलिये पूर्वोक्त १ वर्ष एकदिन होगया राशिसंस्कार देनेके लिये लग्न देखी तो स्थिरहै अतः एकका दो दिन होगया ॥ ९८ ॥

सूर्यारजीवविच्छुक्रशनिचंद्रभुजंगमाः ॥
प्रागादिदिक्षु क्रमशश्चरेयुर्यामसंख्यया ॥ ९९ ॥

सूर्य, मंगल, गुरु, बुध, शुक्र, शनि, चंद्र, राहु, ये ग्रह पूर्वसे लगाके आठो दिशामें पहर पहर चलतेहैं ॥ ९९ ॥

प्रागादीशानपर्यंतान्वारेशाद्यंतकान्ग्रहान् ॥
प्रभाते प्रहरे चेद्रे द्वितीयेग्न्यादिकोणतः ॥ १०० ॥
एवं याम्ये तृतीये च क्रमेण परिकल्पयेत् ॥
भूत भावि वर्तमानं वारेशाद्या भवंति हि ॥ १०१ ॥

तद्दिने युक्तचंद्रर्क्षाद्यावद्भिरुदयादिकम् ॥
तावद्भिर्वासरैःसिद्धिःकेचिदंशाधिपाद्विदुः ॥१०२॥

प्रातः काल पहले पहरमें पूर्वमें दूसरे पहरमें आग्नेयीमें तीसरे पहरमें दक्षिणदिशामें इत्यादि रवि भूत, मंगल भविष्य, गुरु वर्तमान, बुध भूत, शुक्र भविष्य, शनि वर्तमान, चंद्र भविष्य, राहु भूत, जिसदिन प्रश्न करे उस रोज जिस राशिका चंद्र होवे उस राशीसे जितना लग्न आदि होवे उतने दिनोंसे सिद्ध होवे अथवा चंद्रनवांशसे जानो । चंद्रनवांशसे जितनी दूर प्रश्नलग्न होवे उतने दिनोंसे सिद्धिहै । ये भी कोईका मतहै ॥ १००॥ १०१॥ १०२॥

प्रश्ने निश्चित्य घटिकाः सार्द्धद्विघटिकाः क्रमात् ॥
सार्द्धद्विघटिपर्यंतमर्कलग्नं प्रचक्षते ॥ १०३ ॥
तद्यथा काललग्नं तु ज्ञात्वा पूर्वादिकं न्यसेत् ॥
तद्वशात्प्रष्टुरारूढं ज्ञात्वा चारूढकेश्वरम् ॥१०४॥

अर्कलग्नका काल लग्नका भुक्तिका प्रमाण बतातेहैं । प्रश्नकी घड़िनका निश्चय करके ढाईघडीके हिसाबसे अर्कलग्न कहतेहैं पूर्वसे प्रारंभ करे, चक्रसे अर्थ जानो ॥ १०३ ॥ १०४ ॥

अर्कोनलग्नस्य लवाः खबाणचंद्रावशेषै
रहितास्त्रिभक्ताः ॥ वारान्विताः सप्तहृताः
कृतास्ते कालाख्यहोरापतयोऽर्कतः स्युः ॥१०५॥

प्रश्न करनेवालेका आरूढलग्न जानकर । आरूढलग्नका स्वामी जहाँ होगा उस तरफसे चोरीका माल निकलाहै । अब धातु मूलज्ञान कहेतेहैं । मेष, कर्क, तुला, मकर ये धातुराशिहैं ॥१०६॥

आरूढाधिपतिर्यत्र प्रयाते तत्र निर्गमः ॥
मेषकर्किंतुलानक्रा धातुरायश ईरिताः ॥१०६॥

कुंभ, सिंह, वृश्चिक, वृषभ ये मूलराशिहैं । मिथुन, कान्या, धन, मीन जीवराशिहैं ॥ १०६ ॥

कुंभसिंहालिवृषभा ब्रुवते मूलराशयः ॥
धनुर्मीननृयुक्कन्या राशयो जीवसंज्ञकाः ॥ १०७ ॥

चर धातु । स्थिर मूल । द्विस्वभाव जीवहैं । मंगल, चंद्र, शनि, राहु धातुहैं । सूर्य, शुक्र मूलहैं । बुध, गुरु जीवहैं ॥ १०७ ॥

कुजेंदुसौरिभुजगा धातवः परिकीर्तिताः ॥
मूलं भृगुदिनाधीशौ जीवौ धिषणसोमजौ ॥१०८॥

"अर्कोन लग्न इति" स्पष्ट लग्नमेंसे स्पष्ट सूर्य घटावे जो शेष रहे उनके अंश करना इनको दोजगह रखना एक जगहमें १५० डेडसौका भाग देना जो कुछ शेष रहे उसको दूसरी जगहके स्थित अंशमेंसे घटादेना और जो बाकी रहे उसमें तीनका भाग देना और शेषमें वार जोड़ देनां और सातका भाग देना जो कुछ शेष रहे उनको रविवारसे गिनना वही कालहोरा है यह ज्ञानप्रदीपका मतहै ग्रंथान्तरोंमें दूसरे प्रकारसे कालहोरा जानना लिखाहै ॥ १०८ ॥

घटी	लग्न	दिशा
२॥	१	पूर्व.
५	२	
७॥	३	
१०	४	आग्नेय.
१२॥	५	
१५	६	
१७॥	७	दक्षिण.
२०	८	
२२॥	९	
२५	१०	नैर्ऋत्य.
२७॥	११	
३०	१२	
३२॥	१	पश्चिम.
३५	२	
३७॥	३	
४०	४	वायव्य.
४२॥	५	
४५	६	
४७॥	७	उत्तर.
५०	८	
५२॥	९	
५५	१०	ईशान.
५७॥	११	
६०	१२	

स्वक्षेत्रे भानुवच्चंद्रो धातुरन्यत्र पूर्ववत्।
स्वक्षेत्रेभानुजोवल्लीस्वक्षेत्रेधातुरिंदुजः॥

चंद्र अपने घरका याने कर्कमें होवे तो सूर्यके समान फल देताहै. इसका अर्थ यहहै कि, कर्कके चंद्रसे मूल जानना और राशिका चंद्र होवे तो धातु जानो. ऐसेही मकर कुंभका शनि वेलरी बताताहै. मिथुन कन्याका बुध धातु बताताहै ॥ १०९ ॥

ताम्रं भौमस्त्रपुर्ज्ञश्च कांचनं धिषणो भवेत् ॥
रौप्यं शुक्रःशशी कांस्यमायसं मंदभोगिनौ ११०॥

मंगल तामा, बुध राँग, गुरु सुवर्ण, शुक्र चाँदी, चंद्र काँसा, शनि राहु लोहा ॥ ११० ॥

भौमार्कमंदशुक्रास्तु स्वस्वलोहाः स्वभस्थिताः ॥
चंद्रज्ञगुरवःस्वस्वलोहाः स्वक्षेत्रमित्रगाः ॥१११॥

मंगल, सूर्य, शनि, शुक्र ये ग्रह अपने अपने घरके होवें तो अपनी अपनी धातुनको बतातेहैं. चंद्र, बुध, गुरु ये अपने घरके या मित्रके घरके होवें तो अपनी धातू बतातेहैं ॥ १११ ॥

मिश्रे मिश्रफलं ब्रूयाद्ग्रहाणां च बलं क्रमात् ॥
शिलां भानोर्बुधस्याहुर्मृत्पात्रं त्वपरं विधोः ११२॥

भौमार्क मंद शुक्र मित्रके घरमें होवें तो मिली धातु बतातेहैं. चंद्र, बुध, गुरु, शत्रुके घर होवें तो मिलीधातु सूर्यकी शिला चंद्र बुध मट्टीका बरतन ॥ ११२ ॥

सितस्य मुक्तास्फटिके प्रवालं भूसुतस्य च ॥
आयसं भानुपुत्रस्य मंत्रिणश्च मनःशिलाम्॥११३॥

शुक्रके मोती स्फटिक, मंगलका मूंगा, शनिका लोह, गुरुकी मैनशिल ॥ ११३ ॥

स्वोच्चादिकेधाम्यधातौ तया धाम्यं तु नीचगे ॥
घटिताघटितं ब्रूयाच्छास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ॥ ११४॥

उच्चका ग्रह हो तो धाम्य तथा घटित धातु कहै और नीचका ग्रह हो तो अधाम्य तथा अघटित धातु कहै यह "ज्ञानप्रदीपका" मतहै ॥ ११४ ॥

नीलं शनेश्च वैडूर्यं भृगोर्मरकतंविदः ॥
सूर्यकांतं दिनेशस्य चंद्रकांतं निशापतेः ॥११५॥

शनिका नीलम्, शुक्रका लसुनियाँ, बुधका पन्ना, सूर्यका सूर्यकांत याने आतिशीशीशा, चंद्रका चंद्रकांत ॥ ११५ ॥

तत्तद्ग्रहवशाद्वर्णं तत्तद्राशिवशादपि ॥
बलाबलविभागेन मिश्रे मिश्रफलं वदेत् ॥११६ ॥

अब रंगग्रहसे और राशिसे कहो. बलके अनुसार कहो अथवा मिलाहुआ रंग कहो ॥ ११६ ॥

नृराशौ नृखगैर्दृष्टे युक्ते वा मर्त्यभूषणम् ॥
तत्तद्राशिवशादन्यत्तत्तद्रूपं विचिंतयेत् ॥ ११७ ॥

इति ज्ञान धातुकांडं द्वितीयम् ॥ २ ॥

धातु तो समझनेमें आया परंतु कौनका भूषणहै इस ज्ञानके वास्ते वर्णन करतेहैं ॥ आदमीके राशिमें आदमी ग्रह देखे वा उस घरमें बैठनेवाला ग्रह मनुष्य होवे तो मनुष्यका गहना कहे. राशिके रूपसे कहे और सब विचार इसी तरह करना ११७ ॥

इति ज्ञान० धातु० ॥

मूलचिंताविधौ मूलान्युच्यंते पूर्वशास्त्रतः ॥
क्षुद्रसस्यानि भौमस्य सस्यानि बुधऽजीवयोः ॥

अब मूलप्रकरणम् मंगलके छोटे नाज, बुध, गुरु, दोनोंका नाज ॥ ११८ ॥

कक्षाणि ज्ञस्य भानोश्च वृक्षाश्चंद्रस्य वल्लरी ॥
गुरोरिक्षुर्भृगोश्चिंचाभूरुहाः परिकीर्तिताः ॥ ११९॥

बुधका घास, सूर्यके झाड, चंद्रकी वल्लरी, गुरुका साँटा, शुक्रकी इमली और नक्शेमें सफा लिखाहै ॥ ११९ ॥

शनिभौमोरगाणां च तिक्तकंटकभूरुहाः ॥
अजाली क्षुद्रसस्यानि वृषकर्कतुला लताः ॥१२०॥

शनि, मंगल, राहु तीनोंके काँटेके वृक्ष और कडेसवादकेहैं, मेष वृश्चिक छोटे नाज, वृष, कर्क, तुला इनोंकी वल्लरी ॥ १२०॥

कन्यकामिथुने वृक्षाः कंटकद्रुर्घटो मृगः ॥
इक्षुर्मीनः क्रमाश्चैव केचिदाहुर्मनीषिणः ॥१२१॥

मिथुन, कन्या, वृक्ष, कुंभ,मकर कांटेके झाड, मीन, साँटा१२१

अकंटकद्रुमाः सौम्याः क्रूराः कंटकभूरुहाः ॥
युग्मकंटक आदित्यो भूमिजो ह्रस्वकंटकः १२२॥

अब फिर ग्रहोंके वर्णन करतेहैं. सौम्यग्रहोंके याने चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र इनोंके झाड विना काँटेकेहैं ॥ १२२ ॥

वक्रौ सकंटकौ प्रोक्तौ शनैश्चरभुजंगमौ ॥
पापग्रहाणां क्षेत्राणि तथा कंटकिनो द्रुमाः॥१२३॥

क्रूर ग्रह मंगल, सूर्य, शनि इनोंके काँटेके झाडहैं, सूर्यके वृक्ष दोकंटकके, मंगल छोटे कंटकका वृक्ष, शनि राहु दोनोंके टेढे काँटेके वृक्ष, पापग्रहोंकी राशिनकेभी काँटेके वृक्षहैं॥१२३॥

श्लिष्टकक्षाणि सौम्यस्य भृगोर्निष्कंटकद्रुमाः ॥
कदली चौषधीशस्य गिरिवृक्षा विवस्वतः ॥१२४॥

बुधके सघन घास। शुक्रके बिना काँटेके वृक्ष जानो चंद्रमाका वृक्ष केला सूर्यके वृक्ष पहाड़के ॥ १२४ ॥

बृहत्पत्रयुता वृक्षा नारिकेलादयो गुरोः ॥
तालः शनिभुजंगानां सारासारौ तरोर्वहेत् ॥१२५॥

बडे पत्तोंके नारियर आदि गुरुके वृक्षहैं तालवृक्ष शनि राहुके ॥ १२५ ॥

सारहीनाः शनींद्वर्का अंतःसारौ कवीज्यकौ ॥
बहिःसाराःस्वराशिस्थाःशनीज्यकुजपन्नगाः १२६

शनि चंद्र सूर्य इनोंके सारहीन जैसे अंड. गुरु शुक्र दोनोंके अंतःसार साग आदि शनि, गुरु, मंगल, राहु, अपने राशिके होवें तो बहिःसार वृक्ष जैसे बाँस ॥ १२६ ॥

अंतःसाराः स्वराशिस्था बहिःसारादस्तदन्यके ॥
त्वक्कंदपुष्पच्छदनफलपक्कफलानि च ॥ १२७ ॥

अपने घरका होवे तो अंतःसार जानो अपने घरके न होवे तो बहिःसार जानो अब सूर्यादिग्रहोंके त्वक् आदि कहतेहैं त्वक् बकला याने छाल सूर्यकी, कंद चंद्रका, फूल मंगलका और बुधका पत्ता, गुरुका फल, शनिका पक्काफल ॥ १२७ ॥

मूलं लता च सूर्याद्याः स्वस्वक्षेत्रेषु ते तथा ॥
मुद्गोज्ञस्याढकी श्वेताभृगोश्च चणकंकुजः॥१२८॥

शुक्रकी जड़, राहुकी लता, यह स्वक्षेत्री ग्रहसे बताना और बुधका मूँग शुक्रकी सफेद तोर मंगलका चना चंद्रके तिल रविका निष्पाव है निष्पाव वालोरकी किसमका एक धान्यहै जिसे हिन्दीमें भटवासु महाराष्ट्रीमें पावटे और गुजरातीमें वाल कहतेहैं ॥१२८॥

तिलःशशांको निष्पावा रविर्जीवोरुणाढकी ॥
माष्यं शनिभुजंगौ च तथान्यं धान्यमुच्यते १२९

गुरुकी लाल तूवर, शनि राहु दोनोंका उडदका अन्न । ऐसाही औरभी नाज कहतेहैं ॥ १२९ ॥

प्रियंगुर्भूमिपुत्रस्य बुधस्य व्रीहयः स्मृताः ॥
स्वस्वरूपानुरूपेण तेषां धान्यानि निर्दिशेत् १३०

मंगलका प्रियंगु इसे गुजराती कॉंगनी कहतेहैं दाक्षिणी राळे कहतेहैं, बुधके चावल, औरभी ग्रहोंके रूपसे नाज कहना ॥ १३० ॥

उन्नते भानुकुजयोर्वल्मीके बुधभोगिनोः ॥
सलिले चंद्रसितयोर्गुरोः शैलतले तथा ॥ १३१ ॥

अब ग्रहोंकी जगह वर्णन करतेहैं । सूर्य मंगल दोनोंका ऊंचा स्थानहै, बुध, राहु, इन दोनोंका स्थान बँबई चंद्र, शुक्र, जलमें गुरु पहाड़के तले ॥ १३१ ॥

शनेः कृष्णशिलास्थाने मूलान्येतानि भूमिषु ॥
वर्णं रसं कुलं रत्नमायुधं चोक्तमूलिकाः ॥ १३२ ॥

शनिकी काली सिला पृथीवीमें ये मूल हैं इसप्रकारसे मूल जानकर कहै ॥ १३२ ॥

पत्रं फलं पक्कफलं त्वङ्मूलं पूर्वभाषितम् ॥
ग्रहोक्तमूलिकां ज्ञात्वा कथयेदुदयादिभिः ॥१३३॥

॥ इति ज्ञा०मूलकांडस्तृतीयः ॥ ३ ॥

यहाँतक मूलपदार्थोंका वर्णन रस इत्यादि तथा पत्र फल पका फल छाल मूल कहेगये सो लग्न देखकर फल कहो ॥ १३३ ॥

इति श्रीपवाँर वंशावतंस महाराजशंभूसिंह सुठालियाधीशकृतायां सुबोधिनीभाषाटीकायां ज्ञानप्रदीपग्रंथे मूलकांडं समाप्तम्

चंद्रो माता पितादित्यः सर्वेषां जगतामपि ॥
गुरुशुक्रारविन्मंदाः पंचभूतस्वरूपिणः ॥ १३४ ॥

चंद्र माता, सूर्य पिता, गुरु आकाश है, शुक्र वायु, मंगल तेज बुध जल, शनि भूमि ॥ १३४ ॥

श्रोत्रत्वङ्नेत्ररसनाघ्राणाः पंचेंद्रियाणि च ॥
शब्दस्पर्शौ रूपरसौ गंधश्च विषया अमी ॥१३५॥

गुरु कानहै । शुक्र चमडा, मंगल आँखें, बुध जीभ शनि नाकहै, गुरु, शब्दहै, शुक्र स्पर्श, मंगल रूप, बुध रस, शनि गंधहै ॥ १३५ ॥

ज्ञानं गुर्वादिपंचानां ग्रहाणां कथयेत्क्रमात् ॥
गुरोःपंचगुरोश्चाब्धिर्ज्ञस्यद्विस्त्रिःकुजस्यच॥१३६॥

इसप्रकारसे ग्रह पंचभूतरूपीहै अब ज्ञान कहतेहैं गुरुका ५ शुक्र ४ बुध २ मंगल ३ शनि १ ॥ १३६ ॥

एकज्ञानं शनेरुक्तं शास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ॥
बुधवर्गा इमे प्रोक्ताः शंखः शुक्तिर्वराटकाः॥१३७॥

अब बुधवर्गमें शंख सीपी कौड़ी ये बुधकेहैं ॥ १३७ ॥

मत्कुणाः शिथिलीयूकामक्षिकाश्च पिपीलिकाः ॥
भौमवर्गा इमे प्रोक्ताः षट्पदाये भृगोस्तथा॥१३८॥

खटकिरवा, लीखें, जूवें, मक्खी, चींटी ये मंगलकेहैं । शुक्रके छपाँव वाले ॥ १३८ ॥

देवा मनुष्याः पशवो भुजगा विहगा गुरोः ॥
तथैकज्ञानिनो वृक्षाःशनिवर्गाः प्रकीर्तिताः॥१३९॥

गुरुके देवता आदमी, पखेरू साँप आदि पेटसे चलनेवाले शनिके वृक्ष ॥ १३९ ॥

एकद्वित्रिचतुः पंचगगनादिगुणाः स्मृताः ॥
देहो जीवः सितो जिह्वाबुधो नासेक्षणे कुजः१४०॥

आकाशका शब्दगुण एकहै । वायुके शब्द स्पर्श दो गुणहैं । तेजके शब्द, स्पर्श, रूप, तीन गुणहैं पानीके शब्द, स्पर्श, रूप, रस चार गुणहैं भूमिके शब्द, स्पर्श, रूप, गंध पाँच गुणहैं गुरु देहहै शुक्र जीभहै बुध नाकहै मंगल नेत्रहै शनि कानहै ॥ ४० ॥

श्रोत्रं शनैश्चरश्चैव ग्रहावयवमीरितम् ॥
द्विपाच्चतुष्पाद्बहुपाद्विहगा जानुगाः क्रमात् १४१॥
गुरुके दोपाँवके आदमीहैं शुक्रके चार पादके जानवरहैं बुधके बहुत पादके मंगलके पक्षि शनिके घूंटेसेचलनेवाले ॥ १४१ ॥

शंखशंबूकसंघाश्च पादहीनान्विनिर्दिशेत् ॥
यूकामत्कुणमुख्याश्च बहुपादा उदाहृताः ॥
गोधाकमठमुख्यास्तुतथाचंक्रमणोचिताः १४२॥
इति ज्ञान०भूतकांडश्चतुर्थः ॥ ४ ॥
शंखके सीपीके आदिजानवर आदि विनापाँवँकेहैं जूवाँ खटाकिरवा आदि बहुतपादकेहैं गोह, कछुआ आदिचलने वालेहैं ॥ १४२॥

इति ज्ञान०भूत० ॥ ४ ॥

मृगमीनौ तु खचरौ तत्रस्थौ मंदभूमिजौ ॥
वनकुक्कुटकाकौ च चिंतिताविति कीर्तयेत् ॥
तद्राशिस्थे सितेहंसः शुक्रःसौम्ये विधौ शिखी१४३
मकर, मीन, पखेरूहैं, उनोंमें शनि भूमिज होवे तो वनके मुरगा और कौवा इनोंका मनमें चिंतन करा हुवा जानो मकर, मीनमें शुक्र होवे तो हंस बुध होवे तो सूवा । चंद्र होवे तो मोर जानो ॥ १४३ ॥

वीक्षिते च तथा ब्रूयाद्ग्रहे राशौ विचक्षणः ॥
तद्राशिस्थे रवौ तेन दृष्टे ब्रूयात्खगेश्वरम् ॥१४४॥
पूर्वोक्त राशियोंमें ग्रह होनेसे फल कहा वह उन्होंके देखनेसेभी होताहै मकर मीनमें रवि होवे अथवा सूर्यकी दृष्टि होवे तो गरुड जानो ॥ १४४ ॥

बृहस्पतौ सितबको भरद्वाजस्तु भोगिनि ॥
कुक्कुटो ज्ञस्य शुक्रस्य दिवांधः परिकीर्तितः॥१४५॥

गुरु होवे तो सफेत बगला, राहु होवे तो भरद्वाज, जिसे रूपारेल कहतेहैं बुधका मुरगा शुक्रका घूघू जानों ॥ १४५ ॥

अन्यराशिस्थिते खेटे तत्तद्राशिस्थलं वदेत् ॥
सौम्ये खेटेद्विजाःसौम्याःक्रूराःक्रूरगृहेस्थिताः१४६

और राशियेंमें ग्रह होवे तो उन राशि योंका फल कहै सौम्य ग्रह चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, होवे तो सौम्य पक्षि कहै क्रूरग्रह होवे तो क्रूर पखेरू कहै ॥ १४६ ॥

उच्चराश्युदये सूर्ये दृष्टे भूपस्तदाश्रितः ॥
उच्चस्थानेक्षिते राजा नेता स्वक्षेत्रगे स्थिते ॥
राजाश्रितास्तु मित्रस्थवीक्षिते समगेभटाः॥१४७॥

नृराशिका उदय होवे और सूर्य उच्चका उस राशिको देखे तो राजाका चिंतन कहना । सिंहको सूर्य देखे तो प्रधान कहना मित्रस्थानमें स्थित सूर्य देखे तो राजाश्रित समस्थानमें स्थित सूर्य देखे तो भट सिपाही कहना ॥ १४७ ॥

अन्यराशिषु युक्तेषु दृष्टे वा संकरान्वदेत् ॥१४८ ॥

और राशियुक्त अथवा दृष्ट होवे तो संकर कहना याने मिश्र फल कहै ॥ १४८ ॥

कांस्यकारः कुलालश्च कांस्यविक्रयिणस्तथा ॥
शंखच्छेदी धातुचूर्णान्वेषिणः स्वर्णऽकारिणः १४९

काँसा करनेवाला, कुम्हार, काँसा बेचनेवाला, चूडीवाला, धूर धोवा, सुनार ये सब संकरहैं ॥ १४९ ॥

नृराशौ जीवदृष्टे वा भानुवद्राह्मणादयः ॥
बुधयुक्तेऽथवा दृष्टे तद्वद्ब्रूयात्तपस्विनः ॥ १५० ॥

मनुष्यराशिको गुरु उच्चको देखे तो अच्छा ब्राह्मण कहना जैसे सूर्यका जैसा फल कहा हैं वैसाही जानो बुधका तपस्वी जानो॥

तद्वच्छुक्रे तु वृषलाः संकराः शशिभोगिनौ ॥
किंचिदत्र विशेषोस्ति मीने भास्करकिंकराः १५१

शुक्र होवे तो शूद्र चंद्र राहु होवे तो संकर जातिहै यहाँ थोड़ा विशेषहै वह ऐसा कि, मीनके सूर्य होवे तो नौकर कहो ॥ १५१ ॥

चंद्रस्य भिषजो ज्ञस्य वैश्याश्चोरगणाःस्मृताः ॥
राहोर्गरदचांडालास्तस्कराः परिकीर्तिताः॥१५२ ॥

चंद्रके वेद बुधके बनियाँ और चोर राहुके चंडाल विष देनेवाले ॥

शनेस्तरुच्छिदः प्रोक्ता राहोर्धीवरमालिनः ॥
शंखच्छेदी नटः कारुर्नर्तकाः शिल्पिनस्तथा १५३

और चोर जानो शनीके पेडकाटनेवाले राहुके ढीमरमाली, चूडावाला नट, नाचनेवाले कारीगर (कारु) इसका अर्थ बढई कपडा विननेवाला नाई धोबी चमार ये सब राहुकेहैं ये सब कारु हैं॥

चूर्णकृन्मौक्तिकग्राही शुक्रस्य परिकीर्तितः ॥
तत्तद्राशिवशाज्जातिस्तत्तद्राशिस्थितैर्ग्रहैः॥१५४॥

चूना पाडनेवाले, मोती समुद्रमें से निकालनेवाले ये शुक्रकेहैं १५४

तत्तद्राशिस्थखेटानां बलतो नष्टनिर्गमः ॥
इति ज्ञान० मनुष्य० ॥ ५ ॥

उस राशिमें स्थित ग्रहों से जाति कहना और उन्होंके बलसे खोईवस्तुका निकलना विचारना ॥

इति ज्ञान०मनुष्यकांडः॥ ६ ॥

मेषराशिस्थिते भौमे मेषमाहुर्मनीषिणः ॥ १५५ ॥
अब राशि और ग्रहोंसे जीव चिंता कहतेहैं मेष राशिका मंगल होवे तो मेढ़ा जानो ॥ १५५ ॥

तस्मिन्नर्के स्थिते व्याघ्रं गोलांगूलं बुधे स्थिते ॥
शुक्रे गौर्वृषभश्चंद्रे गुरावश्वस्ततः परम् ॥ १५६ ॥
मेषका सूर्य होवे तो व्याघ्र याने सिंह बुध होवे तो लंगूर शुक्र होवे तो गाय, चंद्र होवे तो बैल गुरुसे घोड़ा ॥ १५६ ॥

महिषः सूर्यतनये राहौ गवय उच्यते ॥
वृषभस्थे भृगौ धेनुः कुजे मृग उदाहृतः॥ ५१७॥
शनिसे भैंसा राहुसे गवय याने रोज वृषभका शुक्र होंवे तो गाय कहना मंगल मृग (हिरण) कहना॥ १५७ ॥

बुधे कपिर्गुरावश्वं शशांके धेनुरुच्यते ॥
आदित्ये शरभः प्रोक्तो महिषी शनिसर्पयोः १५८
और बुध होवे तो बंदर गुरु होवे तो घोड़ा,चंद्रकी गाय सूर्यका शरभ[१] जानवर शनि राहु होवे तो भैंसे जानो ॥ १५८ ॥

कर्कस्थे च खरो भौमे महिषी नक्रगे कुजे ॥
वृषभस्थे हरिर्युग्मकन्ययोः श्वा च फेरवः॥१५९॥
कर्कका मंगल होवे तो गधा कहना मकरका मंगल भैंस बतावेहैं वृषभका होवे तो सिंह मिथुन कन्याका होवे तो कुत्ता श्याल ॥ १५९ ॥

हरिस्थे भूमिजे व्याघ्रो रवींद्वोस्तत्र केसरी ॥
शुक्रे श्वा वानरःसौम्ये त्वन्यैःश्वाकृतयो मृगाः१६०

---

१ शरभ एक जानवरहै जो आठ पाँववाला व सिंहका घाती होताहै यह जानवर अबकहीं नजर नहीं आता ।

सिंहका मंगल होवे तो नाहार, सूर्य चंद्र होवे तो सिंह, शुक्र होवे तो कुत्ता, सिंहका बुध होवे तो बानर और बुद्धिसे जानो ॥ १६० ॥

तुलागते भृगौ वत्सश्चंद्रे गावः प्रकीर्तिताः ॥
धनुःस्थितेषु जीवेंदुकुजेषु तुरगो भवेत् ॥ १६१ ॥

तुलालग्नमें शुक्र होवे तो बच्छा याने (बछड़ा) चंद्र होवे तो गाय, धनलग्नमें मंगल, चंद्र, गुरु तीनों होवे तो घोड़ा ॥ १६१ ॥

सपुत्रेर्के स्थिते कुंभे मत्तो गज उदाहृतः ॥
सर्पे च तत्र महिषो वानरो बुधजीवयोः ॥ १६२ ॥

कुंभमें सूर्य शनि होवे तो मस्त हाथी राहु होवे तो पाड़ा, बुध गुरु होवे तो बानर ॥ १६२ ॥

शुक्रामृतांशुसूर्येषु स्थितेषु पशुरुच्यते ॥
जीवसूर्येक्षिते गर्भो वंध्या रविजवीक्षिते ॥ १६३ ॥

मकरमें सूर्य चंद्र शुक्र ये होवे तो जानवर चारपादका जानो उसको याने मकरको गुरु सूर्य देखे तो गर्भ कहना, शनि देखे तो बाँझ कहना ॥ १६३ ॥

अंगारके क्षिते शुष्कमिति ज्ञात्वा वदेत्सुधीः ॥
वक्ष्येहं चिंतनां सूक्ष्मां जनैस्तु परिचिंतिताम् १६४

मंगल देखे तो शुष्कगर्भ कहना अब औरभी लोगोंने वस्तु मनमें ली होवे उसको बतानेका हाल बतातेहैं ॥ १६४ ॥

धिषणे कुंभराशिस्थे त्रिकोणे वा स पश्यति ॥
स्मृतो गजस्ततो मीनधनुषी वीक्षिते शुभैः ॥१६५॥

कुंभराशिमें गुरु होवे या कुंभराशिको गुरु नवम पंचम दृष्टिसे देखे तो हाथी दिलमें लियाहै । धन मीनको शुभ ग्रह देखे तो बंदरका चिंतन कराहै ॥ १६६ ॥

स्मृतः कपिर्मेषगते शनौ ब्रूयान्मतंगजम् ॥
कुजे मेषगते छागो बुधे नर्तकगायकौ ॥ १६६ ॥

शनि मेषराशिका होवे तो मस्त हाथी । मेषमें मंगल होवे तो बकरा, मेषमें बुध होवे तो गानेवाले नाचनेवाले ॥ १६६ ॥

गुरुशुक्रदिनेशेषु वणिजं वस्त्रजीविनम् ॥
चंद्रे तथा वदेन्मंदे सिंहस्थे रिपुचिंतनम् ॥ १६७ ॥

और गुरु शुक्र सूर्य होवे तो कपड़ा वेचनेवाला बनियाँ कहना चंद्र होवे तबभी बनियाँ कहे सिंहका शनि होवे तो शत्रुका चिंतनहै ॥ १६७ ॥

वृषस्थे महिषी तौलौचक्रिणं वृश्चिके गदम् ॥
मेषगे सूर्यतनये मृत्युक्लेशादयस्तथा ॥
मित्रादिपंचवर्गं च ज्ञात्वा ब्रूयात्पुरोक्तितः ॥ १६८ ॥

इति ज्ञान० चिंताकांडः षष्ठः ॥ ६ ॥

वृषका शनि होवे तो भैंस । तुलाका होवे तो चक्रवर्ती राजा वृश्चिकका होवे तो रोग जानो । मेषका शनि होवे तो मृत्यु तकलीफ आदिकी चिंतना कहना मित्रग्रह शत्रुग्रह आदिको देखके कहे ॥ १६८ ॥

इति ज्ञानप्रदीपभाषाटीकायां चिंताकांडःषष्ठः ॥ ६ ॥

धातुराशौ धातुखगैर्दृष्टे तच्छत्रसंयुते ॥ १६९ ॥

धातुकी १-४-७-१० राशि धातु ग्रहों चं-मं-श-रा-से दृष्ट होवे और धातुछत्रसे युक्त होवे तो ॥ १६९ ॥

धातुचिंता भवेत्तद्वन्मूलजीवौ तथा वदेत् ॥
धातुभस्थे मूलखेटे जीवमाहुर्विपश्चितः ॥ १७० ॥

धातुकी चिंता कहना ऐसेही मूलजिव जानो जैसे मूलराशि

मूलग्रहोंसे युक्त अथवा दृष्ट होवे तथा उसीके छत्रसे युक्त होवे तो मूल चिंता इसीप्रकार जीव चिंताभी जाननी चाहिये अब राशि और ग्रह अलग होवे उसका वर्णन करतेहैं धातु राशि होवे उसमें मूलग्रह होवे अथवा दृष्ट होवे तो जीव कहना उचितहै ॥ १७० ॥

जीवराशौ मूलखगैर्दृष्टे वा युजि मूलकाः ॥
मूलराशौ जीवखगैर्धातुचिंता प्रकीर्तिता ॥ १७१ ॥

जीव तो राशि होवे और धातु ग्रहोंकी दृष्टि होवे या योग होवे तो मूलकहै मूल तो राशि होवे और जीव ग्रहोंसे दृष्ट होवे तो धातु चिंताहै ॥ १७१ ॥

त्रिवर्गखेटकैर्दृष्टे युक्ते बलवशाद्वदेत् ॥
पश्यंति चंद्रं चेदन्ये वदेत्तत्तद्ग्रहाकृतिम् ॥ १७२ ॥

धातु मूल जीव सब ग्रहोंसे दृष्ट होवे तो बलवान् ग्रहसे फल कहिये जो चंद्रको ग्रह देखे तो जैसा ग्रह होवे वैसाही आकार कहै ॥ १७२ ॥

धातुंमूलं च जीवं च वंशं वर्णं स्मृतं वदेत् ॥
उदयारूढयोश्छत्रे ग्रहयोगेक्षणात्तथा ॥ १७३ ॥

धातु मूल जीव वंशवर्ण इनोंका चिंतन कहना लग्न आरूढ-छत्र ग्रहका योग ग्रहकी दृष्टिसे सब फलित कहना ॥ १७३ ॥

ज्ञात्वा नष्टं च मुष्टिं च चिंतनां क्रमशो वदेत् ॥
कंटकादिचतुष्के तु स्वोच्चमित्रग्रहैर्युते ॥ १७४ ॥

नष्टप्रश्न मुष्टिप्रश्न चिंतनप्रश्न विचारके कहना । केंद्र उच्चस्थ-ग्रहोंसे मित्रग्रहोंसे युक्त या दृष्टहोय तो ॥ १७४ ॥

दृष्टे वा सर्वकार्याणां सिद्धिंब्रूयाच्चचिंतिताम् ॥

उदयेधातुचिंतास्यादारूढे मूलचिंतनम् ॥ १७५ ॥

सब कामकी सिद्धि कहना । उदयसे धातु चिंताहै । आरूढमें मूलचिंताहै ॥ १७५ ॥

छत्रेषु जीवचिंतास्यादिति कैश्चिदुदाहृतम् ॥
केंद्रं पणफर प्रोक्तमापोक्लिमं क्रमात्रयम् ॥
चिंतनामुष्टिनष्टानि कथयेत्कार्यसिद्धये ॥ १७६ ॥

इति ज्ञान० धातुमूलजीवकाण्डः सप्तमः ॥ ७ ॥

'छत्रलग्नात् जीवचिंतसम्' छत्रलग्नसे जीवचिंता करना ऐसा कोई ऋषिका मतहै केंद्रपणफर आपोक्लिम इसक्रमसे लग्नसे बारहस्थान गिने । केंद्रसे चिंतना पणफरसे मुष्टि आपोक्लिमसे नष्टके सिद्धि-केवास्ते विचारे ॥ १७६ ॥

इति ज्ञान० धात्वादि० ॥ ७ ॥

तत आरूढगे चंद्रे न नष्टं रुद्धशाश्वती ॥ १७७ ॥

आरूढमें चंद्र होवे तो वस्तु नष्ट नहीं हुई परंतु सदाकेलिये रुकगई है किसी ग्रंथांतरमें रुद्धकीजगह रुकलिखाहै । जिसका यह अर्थ है कि, सदा रोगी रहै ॥ १७७ ॥

आरूढाद्दशमे वृद्धिश्चतुर्थे पूर्ववद्वदेत् ॥
नष्टद्रव्यस्य लाभश्च सर्वहानिश्च सप्तमे ॥ १७८ ॥

आरूढसे दशम चंद्र होवे तो वृद्धि होवे तथा चतुर्थ सेभी पूर्ववत् फल कहै यदि सप्तम चंद्र होवे सब कामका नाश होवेहै ॥ १७८ ॥

उदयाद्द्वादशे षष्ठेष्टम आरूढके सति ॥
चिंतितार्थो न भवति धनहानिर्द्विषद्बलम् ॥ १७९ ॥

लग्नसे छठें आठवें बारहवें आरूढ लग्न होवे तो चिंतनकरा-काम सिद्ध नहीं होता और धनका नाश होताहै तथा वैरी बढतेहैं ॥ १७९ ॥

तनुं कुटुम्बं सहजं जननीं तनयं रिपुम् ॥
कलत्रं निधनं चैव गुरुं कर्मफलं व्ययम् ॥ १८० ॥

अब बारह स्थानोंके नाम कहतेहैं । तनु १ कुटुंब याने घरका आदमी २ भाई बहिन ३ माता ४ पुत्र ५ शत्रु ६ स्त्री ७ निधन ८ गुरु ९ कर्म १० फल ११ व्यय १२ ॥ १८० ॥

उदयादिक्रमाद्भावं तस्य तस्य फलं वदेत् ॥
रवींदुशुक्रजीवज्ञा नृराशिषु यदास्थिताः ॥ १८१ ॥

उदयसे याने लग्नसे बारहभावसे फल कहैं । सूर्य, चंद्र, गुरु, शुक्र, बुध, मनुष्यराशिमें होवे तो ॥ १८१ ॥

मर्त्यचिंता ततः सौरिदृष्टे नष्टं कुजे तथा ॥
कुजस्य कलहः सौरेस्तस्करं गरलं वदेत् ॥ १८२ ॥

आदमीकी चिंताहै मंगल शनि देखे तो उसका नाश होताहै मंगलसे तो लड़ाईकी चिंता शनिसे विष अथवा चोरकी चिंता कहना ॥ १८२ ॥

रविदृष्टे तथा युक्ते चिंतनादेव भूपयोः ॥
शुभचिंता गुरौ ज्ञेया विवाहो बुधशुक्रयोः ॥ १८३ ॥
इति ज्ञानप्रदीपे आरूढकांडमष्टमम् ॥ ८ ॥

रविसे युक्त अथवा दृष्ट होवे तो देवता या राजाका चिंतन कहै । गुरुसे युक्त अथवा दृष्ट होय तो शुक्र कामकी चिंता कहै । बुध शुक्र देखे वा युक्त होवे तो विवाहकी चिंता ॥ १८३ ॥

इति ज्ञान० आरूढ० ॥ ८ ॥

द्वितीये द्वादशे छत्रे सर्वं कार्यं विनश्यति ॥
गुरौ पश्यति युक्ते वा तत्र कार्यं शुभं वदेत् ॥ १८४ ॥

अवतक आरूढका प्रश्नवर्णन करा । अब छत्रसे प्रश्नका प्रकार

कहतेहैं । प्रश्न आरूढलग्नसे द्वितीय अथवा द्वादशस्थानमें छत्र होवे तो सबकामका नाश होताहै । गुरुदेखे अथवा गुरुसे युक्त छत्र होवे तो सबकाम शुभ कहना ॥ १८४ ॥

तृतीयैकादशे छत्रे सर्वं कार्यं शुभं वदेत् ॥
तस्मिन्पापयुते दृष्टे विषमं भवति ध्रुवम् ॥ १८५ ॥

छत्र तीसरा या ग्यारहवाँ होवे तो सबकाम शुभकहना । छत्रपे पापग्रहकी नजर होवे वा युतहो तो उलटो फल बतावनो ॥१८५॥

तस्मिन्सौम्ययुतेदृष्टे सर्वं कार्यं शुभं वदेत् ॥
मिश्रे मिश्रं फलं ब्रूयाच्छास्त्रे ज्ञानप्रदीपके ॥१८६॥

छत्रको शुभग्रह देखे वा बैठे तो शुभफल जानो । शुभकीभी नजर हो वा अशुभकीभी नजर हो तो ॥ मिलाहुआ फल जानो ॥ १८६ ॥

पञ्चमे नवमे छत्रे सर्वसिद्धिर्भविष्यति ॥
तद्वच्छुभाशुभैर्दृष्टे मिश्रे मिश्रफलं लभेत् १८७ ॥

पंचम नवम छत्र होवे तो सबकामका सिद्धिहै ॥ शुभदेखे तो काम होवे ॥ अशुभ देखे तो सिद्धि न होय मिश्र होवे तो मिला हुआ फल है ॥ १८७ ॥

द्वितीये चाष्टमे षष्ठे द्वादशे छत्रसंयुते ॥
नष्टद्रव्यागमो नास्ति न व्याधिशमनं भवेत् ॥
न कार्यसिद्धिर्न द्वेषशांतिर्गृवशाद्भवेत् ॥ १८८ ॥

इति ज्ञान० छत्रकांडं नवमम् ॥ ९ ॥

दूसरे आठवें छठें बारहें छत्र होवे तो खोयाहुआ धन मिले नहीं ॥ रोगप्रश्नमें रोग दूर नहीं होवे कामसिद्ध नहीं होवे और वैरकीशांति भी नहीं ॥ १८८ ॥

इति ज्ञान० ॥ ९ ॥

बृहस्पत्युदये श्रेयो धनं विजय आगमः ॥१८९॥
द्वेषशांतिः सर्वकार्यसिद्धिरेव न संशयः ॥

फक्त लग्नसे कहतेहैं ॥ धन मीनकाउदय होवे तो श्रेय धन और जय मिले द्वेषकी शान्ति और सब कार्योंकी सिद्धिहो इसमें संशय नहीं ॥ १८९ ॥

सौम्योदये रणोद्योगी जित्वातद्धनमाहरेत् १९०॥

वैरमिटे सबकाम सिद्धहोवे ॥ मिथुन कन्याका उदय होवे तो लडाईको जावे वे शत्रुको जीतके उसका धन लावे ॥ १९० ॥

पुनरेष्यति सिद्धिः स्याच्चंद्रसंदर्शने तथा ॥
व्यवहारश्चविजयश्छत्रेप्येवमुदाहृतम् ॥ १९१ ॥

कर्कका भी अच्छा फलहै ॥ प्रश्नमें छत्र आरूढराशिको अपना स्वामी देखे तो अच्छा फलहै ॥ १९१ ॥

चंद्रोदयेर्थलाभश्चोपायेनागमनं तथा ॥
चिंतितार्थस्य लाभश्च च्छत्रारूढस्थितेपि च१९२॥

लग्न आरूढ़छत्र तीनोंमें चंद्र होवे तो चिंतने करेहुवे कामकी सिद्धि होतीहै ॥ उपायसे धनका लाभ होवे ॥ १९२ ॥

शुक्रोदयेर्थसिद्धिस्यात्स्त्रीलाभो व्याधिमोचनम् ॥
जयो यांत्यरयःस्नेहं छत्रेप्येवमुदाहृतम् ॥१९३ ॥

लग्नमें शुक्र होवे तो अर्थकी सिद्धि स्त्रीकालाभ व्याधिका मोचन जय शत्रुसे मित्रता होवे ॥ ये फल छत्रकाभी कहै १९३॥

उदयारूढच्छत्रेषु शन्यर्कांगारका यदि ॥
अर्थनाशं मनस्तापं मरणं व्याधिमादिशेत् १९४॥

लग्नआरूढछत्र तीनोंमें शनि मंगल होवे तो अर्थ याने धन-का नाश मनको दुःख मरण रोग होना ॥ १९४ ॥

एतेषु फणियुक्तेषु बंधश्चोरभयं गरम् ॥

मरणं चैव दैवज्ञो न संदिग्धो वदेत्सुधीः ॥ १९५ ॥

इनोंमें राहु होवे तो कैद होवेहै ॥ चोरसे भय विषसे भय और मरणभी ज्योतिषी कहै इसमें बिलकुल संदेह नहीं करे ॥ १९५॥

निधनारिधनस्थेषु पापेष्वशुभमादिशेत् ॥
एषुस्थानेषु केंद्रेषु शुभाः स्युश्चेच्छुभंवदेत् १९६॥

दूसरे छठे आठवें स्थानों में पापग्रह होवे तो अशुभ कहना । दूसरे छठे आठवें और केंद्रोंमें शुभग्रह होवे तो शुभफल कहै १९६॥

तन्वादिभावाः पापैस्तु युक्ता दृष्टा विनश्यति ॥
शुभैर्युक्ताथ दृष्टाश्चेत्तत्तद्भावभिपोषणम् ॥ १९७॥

इति ज्ञान०उदयकांडं दशमम् ॥ १० ॥

तनुआदि भाव पापग्रहों से युक्त वा दृष्ट होवे तो उसभावका नाशहो । शुभग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होवे तो उन्होंकी वृद्धि होवेहै ॥ १९७ ॥

इति ज्ञान० भाषाटीकायांउदयकां डंदशमम् ॥ १० ॥

तुलोदये क्रियारूढे नष्टसिद्धिर्न संशयः ॥
विपरीतेन नष्टाप्तिर्वृषारूढेऽलिभोदये ॥ १९८ ॥

अब लग्न और आरूढ दोनोंसे प्रश्नका निर्णय कहतेहैं । तुलालग्न होवे और मेष आरूढ होवे तो नष्टवस्तुका लाभ होवे, मेषलग्न होवे तुला आरूढ होवे तो काम नहीं होवे वृष आरूढ वृश्चिकलग्न होवे तो नष्टवस्तुका लाभ होवे ॥ १९८ ॥

नष्टसिद्धिर्महालाभो विपरीते विपर्ययः ॥
चापारूढे नष्टसिद्धिर्भविता मिथुनोदये ॥१९९ ॥

वृषलग्नं वृश्चिक आरूढ होवे तो लाभ नहीं होवे । मिथुनलग्न धन आरूढ होवे तो लाभ होवे॥ १९९ ॥

विपरीते न सिद्धिः स्यात्कर्कारूढे मृगोदये ॥
सिद्धिश्च विपरीते तु न सिद्ध्यति न संशयः २००॥

विपरीत होवे तो सिद्धि नहीं । कर्कआरूढ मकरलग्न होवे तो लाभ । विपरीत होवे तो लाभ नहीं ॥ २०० ॥

सिंहोदये घटारूढे नष्टसिद्धिर्नसंशयः ॥
विपरीते न सिद्धिःस्याज्झषारूढे मनोदये॥२०१॥

सिंहलग्न कुंभआरूढ होवे तो लाभ । विपरीत होवे यानी उलटा होवे तो लाभ नहीं होवे । मीन तो आरूढ होवे और कन्या-लग्न होवे तो नष्टवस्तु मिले । विपरीत यानी मीन तो लग्न और कन्या आरूढ होवे तो नष्टवस्तु नहीं मिलेगी । स्वामि देखै इत्यादि पूर्वोक्त विचार तो करना चाहिये ॥ २०१ ॥

नष्टसिद्धिर्विपर्यासे दृष्टादृष्टे निरूपयेत् ॥
स्थिरोदये स्थिरारूढे स्थिरच्छत्रं भवेद्यदि २०२॥

स्थिरलग्न स्थिरआरूढ स्थिरछत्र होवे तो ॥ २०२ ॥

न मृतिर्न च नष्टं च न रोगशमनं तथा ॥
द्विदेहभोदयारूढे छत्रे नष्टं न सिध्यति ॥२०३॥

मरेभी नहीं कोईवस्तु जायभी नहीं । रोगभी दूर नहीं होवे । द्विस्वभाव आरूढ, लग्न, छत्र, होवे तो गईहुई रकम मिले नहीं ॥ २०३ ॥

न व्याधिशमनं शत्रोः संधिं विद्यान्न च स्थिराम् ॥
चरराश्युदयारूढच्छत्रेषु स्त्र्यादिसिद्धयः २०४॥

रोग दूर नहीं होवे । तथा शत्रुसे करीहुई सुलहभी बदल जातीहै । चरराशि लग्नआरूढ छत्र होवे तो स्त्रीआदिकी प्राप्ति होवेहै २०४

नष्टसिद्धिश्च भवति व्याधिशांतिश्च जायते ॥

सर्वागमनकार्याणि भवंत्येव न संशयः ॥ २०५ ॥

नष्टधनकी प्राप्ति और रोगभी दूर होताहै । सबकाम सिद्ध होतेहैं ॥ २०५ ॥

ग्रहस्थितिबलेनैव सर्वं ब्रूयाच्छुभाशुभम् ॥
चरोदयेस्थिताःसौम्याःसर्वकार्यार्थसाधकाः२०६॥

ग्रहकेबलसे याने शुभग्रहयुक्त अथवा ईक्षित होवे तो शुभ । अन्यथा अशुभ । कहना । लग्न चर होवे और उसमें शुभग्रह होवे तो सबकामको सिद्ध करतेहैं ॥ २०६ ॥

आरूढच्छत्रलग्नेषु क्रूरेष्वस्तं गतेषु च ॥
परेणापहृतं ब्रूयात्तत्सिध्यति शुभेषु च ॥ २०७ ॥

आरूढछत्र और लग्न इनोंमें क्रूरग्रह होवे अथवा अस्तंगत ग्रह होवे तो प्रश्नकरनेवालेकी वस्तु दूसरा हर लेगया ये कहना । जो शुभ ग्रह होवे तो वोकाम सिद्ध होताहै ॥ २०७ ॥

नवमे पंचमे स्ते च नष्टलाभः शुभोदये ॥
एषु पापेन नष्टाप्तिरुदयादित्रिकेषु च ॥ २०८ ॥

नवममें पंचममें सप्तममें शुभग्रह होवे तो गईवस्तु मिलेगी वैसेही लग्नआरूढ छत्रमें भी जानो । यदि पूर्वोक्तस्थानोंमें पापग्रह होवे तो चीज नहीं मिलेगी ॥ २०८ ॥

भ्रातृस्थानयुते पापे पंचमे वा शुभे स्थिते ॥
नष्टद्रव्याणि केनापि दीयंते स्वयमेव च ॥ २०९ ॥

भ्रातृस्थान याने तीसरेस्थानमें पापी होवे और पंचममें शुभग्रह होवे तो नष्टधन स्वयं कोई लादेवे ॥ २०९ ॥

प्रश्नकाले शुभे पापे धूमेन परिवेष्टिते ॥
नष्टे नष्टं न भवति तत्तदाशासु तिष्ठति ॥ २१० ॥

प्रश्नसमयमें शुभग्रह और पापग्रह धूमग्रहसे युक्तहो तो उस समय गया धन जावे नहीं जिसदिशाको गया उसी दिशामें रहेगा ॥ २१० ॥

पृष्ठोदये शशांकस्थे नष्टद्रव्यं न गच्छति ॥
तद्राशिः शनिदृष्टश्चेन्नष्टं व्योम्नि कुजे न तत् २११

पृष्ठोदय राशिमें चंद्र होवे तो वो धन जाय नहीं । उसराशिको शनि देखे तो वो धन आकाशमें है ऐसा कहना । मंगल देखे तो पूर्वोक्त योग नहीं कहना क्योंकि मंगलभूमि पुत्रहै अतएव वह आकाशका योग कारक नहीं होता ॥ २११ ॥

बृहस्पत्युदये स्वर्णं नष्टं नास्तीति निर्दिशेत् ॥
शुक्रे चतुर्थगे रौप्यं नष्टं न भवति ध्रुवम् ॥ २१२ ॥

गुरुलग्नमें होवे तो सुवर्ण नहीं गया ऐसा कहे । चौथा शुक्र होवे तो चाँदी नहीं गई ऐसा कहना ॥ २१२ ॥

अस्ते कुजे शनौ कृष्ण लोहं नष्टं न जायते ॥
बुधोदये त्रपु प्रायो नष्टं नास्ति चतुर्थगे ॥ २१३ ॥

सप्तमघरमें मंगलहो उसकेसाथ शनि होवे तो लोहा नहीं गया ऐसा कहना लग्नमें और चौथे बुध होवे तो शीशा नष्ट नहीं ऐसा जानो ॥ २१३ ॥

कांस्यं नष्टं न भवति पंकनाभौ च सप्तमे ॥
आरकूटं पंचमस्थे भानौ नष्टं न जायते ॥ २१४ ॥

सप्तम चंद्र होवे तो काँसा नष्ट नहीं हो या पंचमसूर्य से पीतल नष्ट नहीं ॥ २१४ ॥

दशमे पापसंयुक्ते न नष्टाश्चचतुष्पदाः ॥
चतुष्पदोदयेराहौस्थिते नष्टाश्चतुष्पदः ॥ २१५ ॥

दशमस्थानमें पापग्रह होवे तो चारपाँवके जानवर नष्ट नहीं ऐसा कहना । चतुष्पाद राशि लग्नमें होवे और उसमें राहु होवे तो जानना चाहिये कि, जानवर चारपाँवके अवश्य नष्ट भये॥ २१५॥

बंधनस्थाभवेयुस्ते तद्वद्विपदराशयः ॥
बहुपादुदये राहौ बहुपान्नष्टमादिशेत् ॥ २१६ ॥

यदि लग्नमें द्विपदराशि होवे राहुयुक्त होवे तो बंधनमें जानो । बहुपादलग्नमें राहु होवे, तो बहुपाद नष्ट कहै ॥ २१६ ॥

पक्षिराशौ यदा नष्टमेतेषां बंधनं भवेत् ॥
कर्कवृश्चिकयोर्लग्ने नष्टं सद्मनिकीर्तयेत् ॥ २१७ ॥

पक्षिराशिमें नष्ट होवे तो उन्होंका बंधन होताहै । कर्क वृश्चिक लग्न होवे तो घरमें रकम खोई है घरमें है ॥ २१७ ॥

मृगमीनोदये नष्टं कपोतान्तरयोर्वदेत् ॥
कलशे भूमिजः सौम्यो घटेरक्त घटे गुरुः ॥२१८॥

मीन मकर लग्नमें नष्ट होवे तो कबूतरोंके बीचमें खोईहुई चीजहै । मंगललग्नमें होवे तो घड़ामें जानो । बुध होवे तो भी घड़ामें गुरु होवे तो लालघडामें ॥ २१८ ॥

शुक्रश्च करके लग्ने घटे भास्करनंदनः ॥
आरनालघटे भांडे चंद्रो लवणभांडके ॥ २१९ ॥

शुक्र होवे तो जलके घड़ामें शनि होवे तो भी काँजीका आरनाल (१) का । चंद्र होवे तो नोनका बर्तन ॥ २१९ ॥

नष्टद्रव्याश्रितं स्थानं सद्मनीति विनिर्दिशेत् ॥
पुंराशिपुंग्रहैर्दृष्टः पुरुषस्तस्करो भवेत् ॥ २२० ॥

---

१. आरनाल उसकाँजीका नामहैं जो गेहूं सडाकर बनाईजावे इसे मालवेमें जलेब कहतेहैं ।

नष्ट धनका स्थान घरमें कहना। पुरुषकीराशि और पुरुषग्रह देखे तो चोर पुरुष कहना ॥ २२० ॥

स्त्रीराशिस्त्रीग्रहैर्दृष्टस्तस्करी च वधूर्भवेत् ॥
उदयादोजराशिस्थे पुंग्रहे पुरुषो भवेत् ॥ २२१ ॥

स्त्रीराशि स्त्रीग्रहोंसे युक्त होवे तो स्त्रीने चोरी करी। लग्नसे विषमराशिमें पुरुषग्रह होवे तो चोरपुरुष कहना ॥ २२१ ॥

समराश्युदये चोरी समस्थे स्त्री ग्रहे वधूः ॥
उदयारूढयोश्चैव बलाबलवशाद्वदेत् ॥ २२२ ॥

लग्न समराशि होवे और उसमें स्त्रीग्रह होवे तो स्त्री चोर होवेहै। उदय और आरूढके बलाबल देखना ॥ २२२ ॥

कर्किनक्रपुरंध्रीषु नष्टं द्रव्यं न सिध्यति ॥
तुलावृषभकुंभेषु नष्टद्रव्यं च सिध्यति ॥ २२३ ॥

कर्क कन्या मकरमें धन खोवे तो मिले नहीं तुला वृषभ कुंभमें नष्टद्रव्य मिलेगा ॥ २२३ ॥

जीवंविना सर्वखगे सपत्नस्थे न सिध्यति ॥
पश्यंति ये ग्रहाश्चंद्रं चोरास्तद्वत्स्वरूपिणः॥२२४॥

गुरुकेसिवाय सबग्रह शत्रुके घरमें होवे तो चोरी मिले नहीं। चंद्रको देखनेवाले ग्रहोंका जैसा रूप होताहै वैसा रूप चोरोंका होताहै ॥ २२४ ॥

द्रव्याणि च तथैव स्वमिति ज्ञात्वा वदेत्सुधीः ॥
यस्यामारूढसंयाति तस्यांदिशि गतं वदेत्॥२२५॥

धन या जो चीज नष्ट होय वो सबग्रहोंके जोरसे जानो। जिसदिशाको आरूढ आवे उसदिशामें धनगया ऐसा जानो ॥२१९ ॥

तत्तद्ग्रहांशुसंख्यानि तत्तत्संख्यादिनादिकम् ॥

स्वभावकवशादेव मन्यदृष्टिवशाद्वदेत् ॥ २२६ ॥

ग्रहोंके किरणोंके संख्याके दिन अथवा वर्ष जो आवे वैसे कहै। दृष्टिसे स्वभावसे सब कथन करना ॥ २२६ ॥

चंद्रस्थर्क्षादुदयभं यावत्तावत्फलं वदेत् ॥
चरस्थिरोभयवशादेकद्वित्रिगुणो भवेत् ॥ २२७ ॥
इति ज्ञान॰नष्टकांडमेकादशम् ॥ ११ ॥

जिसराशिमें चंद्र होवे और चंद्रसे जितनी दूर लग्न होवे उतने दिनोंकी कल्पना करे। चरराशि एकगुनी स्थिरराशि द्विस्वभाव राशिसे त्रिगुणित दिन कहै ॥ २२७ ॥

इति ज्ञान॰ नष्ट ॥ ११ ॥

सुवस्तुलाभो राज्यं च राष्ट्रलाभं स्त्रियःपतिम् ॥
उपायनं स्वकार्याणि लाभालाभौ वदेत्सुधीः २२८॥

लग्न आरूढ छत्र इन तीनोंको जो उच्चग्रह देखतेहोय तो चिंतित वस्तुका लाभ स्त्रीकालाभ राज्यका लाभ ये सब होतेहैं याने स्त्रीको पतिका लाभ आदि सब कहै ॥ २२८ ॥

उदयादित्रिकान्खेटाःपश्यंत्युच्चेश्वरायदि ॥
चिंतितार्थागमश्चैव स्त्रीलाभो राज्यसिद्धयः २२९ ॥

उदय आरूढ छत्र इनोंकी उच्चग्रह देखे तो मनमें विचाराकाम सिद्ध होवे। स्त्री राज्यका लाभ होवे ॥ २२९ ॥

तान्नीचद्वेषिणः खेटाः पश्यंति यदिनाशयेत् ॥
एवं विवाहकार्यं च शुभाशुभनिरूपणम् ॥ २३० ॥

और नीचशत्रु देखे तो काम नाश होवे इसीप्रकार विवाहका काम शुभ अशुभ देखना ॥ २३० ॥

उदयारूढच्छत्राणि पश्यंति सुहृदो यदि ॥
शत्रुर्मित्रत्वमायाति रिपुः पश्यति चेद्रिपुम् ॥ २३१ ॥

उदय आरूढ छत्र इनोंको मित्रग्रह देखे तो शत्रु, मित्रु होताहै यदि शत्रु देखे तो मित्र शत्रु होताहै ॥ २३१ ॥

उदयं चंद्रलग्नं च रिपुः पश्यति वायुतः ॥
आयुर्हानी रिपुस्थाने गतश्चेद्बंधनं भवेत् ॥ २३२ ॥

लग्न और चंद्र जिसराशिमें है उसराशिको शत्रु देखे अथवा युक्तहोवे तो आयुष्यका नाश होताहै यदि चंद्र शत्रु राशिस्थ होवे तो बंधन होवे है ॥ २३२ ॥

गतो न यदि नष्टं चेद्बहिरेव गतं वदेत् ॥
बलवच्चंद्रजीवाभ्यां केंद्रेषु सहितेषु च ॥ २३३ ॥
नष्टप्रश्ने न नष्टं स्यान्मृत्युप्रश्ने न नश्यति ॥
पापदृष्टे युते केंद्रे ब्रूयात्तस्य विपर्ययम् ॥ २३४ ॥

शत्रुके घर नहीं गया होवे तो उसको बाहरगया जानो । बलवान् चंद्र गुरु केंद्रमें होवे ऐसे समय प्रश्न नष्टवस्तुका करे तो वो चीज नष्ट नहीं भई ये बात कहना । यदि रोगीके जीनेके बदले प्रश्न करे तो रोगी मरेगा नहीं । केंद्रमें चन्द्र गुरुहै परंतु पापग्रहोंसे युक्त या दृष्ट होवे तो नष्टवस्तु मिले नहीं रोगी मरेगा ऐसा कहना ॥ २३३ ॥ २३४ ॥

शत्रोरागमनं नास्ति चतुर्थे पापसंयुते ॥
दशमैकादशे सौम्याग्रहाश्चेत्सर्वसिद्धयः ॥ २३५ ॥

चतुर्थमें पापग्रह होवे तो शत्रु नहीं आवेगा । दशम और एकादशस्थानमें सौम्यग्रह होवे तो सबकामकी सिद्धि कहै ॥ २३६ ॥

उदयारूढच्छत्रेषु केंद्रेषु भुजगो यदि ॥
दूरस्थितो न चायाति तत्र बंधो भविष्यति२३६॥

लग्न आरूढ छत्रमें केंद्रमें राहु होवे तो दूरगयाहुवा आदमी नहीं आवेगा वहीं कैद होवे ॥ २३६ ॥

विषादिपीडाप्रश्ने तु रोगिणो मरणं भवेत् ॥
गमनं विद्यते प्रष्टुर्नास्तीति कथयेद्बुधः ॥ २३७ ॥

रोगी आदमीके रोगके विषयमें प्रश्न होवे तो रोगी मरेगा । पूछनेवालेका जानाभी न होगा ॥ २३७॥

प्रारब्धकार्यहानिः स्याद्धनस्यापत्तिरीरिता ॥
चंद्राद्व्योमस्थिते शुक्रे जीवाद्व्योमस्थिते रवौ २३८

जिसकामको प्रारंभ कराहै उसकामका नाश होवेगा । धनका नाश होवेगा चंद्रसे दशमस्थानमें शुक्र होवे और गुरुसे दशम सूर्य होवे ॥ २३८ ॥

तल्लग्ने कार्यसिद्धिः स्यात्पृच्छकानां न संशयः ॥
उदयात्सप्तमे व्योम्नि शुक्रश्चेत्स्त्रीसमागमः २३९॥

ऐसे प्रश्नमें पृच्छकोंकी कार्यसिद्धि होवेगी । लग्नसे सप्तम अथवा दशम शुक्र होवे तो स्त्रीसे मुलाकात होवेगी ॥ २३९ ॥

धनागमश्च सौख्यं च चंद्रेप्येवं प्रकीर्तितम् ॥
मित्रस्वात्युच्चमायान्ति तदा खेटा यदीष्टदा ॥
नीचारिबलयोगाभ्यां सर्वकार्यविनाशनं ॥२४०॥
इति ज्ञान०लाभालाभकांडद्वादशम् ॥ १२ ॥

धनलाभ और सुख होवे चंद्र सप्तम दशम होवे तो शुक्रकेसमान फल जानो । जो ग्रह मित्रके स्वराशिके उच्चके होतेहैं वे इच्छापूर्ण करतेहैं नीच और शत्रुग्रहोंसे सबकाम नष्ट होताहै२४०

इति ज्ञानप्रदीप भाषाटीकायां लाभालाभकांडम् ॥ १२ ॥

पूर्वशास्त्रानुसारेण व्याधिमृत्युविनिर्णयः ॥२४१ ॥
उदयात्षष्ठोयोव्याधिरष्टमो मृत्युसंज्ञकः ॥

पूर्व कथन करोभयो जो प्रकरण उससे रोग और मृत्युका निर्णय जानो लग्नसे छठेस्थानको रोग कहतेहैं । अष्टम मृत्युहै ॥

तत्रारूढे व्याधिचिंता निधने मृत्युचिंतना॥२४२ ॥

आरूढसे रोगका कारण देखना। और निधनस्थानसे मृत्युकी चिंतना करे ॥ २४२ ॥

तत्तद्ग्रहयुते दृष्टे व्याधिं मृत्युं वदेत्क्रमात् ॥
पापनीचारयः खेटाः पश्यंति यदि संयुताः॥२४३॥

उन उन ग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे तो क्रमसे व्याधि और मृत्यु कहना । पापग्रह नीचग्रह शत्रु देखते होयँ अथवा युक्त होवे तो ॥ २४३ ॥

न व्याधिशमनं मृत्युं प्रविचार्य वदेत्सुधीः ॥
एतयोश्चंद्रभुजगौ तिष्ठतो यदि चोदये ॥ २४४ ॥

रोगभी दूर न होवे और मृत्युभी दूर नहीं होवे। और चंद्र राहु यदि लग्नमें होवे तो ॥ २४४ ॥

गरादिना भवेद्व्याधिर्न शाम्यति न संशयः ॥
पृष्ठोदयर्क्षे तच्छत्रे व्याधिमोक्षो न जायते ॥२४५॥

विषआदिसे रोग होवे और व्याधी नहीं शांत होतीहै । छत्र पृष्ठोदय राशि होवे तो रोग दूर नहीं होता ॥ २४५ ॥

व्याधिस्थानमिदं प्राहुर्मूर्ध्नि वक्रे भुजे करे ॥
वक्षसि स्तनयोः कुक्षौ कक्षे मूले च मेहने ॥ २४६ ॥

रोगके स्थान येहैं कि, मस्तक, मुख, भुज, हाथ, छाती, स्तन, कूख, काँख, मूल मेंहैन ॥ २४६ ॥

ऊरौ पादे च मेषाद्या राशयः परिकीर्तिताः ॥
कुजो मूर्ध्नि मुखे शुक्रः कंठे राहुर्भुजे बुधः ॥ २४७ ॥

जाँघ और पाद ये मेषसे लगाके ये राशिनके अंगहैं । मंगल मस्तक, मुख शुक्र, कंठ राहु, भुज बुध ॥ २४७ ॥

चंद्रो वक्षसि कुक्षौ च भानुर्नाभेरधो गुरुः ॥
ऊरौ शनिरहिः पादे ग्रहाणां स्थानमीरितम् ॥ २४८ ॥

चंद्र छाती, सूर्य कूख, गुरु ठोडीसेनीचे, शनि जाँघ, केतु पाँव ये ग्रहोंके स्थानहैं ॥ २४८ ॥

एतेष्वेव स्थलेषु स्यान्नष्टमेतेषु राशिषु ॥
पापयुक्तेषु दृष्टेषु नीचारिस्थेषु रुग्भवेत् ॥ २४९ ॥

इनस्थानोंमें बारहराशियोंसे बीमारी जानो । पापग्रह नीच शत्रुक्षेत्री होवे तो रोग होवेहै ॥ २४९ ॥

पश्यंति ये ग्रहाश्चंद्रं व्याधिस्थानावलोकिनम् ॥
पूर्वोक्तमासवर्षाणि दिनानि च वदेद्बुधः ॥ २५० ॥

जो ग्रह चंद्रको देखे उनोंके जितनेमास वर्ष आदिहैं उतने दिन कहै । परंतु चंद्रव्याधिस्थानको देखनेवाला होवे ॥ २५० ॥

षष्ठाष्टमे पापयुते रोगशांतिर्न जायते ॥
षष्ठाष्टमे शुभयुते तदा व्याधिविमोचनम् ॥ २५१ ॥

छठे आठवें पापग्रह होवे तो रोग नहीं जावेगा । शुभग्रह होवे तो रोग दूर होवे ॥ २५१ ॥

किंचिदत्र विशेषोस्ति रोगमृत्युस्थिते शुभाः ॥

१ गुद । २ लिंग ।

यावद्भिर्दिवसैर्यांति तावद्भिर्व्याधिमोचनम्। २५२॥

और ये विशेषहै कि, शुभग्रह रोग मृत्युस्थानमें जितनेदिनों तक ठहरे उतनेही दिनोंमें रोग दूर होवे ॥ २५२ ॥

रोगस्थानाद्भवे सप्ते पापखेटयुते तथा ॥
षष्ठाष्टमे चंद्रयुक्ते मरणं रोगिणांभवेत् ॥ २५३ ॥

रोगस्थानमें सप्तम पापग्रहयुक्त छठा आठवां चंद्र होवे तो रोगीका मरण होताहै ॥ २५३ ॥

रोगस्थानं कुजः पश्येच्छिरस्तोदो ज्वरो भवेत् ॥
भृगुर्विषूचिः सौम्यश्चेत्कक्षे ग्रंथिर्भविष्यति॥२५४॥

षष्ठस्थानको मंगल देखे तो माथो दूखे और ताप आवे । शुक्र देखे तो हैजा होताहै । बुध देखे तो कांखविलाइ होवे॥२५४॥

रविश्चेदुदरव्याधिः शनिर्वातश्च पंगुता ॥
राहुर्विषं शशी पश्येन्नेत्ररोगो भविष्यति ॥ २५५ ॥

सूर्य देखे तो पेटमें दूखे। शनि देखे तो बाय होवे और पंगु होवे । राहु देखे तो जहर दियागयाहै चंद्र देखे तो आंखोंका रोगहै२५५॥

मूलव्याधिर्गुरुः पश्येच्चंद्रवत्स्याद्भृगुःपरे ॥
परिधाविंद्रकोदंडदृष्टे प्रश्ने युते सति ॥ २५६ ॥

गुरु देखे बवासीर । कोईआचार्योंके मतसे शुक्रका फल चंद्रके समानहै । परिधीको इंद्रधनुषदेखे वा युक्त होवे तो॥२५६॥

कुष्ठव्याधिमिति ब्रूयाद्धूमे भूताहतं वदेत् ॥
सर्वेपस्मारमादित्ये पिशाचपरिपीडनम् ॥ २५७ ॥

कोढकारोग जानो । धूम होवे तो भूतोंका रोगहै। सबग्रह देखते होवे तो अपस्मार याने मिरगीहै । सूर्य सभी भूत जानों ॥ २५७ ॥

कासं श्वासं च शूलं च शनौ शीतज्वरः कुजे ॥

शुक्रे कोदंडपरिधौ दृष्टे प्रश्ने तु रोगिणाम् ॥ २५८॥

शनिसे श्वास खांसी शूल कहै । मंगलसे शीतज्वर कहना । धनुषपरिधीको शुक्र देखे तो ॥ २५८ ॥

न व्याधिशमनं किंचिद्यदि नेक्षंति चेच्छुभाः ॥
रोगशांतिर्भवेच्छीघ्रं मित्रस्वात्युच्चसंस्थिताः२५९

रोग शमन नहीं होवेगा । यदि शुभ देखे उच्चके ग्रहस्थग्रही मित्रक्षेत्री देखे तो शीघ्र रोग दूर होवे ॥ २५९ ॥

शिरोललाटभ्रूनेत्रनासिकाश्रुतयोऽधरः ॥
चुबुकं चांगुलीश्चैव कृत्तिकाद्या नवोडवः ॥ २६० ॥
कंठवक्षस्थलकुचोदरमध्यनितंबकाः ॥
शिश्नमंडोधरः प्रोक्तश्चोत्तराद्या नवोडवः ॥ २६१॥
जानुजंघापादसंधिपृष्ठांतस्फिचगुल्फकौ ॥
पादाग्रतालिकांगुल्यो विश्वर्क्षाद्या नवोडवः॥२६२॥
उदयर्क्षवशादेवं ज्ञात्वा तत्र गदं वदेत् ॥
अर्कनक्षत्रकं ज्ञात्वा नष्टद्रव्यं तथा वदेत् ॥२६३॥

कृत्तिकाआदि नौ नक्षत्रोंके अंग । शिर, ललाट, भौं, नेत्र,नाक, कान, होठ, दाढी, उंगली, । उत्तरा आदि नौ नक्षत्रोंके अंग । कंठ, छाती, स्तन, पेट पेटके नीचेका भाग, कूले, लिंग, अंड, अंडके नीचेका भाग । कोईके मतसे होठहै । उत्तराषाढा आदि नौ नक्षत्रोंके नौ अंग । घूंटे, जांघे पाँवँ । पीठ, चूतड़ टकना पावों-का अग्र हथेली व पगथली पावोंकी उंगली । ऐसे सत्ताइस नक्षत्र जानों । उदयके नक्षत्रको देखके विचारना । सूर्यकानक्षत्र जानके खोईहुईवस्तुकोभी विचारनाचाहिये॥२६०॥२६१॥२६२॥२६३॥

त्रिकोणलग्नदशमे शुभाश्चेद्व्याधयो नहि ॥
तेषु नीचारियुक्तेषु देहपीडा भविष्यति ॥ २६४ ॥
॥ इति ज्ञान०रागप्रश्नकांडं त्रयोदशम् ॥ १३ ॥

नवम पंचम लग्न दशमें शुभग्रह होवे तो रोग नहीं होता। यदि उनस्थानोंमें नीचग्रह शत्रुक्षेत्री होय तो देहकी पीडा होवेगी ॥ २६४ ॥

इति ज्ञान०भा०टी०रोगकांडं ॥ १३ ॥

मरणस्य विधानानि ज्ञातव्यानि मनीषिभिः ॥
वृषस्य वृषभश्छत्रं सिंहश्छत्रं हरेर्भवेत् ॥ २६५ ॥

मरणको बुद्धिमान जाने । इसकारण छत्रका विचार करतेहैं । वृषभका छत्र वृषभ । सिंहका छत्र सिंह ॥ २६५ ॥

अलिनो वृश्चिकश्छत्रं कुंभश्छत्रं घटस्य च ॥
उच्चस्थानमितिज्ञात्वा रूढे स्यादुदये यदि॥२६६ ॥

वृश्चिककाछत्र वृश्चिक । कुंभका छत्र कुंभहै । ये उच्चस्थानहैं ये आरूढमें वा उदयमें होवे ॥ २६६ ॥

मरणं न भवेत्तस्य रोगिणो नात्र संशयः ॥
तुला वा कार्मुकं छत्रं नीचं मृत्युविपर्यये ॥२६७॥

तो रोगी मरे नहीं । अब नीच और मृत्यु छत्र कहतेहैं। तुलाका छत्र धनहै । उसका नाम नीचहै । और धनका तुला मृत्यु छत्रहै ॥ २६७ ॥

मेषस्य मिथुनं छत्रं नीचं मृत्युविपर्यये ॥
कन्या छत्रं कुलीरस्य नीचं मृत्युविपर्यये ॥ २६८ ॥

मेषका मिथुन नीच । मिथुनका मेष मृत्यु छत्रहै । कर्कका कन्या नीच कन्याका कर्क मृत्यु छत्रहै ॥ २६८ ॥

नक्रस्य मीनश्छत्रं च नीचं मृत्युविपर्यये ॥
नीचे न शाम्यति व्याधिर्मृत्यौ मरणमादिशेत् २६९
मकरका मीन नीचहै । मीनका मकर मृत्युहै नीच होवे तो रोग दूर नहीं होता । मृत्यु होवे तो मरण जानो ॥ २६९ ॥

ग्रहेषु बलवान्सूर्यो यदि मृत्युस्तदाग्निना ॥
मंदः क्षुधा जलेनेंदुः शीतेन कविरुच्यते ॥ २७० ॥
ग्रहोंमें सूर्य बलवान् होवे तो अग्निसे मरेहैं । शनि बली होवे तो भूखसे मरेहैं । चंद्र बलवान् होवे तो जलसे मरे शुक्र होवे तो शीतसे ॥ २७० ॥

बुधस्तुषारवाताभ्यां शस्त्रेणारो बलीयदि ॥
राहुर्विषेण जीवस्तु कुक्षिरोगेण नश्यति ॥ २७१ ॥
बुध बली होवे तो कुहर हवासे । मंगल बलवान् होवे तो हथियारसे राहु बली होवे तो जहरसे । गुरु बली होवे तो कूखके रोगसे मरे ॥ २७१ ॥

विधोः षष्ठाष्टमे पापाः सप्तमे वा यदि स्थिताः ॥
रोगमृत्युस्थलाभ्यां वा रोगिणां मरणं ध्रुवम् २७२
चंद्रमासे छठे आठवें सातवें पापग्रह होवे । और रोगस्थल मृत्युस्थलसे छठे सातवें आठवें पापी होवे तो रोगीका मरण कहो ॥ २७२ ॥

आरूढं मरणस्थानं तस्मादष्टमगः शशी ॥
पापाः पश्यंति चेन्मृत्युं रोगिणां कथयेत्सुधीः २७३
आरूढ मरणस्थान वहांसे अष्टम चंद्र होवे और पापग्रह देखे तो रोगीका मरण कहै ॥ २७३ ॥

तृतीये भानुसंयुक्ते दशमे पापसंयुते ॥

दशाहान्मरणं ब्रूयाच्छुक्रजीवौ तृतीयगौ ॥२७४॥

तृतीयमें सूर्यहोवे और दशम पापग्रहहोवे तो दशदिनमें रोगीका मरण कहै । शुक्र और जीव याने गुरु तीसरेस्थानमें होवे ॥२७४॥

सप्ताहान्मरणं ब्रूयाद्रोगिणामतिबुद्धिमान् ॥
उदये चतुरस्रे वा पापात्वष्टादिनान्मृतिः ॥२७५॥

तो सातदिनमें मरण कहै । लग्नमें चौथे आठवें पापग्रह होवे तो सातदिनमें रोगी मरे ॥ २७५ ॥

लग्नाद्द्वितीयगाः पापाश्चतुर्दशदिनान्मृतिः ॥
त्रिदिनान्मरणं किंतु दशमे पापसंयुते ॥ २७६ ॥

लग्नसे दूसरे पापग्रह होवे तो चौदहदिनमें मरण होताहै । दशममें पापग्रह होवे तो तीनदिनमें मरे ॥ २७६ ॥

तस्मात्सप्तमगे पापे दशाहान्मरणं भवेत् ॥
निधनारूढगे पापे दृष्टे वा मरणं भवेत् ॥
तत्तद्ग्रहवशेनैव दिनमासादिनिर्णयः ॥ २७७ ॥
इति ज्ञान०मरणकांडं चतुर्दशम् ॥ १४ ॥

उससे सप्तमस्थानमें पापग्रह होवे तो दशदिनमें मरे । अष्टमस्थानमें और आरूढलग्नमें पापग्रह होवे अथवा देखे तो मरण कहै । जिसग्रहके जितने दिन मासहै उतनेभी कहो ॥ २७७ ॥

इति ज्ञान० मरण० ॥ १४ ॥

ग्रहोच्चे स्वर्गमायाति रिपौ मृगकुले भवः ॥२७८॥

यदि कोई यह पूछे कि, मृतकपुरुषकी क्या गति होगी इसप्रश्नमें उच्चका ग्रह हो तो जीवस्वर्गमें जावेगा । शत्रुक्षेत्रमें होवे तो हिरण आदि जानवर होगा ॥ २७८ ॥

नीचे नरकमायाति मित्रे मित्रकुलेभवः ॥

स्वक्षेत्रे स्वजनेजन्म मृतानां कथयेद्बुधः ।। २७९ ।।

इति ज्ञान०स्वर्गकांडं पंचदशम् ।। १५ ।।

नीचका होवे तो नरकमें जावे स्वक्षेत्री होवे तो फिर स्वजनोंमें जन्म कैहे । और मित्रके घरका हो तो मित्रके घरमें जन्मलेने २७९

इति ज्ञान० ॥ १५ ॥

कथयामि विशेषेण भुक्तद्रव्यस्य निर्णयम् ।।
पाकभांडानि भुक्तानि व्यंजनानि रसास्ततः २८०

अब खाईहुई वस्तुका और रसोईके वर्तन तथा व्यंजन वा रस इनोंका वर्णन करेंगे ॥ २८० ॥

सहभोक्तृन्भाजनानि तद्दातृस्नेहिनो रिपून् ॥
मेषराशौ भवेच्छागं वृषभे गव्यमुच्यते ॥ २८१ ॥

अब जिनाजिन व्यंजनोंका भोजन किया हो उनपदार्थोंका वर्णन करतेहैं । मेषराशि होवे तो बकरेका भोजन कहै । वृषभराशि होवे तो गायको दूध दही आदि खावे ॥ २८१ ॥

धनुर्मिथुनसिंहेषु मत्स्यमांसादिभोजनम् ॥
नक्रालिकर्कमीनेषु परिपक्वफलादिकम् ॥ २८२ ॥

धनराशि मिथुन सिंह ये राशि होवे तो मछलीके मांसका भोजन कहै । कर्क वृश्चिक मकर मीन होवे तो पकेहुवे फलोंका भोजन कहै ॥ २८२ ॥

तुलाकन्याघटेष्वेव शुद्धान्नमिति कीर्तयेत् ॥
भानौ तिक्तकटुक्षारमिश्रं भोजनमुच्यते ॥ २८३ ॥

तुला कन्या कुंभ इनोंमें शुद्धअन्नका भोजन कहै । सूर्य होवे तो चरपरा कडा खारा मिलेहुवे अन्नका भोजन कहै ॥ २८३ ॥

कृष्णान्नं क्षौद्रसंयुक्तं भूमिपुत्रस्य भोजनम् ॥

भर्जितान्युपदंशानि सौम्यस्याहुर्मनीषिणः२८४॥

मंगलकी खिचडी और शहतका भोजन । बुधके भूंजेहुवे पदार्थ व्यंजन ॥ २८४ ॥

पायसान्नंघृतयुतं गुरोर्भोजनमीरितम् ॥
सतैलकोद्रवान्नं च भवेन्मंदस्य भोजनम् ॥२८५॥

गुरुका भोजन खीर घी जानना । शनिका तेल और कोदोंअन्नका भोजन जानो ॥ २८५ ॥

चणकं राहुकेत्वोश्च रसवर्ग उदाहृतः ॥
जीवस्य माषवटकं सूपमिश्रं तु भोजनम् ॥ २८६॥

राहु केतु दोनोंके चना इसप्रकार रसवर्ग कहाहै । गुरुके उड़दके बरा और दालकरके युक्त भोजन कहो ॥ २८६ ॥

चंद्रस्य कंदप्रसवमत्स्याद्यैर्भोजनं भवेत् ॥
क्षौद्रापूपपयोयुग्भिर्व्यंजनैर्भोजनं भृगोः ॥ २८७॥

चंद्रका कंद याने कांदाकरके युक्त मछलीका भोजन कहो। शुक्रका शहत पूआ दूधसे मिले हुवे व्यंजनोंका भोजन ॥ २८७॥

ओजराशौ शुभैर्दृष्टे सुरुच्या भोजनं भवेत् ॥
समराशौ मंदरुच्या भुंक्तेल्पं पापवीक्षिते ॥२८८॥

विषमराशिको शुभग्रह देखे तो अच्छे रुचिसे भोजन जानो। समराशिको शुभ देखे तो थोड़े रुचिसे भोजन जानो। यदि समराशिको पापग्रह देखे तो थोड़ा भोजन जानो ॥ २८८॥

केचित्पश्यंति पापाश्चेत्पुराणान्नं क्षुधार्दितः ॥
अर्कारौ मांसभोक्तारावुशनाश्चंद्रभोगिनौ ॥२८९॥
नवनीतघृतक्षीरदधिभिर्भोजनं भवेत् ॥

कोई कहतेहैं कि, पापग्रह देखे तो भूखसे बासा अन्न खावे । सूर्य मंगल मांसको खावेहैं ॥ शुक्र मक्खन चंद्र दूध राहु दही । इनों से मिलाहुवा भोजन कहे ॥ २८९ ॥

जलराशिषु पापेषु ससौम्येर्वीक्षितेषु च ॥ २९० ॥

जलराशिनमें पापग्रह और शुभग्रह होवे अथवा इनों से दृष्ट होवे तो ॥ २९० ॥

सतैलभोजनं ब्रूयादिति ज्ञात्वा विचक्षणः ॥
पूर्वोक्तधातुवर्गेण भाजनानि विनिर्दिशेत् ॥ २९१॥

तैलमिलाहुआ भोजन बतावे । पात्र याने भोजन करनेके बर्तन पहले कहे हुवे धातुवर्गसे जानो ॥ २९१ ॥

मूलवर्गेण शाकादीनुपदंशान्वदेद्बुधः ॥
जीववर्गेण भोक्तृंश्च मत्स्यमाषादिकानपि ॥
सर्वमालोक्य निश्चित्यप्रश्नान्नृणांबुधोवदेत्२९२॥
इति ज्ञान॰भोजनकांडं षोडशम् ॥ १६ ॥

धनराशिके दूसरे आधेमें प्रत्यक्ष मांस नहीं भोजन करे किंतु मांसके समान उडद वगैरहके भोजन कहे । सिंहसे कच्चा मांस खावे । मूलवर्गसे साक अथानोंआदि बुद्धिसे कहे । जीववर्गसे भोजन करनेवालेनको जाने और मछली उडद वगैरहभी । पंडित सब विचारे ॥ ॥ २९२ ॥

इति ज्ञान॰भोजनकांडम् ॥ १६ ॥

स्वप्ने यान्परिपश्यंति सर्वान्वक्ष्यामि सर्वथा२९३॥

स्वप्नमें जो देखे उसको कहेतेहैं ॥ २९३ ॥

मेषोदये देवगृहं प्रासादः संभवंति च ॥
वृषोदये दिनाधीशे ज्ञातगेहस्य दर्शनम् ॥ २९४॥

मेषलग्न आरूढ वा छत्र होवे तो मंदिर या महल कहे । वृषभलग्नमें सूर्य होवे तो देखा हुआ घर देखे ऐसा कहे ॥ २९४ ॥

वृश्चिकस्योदयेकारौ व्याकुलं मृतदर्शनम् ॥
मिथुनस्योदये विप्रं तपस्विवचनानि च ॥ २९५॥

'वृश्चिकस्योदये' याने वृश्चिकलग्नमें सूर्य और मंगल होवे तो मरेहुवे आदमीका दर्शन होवे ॥ मिथुन लग्न होवे तो ब्राह्मणको देखा और साधुके बचन सुने ये कहो ॥ २९५ ॥

कुलीरस्योदये क्षेत्रे सस्यं दृष्टा पुनर्ग्रहम् ॥
तृणान्यादायहस्ताभ्यांगच्छतीति विनिर्दिशेत्२९६

कर्क लग्न होवे तो खेतमें जाकर खेतीदेखकर घांस हाथमें लेकर तुम घरको आये । ऐसा कहे ॥ २९६ ॥

सिंहोदये किरातांश्च महिषान्गिरिपद्धतिम् ॥
कन्योदयेपि चारूढे मुंडस्त्रीभ्यः पिबंत्यपः॥२९७॥

सिंहलग्न होवे तो किरात याने भील, भैसा और पहाडके मार्ग देखेहैं । कन्याका उदय होवे तो वा आरूढ होवे विधवा स्त्रियों से पानी पीवे ॥ २९७ ॥

तुलोदये नृपं स्वर्णं वणिजं च स पश्यति ॥
वृश्चिकस्योदये स्वप्ने पश्यत्यलिमृगादिकम्२९८

तुलाका उदय होवे तो राजाको सुवर्णको वनियाँको देखे । वृश्चिकलग्न होवे तो, विच्छू मृगआदि देखे ॥ २९८ ॥

वृषांश्चैव तथा द्रष्टा स्वप्ने ब्रूयादशंकितः ॥
उदये धनुषः पश्येत्पुष्पं पक्कफलं लभेत्॥ २९९ ॥

बैलभी देखे । धनलग्नमें फूल पकोफल मिले ॥ २९९ ॥

मृगोदये नदीं नारीं पुमान्स्वप्नेषु पश्यति ॥

कुंभोदये च मुकुरं मीने स्वर्णं जलाशयम् ॥ ३०० ॥

मकरलग्न होवे तो नदीको स्त्रीको पुरुषको देखे।कुंभलग्नमें कांच देखे । मीनलग्नमें सुवर्ण और पानीका स्थान देखा ऐसा कहै ३०० ॥

तुय तिष्ठति शुक्रे च राजतं वस्तु पश्यति ॥
आदित्यश्चेन्मृतान्पुंसःपतनं शुष्कशाखिनाम् ३०१

चौथा शुक्र होवे तो चाँदीकी वस्तु देखो चौथे सूर्य होवे तो मरे आदमी देखे और सूखेवृक्ष गिरे देखे ॥ ३०१ ॥

चंद्रश्चेत्प्लवनं सिंधौ राहुर्मद्यं विषं भवेत् ॥
अत्र किंचिद्विशेषोस्ति च्छत्रारूढोदयेषु च॥३०२
शुक्रः स्थितश्चेत्सुश्वेतसौधं सौम्योऽमरान्वदेत् ॥
चतुर्थस्य वशात्स्वप्नं ब्रूयाद्गृहनिरीक्षणैः ॥
अत्रानुक्तं तदखिलं ब्रूयात्पूर्वोक्तवर्त्मना ॥ ३०३ ॥

इतिज्ञान०स्वप्नकांडं सप्तदशम् ॥ १७ ॥

चंद्र चौथा होवे तो समुद्रमें तैरना । राहु होवे तो मद्य यानी पीनेकी दारू और विष कहना । छत्र आरूढलग्न इनोंमें शुक्र होवे तो सफेद हवेली महल कहे । बुध होवे तो देवतान्को स्वप्न जानो । चतुर्थसे स्वप्नविचार करे और दृष्टिकोभी विचारे। इसमें कोई बातरही होवे तो पहले कहे हुवे मार्गसे विचारके कहो ॥ ३०२ ॥ ३०३ ॥

इति ज्ञानप्र ० भाषाटीकायां स्वप्नकांडं सप्तदशम् ॥ १७ ॥

अथोभयर्क्षे पथिको दुर्निमित्तो निवर्तते ॥ ३०४ ॥

इसके अनंतर लग्नद्विस्वभाव राशि होवे तो परदेशजानेवाले आदमीको शकुन अच्छा नहीं होवे इसकारणसे पीछे लौटताहै ३०४॥

चारोदये निमित्तान्यांदाययायादितीरयेत् ॥
स्थिरोदये निमित्तानां विरोधेन च गच्छति ३०५॥

स्थिरलग्नमेंभी कुछ अच्छे कुछ खराब इसप्रकार शकुन होनेसे मुसाफिर गमन नहीं करे । चरराशियोंके उदयमें शकुन अच्छे-होनेके कारणसे गमन करेहैं ॥ ३०५ ॥

चंद्रोदये दिवाभीतचाषपारावतादयः ॥
शकुना भयदा दृष्टा इति ब्रूयाद्विचक्षणः ॥ ३०६ ॥

उदय यानी लग्नमें चंद्र होवे तो घूघू निलकंठ परेवा आदिपक्षी भयको देनेवाले इनोंको देखे ऐसा कहै ॥ ३०६ ॥

गुरूदये तथा काकभारद्वाजादिपाक्षिणः ॥
मंदोदये कुलिंगः स्याज्ज्ञोदये पिंगलो भवेत् ॥ ३०७

लग्नमें गुरु होवे तो कौवा तथा भारद्वाज कहै । शनिलग्नमें होवे तो चिडिया पक्षी, बुध होवे तो पिंगल याने खूसर जो घुग्घूसे आकारमें छोटी होतीहै और घुग्घूकीही जातिहै ॥ ३०७ ॥

सूर्योदये च गरुडः सयासव्यवशाद्भवेत् ॥
स्थिरराशौ स्थिरान्पश्येच्चरैस्तिर्यग्गता इति ३०८।

लग्नमें सूर्य होवे तो गरुड कहना । परंतु बुद्धिसे दाहिनो जीमनों कहै । स्थिरराशि होवे तो स्थिरशकुन देखेहै । चरराशि होवे तो, जानवर देखेहै ॥ ३०८ ॥

उभये ध्वनिवृत्तिःस्याद्ग्रहस्थितिवशादमी ॥
राहोर्गोला विधोश्चापो ज्ञस्य छुच्छुंदरी भवेत् ३०९॥

द्विस्वभाव होवे तो रस्ताचलना बंद होवे । ये सब ग्रहोंकी स्थितिसे कहै । राहु होवे तो गोला चंद्रका नीलकंठ बुधकी छछुंदरि ॥ ३०९॥

दधि शुक्रस्य जीवस्य क्षीरं सर्पिरुदाहृतम् ॥
भानोश्च श्वेतगरुडः शिवा भौमस्य कीर्तिता ३१०॥

शुक्रका दही गुरुका दूध तथा घृत । सूर्यका सफेत गरुड मंगलकी स्यारी ॥ ३१० ॥

शनेस्तस्करवह्नी च निमित्तं दृष्टमादिशेत् ॥
भौमस्य श्वान भल्लूकभारद्वाजशशा इति ॥ ३११ ॥

शनिका चोर तथा अग्नि । मंगलका कुत्ता, रीछ, भारद्वाज खर्गोश ३११ ॥

उलूकास्तित्तिरिश्चैव कपोतश्च गुरोरमी ॥
शुक्रस्य पक्षिणो ब्रूयाद्गगनेसरटास्तथा ॥
जीवकांडप्रकारेण पक्षिणोन्यान्विचारयेत् ।३१२।
इति ज्ञान०शकुनकांडमष्टादशम् ॥ १८ ॥

घूघू तीतर कबूतर ये तीनों गुरुके । शुक्रके और पक्षी तथा गिरगिट जीवकांडप्रकार पहले वर्णन करा उसहिसावसे भी कहै ॥

इतिज्ञा०निमित्त० ।

प्रश्ने वैवाहिके लग्ने कुज सूर्यबुधा यदि ॥ ३१३ ॥
वैधव्यं शीघ्रमायाति सा नारी नात्र संशयः ॥
उदये मंदगे नारी रिक्ता मृतसुता भवेत् ॥ ३१४ ॥

अब जिसस्त्रीका विवाह हुआहै उसको सौभाग्य आदि प्राप्त होनेके प्रश्न कहतेहैं । प्रश्नलग्नमें मंगल सूर्य, बुध होवे तो उसनारीको विधवापन जल्दी प्राप्त होवेहै । लग्नमें शनि होवे तो वो नारी वाँझ अथवा उसके बालक बचे नहीं ॥ ३१३ ॥ ३१४ ॥

चंद्रोदये तु मरणं दंपत्योः शीघ्रमेव च ॥
सितजीवबुधा लग्ने यदितौ दीर्घजीविनौ ॥ ३१५ ॥

और लग्नमें चंद्र होवे तो स्त्री पुरुष दोनों मरतेहैं । लग्नमें बुध गुरु शुक्र होवे तो स्त्री और पुरुष बहुत दिन जीवे हैं ॥ ३१५ ॥

द्वितीयस्थे निशानाथे बहुपुत्रवती भवेत् ॥
स्थिता यद्यर्कमंदारा मनःक्लेशो दरिद्रता ॥ ३१६ ॥

दूसरेस्थानमें चंद्र होवे तो उस स्त्रीको बहुत पुत्र होतेहैं । द्वितीय सूर्य मंमल शनि होवें तो मनको दुःख रहे दरिद्रपना रहे ॥ ३१६ ॥

द्वितीये राहुसंयुक्ते सा भार्या व्यभिचारिणी ॥
शुभग्रहद्वितीयस्था मांगल्यबहुपुत्रदा ॥ ३१७ ॥

दूसरे राहु होवे तो व्यभिचारिणी होवेगी । शुभग्रह द्वितीय होवे तो बहुतपुत्र तथा मंगल आनंदयुक्त होवे ॥ ३१७ ॥

तृतीये जीवराहू चेत्सा वंध्या भवति ध्रुवम् ॥
अन्ये तृतीयराशिस्था धनसौभाग्यवृद्धिदाः ३१८

तीसरे राहु गुरु होवें तो वो स्त्री वंध्या होवे । अन्यग्रह तीसरेघर धनसौभाग्यको बढातेहैं ॥ ३१८ ॥

चतुर्थेर्कनिशाधीशौ तिष्ठतो यदि पापिनौ ॥
शनिस्तन्येन हीना स्यादहिः सापत्न्यवत्यसौ ३१९

चतुर्थ चंद्र सूर्य होवें तो अथवा शनि होवे तो स्तनोंमें दूध नहीं होगा । यदि राहु होवे तो उस स्त्रीके सौत होगी ॥ ३१९ ॥

बुधजीवारशुक्राश्चेदल्पजीवनवत्यसौ ॥
पंचमे यदि सौरिः स्याद्व्याधिसंपीडिताभवेत् ३२०

बुध मंगल गुरु शुक्र होवे तो थोडेदिन बचेगी । (पंचममें यदि) शनि होवे तो बीमार रहेगी ॥ ३२० ॥

शुक्रजीवबुधाः स्युश्चेद्बहुपुत्रवती वधूः ॥
चंद्रादित्यौ तु वंध्या स्यादहिश्चेन्मरणं भवेत् ३२१

शुक्र, गुरु, बुध, पंचम होवें तो बहुतपुत्र होवेंगे । सूर्य चंद्र होवें तो बाँझ होवेहै राहु पंचम होवे तो स्त्रीका मरण कहै । मंगल पंचम होवे तो पुत्रोंका नाश होवै ॥ ३२१ ॥

आरश्चेत्पुत्रनाशःस्यात्प्रश्ने पाणिग्रहोचिते ॥
षष्ठे शशी चेद्विधवा बुधः कलहकारिणी ॥ ३२२ ॥

छठे स्थानमें चंद्रके होनेसे स्त्री विधवा होतीहै । बुध होवे तो वो स्त्री लोकोंसे लड़ाई करेगी ॥ ३२२ ॥

षष्ठे तिष्ठति शुक्रेचेद्दीर्घमंगलहारिणी ॥
अन्ये तिष्ठंति चेन्नारी सुखिनी वृद्धिमत्यपि ३२३

षष्ठे (छठे) स्थानमें शुक्र होवे तो अखण्डसुहागिनी होवे और अन्य छठे ग्रह होवे तो सुखवती और भाग्यवती होवे ॥ ३२३ ॥

सप्तमस्थे शनौ नारी तरसा विधवा भवेत् ॥
व्याधिग्रस्ता भवेन्नारी सप्तमस्थेरवौ यदि ॥ ३२४॥

सातवाँ शनि होवे तो विधवा होवे । सातवाँ सूर्य होवे तो बीमार रहेगी ॥ ३२४ ॥

सप्तमस्थे निशानाथे ज्वरपीडावती भवेत् ॥
परेणापहृता याति कुजस्तिष्ठति सप्तमे ॥ ३२५ ॥

सप्तम चंद्र होवे तो तापकी पीडा रहेगी मंगल सप्तम होवे तो दूसरा हरण करके लेजावे ॥ ३२५ ॥

बुधजीवौसमृद्धिः स्याद्राहुश्चेद्विधवा भवेत् ॥
शुक्रश्चेत्सप्तमे राशौ वधूर्मृत्युं प्रयास्यति ॥ ३२६ ॥

सप्तम बुध गुरु होवे तो बढती होतीहै । राहु होवे तो विधवा होवे । सप्तममें शुक्र होवे तो वो वधू मरणको प्राप्त होवे ॥ ३२६ ॥

अष्टमस्थाः शुक्रगुरुभुजंगा नाशयंति च ॥

शनिज्ञौ वृद्धिदौ चंद्रो मारयत्येव भामिनीम् ३२७

अष्टम शुक्र गुरु राहु नाश करतेहैं । शनि बुध बढानेवालेहैं । चंद्र स्त्रीको मारताहै ॥ ३२७ ॥

आदित्यारौ पुनर्भूः स्यात्प्रश्ने वैवाहिके वधूः ॥
नवमे यदि सौम्यःस्याद्याधिहीना भवेद्वधूः॥३२८॥

अष्टम सूर्य मंगल होवे तो दूसरा धनी करेगी । नवम बुध होवे तो बीमारी कभी नहीं होवे ॥ ३२८ ॥

जीवचंद्रौ यदि स्यातां बहुपुत्रवती भवेत् ॥
अन्ये तिष्ठंति नवमे यदि वंध्या न संशयः ॥३२९॥

जीव याने गुरु चंद्र नवम होवे तो पुत्रवती होती है । और अन्य ग्रह नवम होवें तो वंध्या होतीहै ॥ ३२९ ॥

दशमे यदि चंद्रः स्याद्वंध्या भवति भामिनी ॥
भार्गवो यदि वेश्या स्याद्विधवार्किकुजादयः३३०

दशम चंद्र होवे तो वंध्या होवे । दशम शुक्र होवे तो वेश्या याने बाजारमें कसबकरे । दशम मंगल शनि आदि पापग्रह होवे तो विधवा कहै ॥ ३३० ॥

रिक्ता गुरुश्चेज्ज्ञादित्यौ यदि तस्याः शुभं वदेत् ॥
लाभस्थानगताःसर्वे पुत्रसौभाग्यवृद्धिदाः ॥३३१॥

गुरु दशम होवे तो रहिता याने विना बेटा बेटी व पतिके कहना॥ दशम सूर्य बुध शुभहैं । एकादशमें सबग्रहोंका फल शुभहै ३३१॥

लग्नाद्द्वादशगश्चंद्रो यदि स्यान्नाशमादिशेत् ॥
शनिभौमौ यदि स्यातां सुरापानवती भवेत्३३२॥

लग्नसे द्वादश चंद्र होवे तो नाश कहै द्वादश मंगल शनि होवे तों दारूपीनेवाली होतीहै ॥ ३३२ ॥

बुधे पुत्रवती जीवे धनधान्यवती वधूः ॥
सर्पादित्यौस्थितौवंध्याशुक्रःसुखवतीभवेत् ३३३
इति ज्ञान० विवाहकांडमेकोनविंशातितमम् ॥१९॥

बुध होवे तो पुत्रवती । गुरु होवे तो धन और धान्यसे युक्त होती है । सूर्य और राहु होवे तो वंध्या । शुक्र बारहवाँ होवे तो सुखी होतीहै ॥ ३३३ ॥

इति ज्ञान० विवाह० ॥ १९ ॥

स्त्रीपुंसोरतिभोगांश्च स्नेहास्नेहौ प्रतिव्रता ॥
शुद्धाशुद्धौक्रमात्प्रोक्तौशास्त्रे ज्ञानप्रदीपके॥३३४॥

अब स्त्रीपुरुषोंके भोग प्रेम लड़ाई, पतिव्रता याने अच्छा चलन खराब चलन ये सब वर्णन करतेहैं ॥ ३३४ ॥

प्रृच्छकादुदयारूढकेंद्रेषु भुजगो यदि ॥
तेषं दुष्टस्त्रियः साक्षाद्देवानामपि संशयः॥३३५॥

प्रश्नलग्न आरूढ इनके केंद्रमें राहु होवे तो देवतानकी स्त्रीभी दुष्ट होगी ॥ ३३५ ॥

लग्नादेकादशेस्ते च तृतीये दशमे शशी ॥
जीवदृष्टियुतस्तिष्ठेद्यदि भार्या पतिव्रता ॥३३६ ॥

लग्नसे एकादश सप्तम तृतीय दशम चंद्र होवे और उसमें गुरुकी दृष्टि होवे वा युक्तहो तो पतिव्रता जानो ॥ ३३६ ॥

चंद्रं पश्यंति पुंखेटास्तेन युक्ता भवंति चेत् ॥
तद्भार्या दुर्जनी भूयादितिशास्त्रविदो विदुः॥३३७॥

चंद्रको पुरुषग्रह देखे वा युक्त होवे तो उसकी स्त्री दुष्टहै ३३७॥

सप्तमस्थद्विषत्खेटैर्दृष्टो नीचारिगः शशी ॥
बंधुविद्वेषिणी लोके भ्रष्टा स्याच्च शुभे शुभा ३३८

सप्तमस्थ नीच अथवा शत्रुतेभी चंद्रको शत्रुग्रह देखे तो वो स्त्री बंधूनसे वैरकरनेवाली तथा भ्रष्ट याने धर्मसे नहीं चलेगी। परंतु वे ग्रह शुभ होवें तो अच्छोफल कहना ॥ ३३८ ॥

भानुजीवौ निशाधीशं पश्यंतौ वा युतौ यदि ॥
पतिव्रता भवेन्नारी रूपिणीति वदेद्बुधः ॥ ३३९ ॥

चंद्रमाको सूर्य और गुरु देखे वा युक्त होवे तो स्त्री पतिव्रता और अच्छेरूपकी स्त्री कहै ॥ ३३९ ॥

शुक्रेण युक्तो दृष्टो वा भौमश्चेत्परभामिनी ॥
बृहस्पतिर्बुधाराभ्यां युक्तश्चेत्कन्यकारतिः॥३४०॥

मंगलको शुक्र देखे अथवा युक्त होवे तो वो दूसरेकी है अपने कामकी नहीं. तथा गुरु, बुध और मंगल इन दोनोंसे युक्त होवे तो वो कन्या बाल्यावस्थामें पुरुषसे संग करेगी ॥ ३४० ॥

शुक्रेवर्गयुते भौमे भौमवर्गयुते भृगौ ॥
प्रष्टुःस्युर्विविधा भार्यास्तासु दोषो भविष्यति ३४१

शुक्रके वर्गसे युक्त मंगल होवे तथा मंगलके वर्गसे युक्त शुक्र होवे तो प्रश्नकरनेवालेकी नानाप्रकारकी स्त्रियें होतीहैं परंतु सब स्त्रियें खराब होतीहैं ॥ ३४१ ॥

भानुवर्गयुते शुक्रे राजस्त्री रतिभोगिनी ॥
जीववर्गयुते चंद्रे स्नेहेन रतिमानवा ॥ ३४२ ॥

सूर्यके वर्गमें शुक्र होवे तो राजाकी स्त्रीसे भोग होवे। चंद्रमा गुरुके वर्गमें होवे तो प्रेमसे रति होवेगी ॥ ३४२ ॥

चंद्रस्त्रीवर्गयुक्तश्चेत्स्त्रीस्वतंत्रवती भवेत् ॥

---

१ इस श्लोकका पाठांतर यों भी है "बृहस्पतिः शुक्रवर्गे भौमवर्गे युते भृगौ ॥ पृच्छको विधवाभर्त्ता सा सदोषो भविष्यति" ॥

शनैश्चरेण युक्तश्चेदतीव व्यभिचारिणी ॥ ३४३ ॥

चंद्रमा जो स्त्रीवर्गमें होवे तो ऐसेस्त्रीसे रति होगी कि, वो आप स्वाधीन होगी । चंद्रमा शनि युक्त होवे तो वो स्त्री व्यभिचारिणीहै ॥ ३४३ ॥

पापवर्गयुते दृष्टे शुक्रश्चेद्व्यभिचारिणी ॥
अरिवर्गयुतश्चंद्रो यद्यमित्रवधूरतिः ॥ ३४४ ॥

शुक्र पापग्रहोंसे युक्त होवे अथवा पापग्रहोंसे दृष्ट होवे तो व्यभिचारिणी जानो । चंद्र शत्रुके वर्गमें होवे तो शत्रुकी स्त्रीसे भोग होवे ॥ ३४४ ॥

नीचवर्गयुतश्चंद्रो नीचस्त्रीभोगकामुकः ॥
मित्रवर्गयुतश्चंद्रो मित्रवर्गवधूरतिः ॥ ३४५ ॥

चंद्र नीचग्रहके वर्गमें होवे तो नीचजातिके स्त्रीसे भोग कहै चंद्र मित्रवर्गमें होवे तो मित्रस्त्रीसे भोग कहै ॥ ३४५ ॥

स्वक्षेत्रे यदि शीतांशुः स्वभार्यायां रतिर्भवेत् ॥
स्ववर्गयुक्तश्चंद्रश्चेत्स्वोच्चवंशस्त्रिया रतिः ॥ ३४६ ॥

स्वक्षेत्रमें चंद्र होवे तो स्वस्त्रीसे भोगहै । अपने वर्गमें चंद्र होवें तो अपनेसे ऊंचेवंशको स्त्रीसे भोग कहना ॥ ३४६ ॥

उदासीनग्रहयुतो दृष्टो वा यदि चंद्रमाः ॥
उदासीनवधूभोगमिति चाहुर्मनीषिणः ॥ ३४७ ॥

चंद्रमा समग्रहसे युक्त या दृष्ट होवे तो ऐसीस्त्रीसे भोग कहना जो न शत्रुकीहै न मित्रकी है ॥ ३४७ ॥

लग्ने च दशमस्ते च पंचमे शनियुक् शशी ॥
चोररूपेण कथयेद्रात्रौ स्वप्नवधूरतिः ॥ ३४८ ॥

लग्नमें दशममें सप्तममें पंचममें चंद्र शनिसे युक्त होवे तो रातको सोई हुई स्त्रीसे चोर वनके रति होवे ॥ ३४८ ॥

ओजोदये तदधिपे त्वेकमैथुनमुच्यते ॥
समोदये तदाधिपे समस्थे द्वे रती तथा ॥ ३४९ ॥

कितनी दफे भोग होवे ऐसा प्रश्न होवे तो । विषमलग्न होवे और विषम स्थानमें लग्नेश होवे तो एकवार मैथुन कहना । समलग्न और समराशि ये लग्नेश्वर होवे तो दोदफे मैथुन कहै ॥ ३४९ ॥

लग्नेश्वरबलं ज्ञात्वा तेषां किरणसंख्यया ॥
अथवा कथयेद्विद्वान्संदृष्टग्रहसंख्यया ॥ ३५० ॥

लग्नेश्वरका बल जानकर उसके किरणकी संख्या जानकर कहना । अथवा देखनेवाले ग्रहोंकी संख्यासे कहो ॥ ३५० ॥

चंद्रे भौमयुते दृष्टे कलहेन पृथक् शयः ॥
भृगौ सौरियुते दृष्टे स्वस्त्रीकलह उच्यते ॥ ३५१ ॥

चंद्र मंगलसे युक्त या दृष्ट होवें तो स्त्रीपुरुषोंमें लड़ाई होकर अलग अलग शयन करेंगे । शुक्र शनिसे युक्त अथवा दृष्ट होवे तो व्याहता स्त्रीसे कलह होवे है ॥ ३५१ ॥

चतुर्थे च तृतीये च पंचमे सप्तमेपि वा ॥
चंद्रे शुक्रयुते दृष्टे स्वस्त्रिया कलहोभवेत् ॥ ३५२ ॥

चतुर्थ तृतीय पंचम सप्तम चंद्र होवे और चंद्रको शुक्र देखे अथवा युक्त होवे तो भी अपने स्त्रीसे लड़ाई कहना ॥ ३५२ ॥

तदीयवसनच्छेदं रचितं परिकीर्तयेत् ॥
सप्तमे पापसंयुक्ते दशमे पापसंयुते ॥ ३५३ ॥

सप्तम अथवा दशममें पापग्रह होवे तो स्त्रीका कपडा फाडाहुआ कहै ॥ ३५३ ॥

तृतीये बुधसंयुक्ते स्त्रीविवादात्स्थलेशयः ॥
लग्ने चंद्रयुते भौमे द्वितीयस्थे तदानिशि ॥ ३५४॥

बुध तीसरा होवे तो स्त्रीकी लड़ाईसे जमीनपे निद्रा करेंगे ॥ लग्नमें चंद्र होवे और मंगल दूसरा होवे तो राशिमें ॥ ३५४ ॥

जागरं चोरभीत्यर्थं राशिनक्षत्रसंधिषु ॥
दृष्टश्चेद्विधवाभोगमकरोदिति कीर्तयेत् ॥ ३५५ ॥

चोरके डरसे जागरण होवे राशि और नक्षत्रोंके संधिमें दृष्ट होवे तो विधवासे भोग कहे ॥ ३५५ ॥

तत्संधौ शुक्रसौम्यौ चेत्तदा जात्याः पतिं वदेत् ॥
यत्र कुत्रापि शशिनं पापाःपश्यंति चेत्तदा॥३५६॥

राशिनक्षत्रके संधिमें शुक्र बुध होवे तो स्वजातिका पति कहे । चंद्रको पापग्रह देखे तो ॥ ३५६ ॥

पुंसि चासह्यति वधूः शुभाश्चेत्पुरुषप्रिया ॥
सात्विकाश्चंद्रजीवार्का राजसौ शुक्रसोमजौ ॥
तामसौ शनिभूपुत्रौ चैवं स्त्रीपुंगुणाः स्मृताः ३५७
इति ज्ञान०कामकांडं विंशतितमम् ॥ २० ॥

पुरुषसे प्रीति नहीं होवेगी । यदि शुभग्रह देखे तो पुरुषकी प्रीति कहे । अब ग्रहोंका सात्विकादि भेद कहतेहैं । चंद्र गुरु सूर्य ये तीन सात्विकहैं । शुक्र बुध राजसहैं । मंगल शनि तामसहैं इसीप्रकार याने ग्रहोंको हिसाबसे स्त्री पुरुषोंके गुण जानो ॥३५७॥

इति ज्ञान०कामकांडम् ॥ २० ॥

पुत्रोत्पत्तिनिमित्तं यत्प्रश्नेस्त्रीभिःकृते सति॥३५८॥

पुत्रके विषयमें स्त्री प्रश्न करे तो॥ ३५८॥

उदयारूढच्छत्रेषु राहुश्चेद्गर्भमादिशेत्॥

लग्नाद्वा चंद्रलग्नाद्वा त्रिकोणे सप्तमेपि वा॥३५९॥

बृहस्पतौ स्थिते वापि यदि पश्यति गर्भिणी॥

शुभवर्गेण युक्तश्चेत्सुखप्रसवमादिशेत्॥ ३६०॥

लग्नआरूढ छत्रमें राहु होवे तो गर्भ है ऐसा कहै। लग्नसे अथवा चंद्रसे नवम, पंचम, सप्तम, गुरु होवे वा इन स्थानोंको गुरु देखे तो स्त्री गर्भिणी कहै। जो गुरु शुभवर्गका हो तो सुखसे प्रसव होगी॥ ३५९॥ ३६०॥

अरिनीचग्रहस्थश्चेत्सुतारिष्टं भविष्यति॥

प्रश्नकाले तु परिधौ वृषे गर्भवती भवेत्॥ ३६१॥

शत्रुके घरका या नीचघरका होवे तो पुत्रको अरिष्ट होवे। प्रश्नकालमें परिधी वृषका होवे तो गर्भवती जानो॥ ३६१॥

तदंतस्थग्रहवशात्पुंस्त्रीभेदं वदेद्बुधः॥

यत्र यत्र स्थितश्चंद्रः शुभैर्युक्तस्तु गर्भिणी॥३६२॥

उसमें जैसे पुरुष ग्रह अथवा स्त्रीग्रह होवे तो कन्यापुत्र कहो। चंद्र शुभग्रहों से युक्त कहींभी होवे तो गर्भिणीहै॥ ३६२॥

लग्नात्त्रिनवभूतेषु शुक्रादित्येन्दवः क्रमात्॥

तिष्ठन्ति चेन्न गर्भः स्यादेकत्रैते स्थिता न च ३६३

लग्नसे तीसरा शुक्र नवम सूर्य पंचम चंद्र होवे तो स्त्री गर्भिणी नहीं ऐसा कहना। यदि तीनों एकत्र होवे तो गर्भिणी कहे॥३६३॥

स्त्रीपुंविवेके गर्भिण्याः पृष्टे वा तत्र कालके॥

परिवेषादिकैर्दृष्टे तस्या गर्भो विनश्यति॥ ३६४॥

किसीने प्रश्नकरा कि, इसगर्भिणीको पुत्र होवेगा या कन्या तो परिवेषादिकों से दृष्ट होवे तो उसका गर्भनाश होवेगा ॥ ३६४ ॥

लग्नादोजस्थिते चंद्रे पुत्रं सूते समे सुताम् ॥
वशान्नक्षत्रराशीनां यथायोगं सुतं सुताम् ॥ ३६५ ॥

लग्नसे विषमस्थानमें चंद्र होवे तो पुत्र होवे समस्थानमें होवे तो कन्या होवे तथा नक्षत्र और राशिनसेभी विचारके पुत्र कन्या जैसा नक्षत्र जैसी राशि होवे वैसा कहै ॥ ३६५ ॥

लग्नात्तृतीयनवमदशमैकादशेष्वपि ॥
भानुस्थितश्चेत्पुत्रः स्यात्तथैव च शनैश्चरः ॥ ३६६ ॥

लग्नसे तृतीय नवम दशम एकादश इतने स्थानोंमें सूर्य होवे तो पुत्र होवे और शनैश्चरभी पूर्वोक्तराशिनमें होवे तो भी पुत्र कहै ॥ ३६६ ॥

ओजस्थानगताः सर्वे ग्रहाश्चेत्पुत्रसंभवः ॥
समस्थानगताः सर्वे यदि पुत्रा न संशयः ॥ ३६७ ॥

सब ग्रह विषम होवें तो पुत्र, तथा समस्थानमें होवें तो कन्या होवे ॥ ३६७ ॥

आरूढात्सप्तमं राशिं यावच्छीतांशुरेष्यति ॥
तावन्नक्षत्रसंख्याकैः सूते सा दिवसैः सुतम् ॥ ३६८ ॥
इति ज्ञान० पुत्रप्रश्नकांडमेकविंशतितमम् ॥ २१ ॥

अब दिनोंकी अवधि कहते हैं । आरूढसे सप्तराशिपर जबतक चंद्र आवेगा उतने नक्षत्रसंख्याके दिनोंमें सुत अथवा सुता होवेगी ॥ ३६८ ॥

इति ज्ञान० पुत्र० ॥ २१ ॥

सुतारिष्टमथो वक्ष्ये सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥
लग्नात्षष्ठस्थिते चंद्रे तदस्ते पापसंयुते ॥ ३६९ ॥

पुत्रके जन्महोनेपर उसको अरिष्टयोग कहतेहैं । लग्नसे छठे चंद्र होवे और चंद्रसे सप्तम पापग्रह होवे तो ॥ ३६९ ॥

मातुः सुतस्य मरणं किन्तु पंचमषष्ठयोः ॥
पापास्तिष्ठंति चेन्मातुर्मरणं भवति ध्रुवम् ३७० ॥

माता पुत्र दोनोंका मरण होवे. यदि पंचम छठे पापग्रह होवें तो माताका निश्चय मरण होवे ॥ ३७० ॥

द्वादशे चंद्रसंयुक्ते पुत्रवामाक्षिनाशनम् ॥
व्ययस्थे भास्करे नश्येत्पुत्रदक्षिणलोचनम् ३७१ ॥

प्रश्नमें बारहवाँ चंद्र होवे तो पुत्रका बाँयाँ नेत्र नाश होवेगा । वैसेही बारहवें स्थानमें सूर्य होवे तो दाहिनी आँख नाश होवे है ॥ ३७१ ॥

पापाः पश्यंति भानुं चोत्पितुर्मरणमादिशेत् ॥
चंद्रेण युक्ते दृष्टे वा मातुर्मरणमादिशेत् ॥ ३७२ ॥

पापग्रह सूर्यको देखे तो पिताका मरण जानो । चंद्रसे युक्त अथवा दृष्ट होवे तो माताका मरण कहे ॥ ३७२ ॥

चंद्रादित्यौ गुरुः पश्येन्मातापित्रोर्गदो भवेत् ॥
यदि लग्नगतो राहुर्जीवदृष्टिविवर्जितः ॥ ३७३ ॥

गुरु चंद्रको और सूर्यको देखे तो मा बापको रोग होवे । यदि लग्नमें राहु होवे और उसपर गुरुकी दृष्टि न होवे तो ॥ ३७३ ॥

जातस्य मरणं शीघ्रं वदेदत्र न संशयः ॥
द्वादशस्थावर्कचंद्रौ नेत्रयुग्मं विनश्यति ॥ ३७४ ॥

पैदा हुआ जो बालक वह शीघ्र मरेगा । बारहवें सूर्य चंद्र होवे तो दोनों नेत्र नष्ट होते हैं ॥ ३७४ ॥

षष्ठे वा पंचमे पापाः पश्यंतींदुदिवाकरौ ॥
मातापित्रोस्तु मरणं तयोर्मंदस्थितो यदि ॥ ३७५॥
छठे या पाँचवें पापग्रह होवे और वे पापग्रह चंद्र सूर्यको देखे तो माता पिताका मरण होवेहै परंतु पंचम षष्ठ शनि अवश्यहो ३७५

भ्रातृनाशं तथा भौमो मातुलस्य मृतिं वदेत् ॥
उदयादित्रिकस्थेषु कंटकेषु शुभा यदि ॥ ३७६ ॥
भाईका और मामाका नाश मंगल करताहै । अब अरिष्टभंग कहतेहैं । लग्नआरूढ छत्र इनोंके केंद्रोंमें शुभ ग्रह होवे ॥ ३७६॥

मित्रस्वात्युच्चवर्गेषु सर्वारिष्टं विनश्यति ॥
लग्नं च चंद्रलग्नं च जीवो यदि न पश्यति ॥
पापाः पश्यंति चेत्पुत्रो व्यभिचारेण जायते ३७७
इति ज्ञान०सुतारिष्टकांडं द्वाविंशतितमम् ॥ २२ ॥
मित्रक्षेत्री तथा स्वक्षेत्री तथा उच्चस्थानमें अथवा उच्चवर्गमें होवे तो सब अरिष्ट दूर होवेहै अब व्यभिचारसे संतानयोग कहतेहैं । लग्नको और चंद्रको गुरु देखे नहीं, पापग्रह देखे तो व्यभिचारसे पुत्रजन्म कहै ॥ ३७७ ॥

इति ज्ञान०सुतारिष्टम् ॥ २२ ॥

छुरिकालक्षणं सम्यक् प्रवक्ष्यामि यथातथम् ३७८
अब खड्गका विचार सम्यक् प्रकारसे कहतेहैं ॥ ३७८ ॥

राहुणा संयुते चंद्रे शस्त्रे भंगो भविष्यति ॥
नीचारिस्थाः प्रपश्यंति यदि खड्गस्य भंजनम् ३७९
राहुसे युक्त चंद्र होवे तो शस्त्रका भंग होवे । नीचग्रह शत्रुक्षेत्री ग्रह देखे तो खड्गका भंजन याने कटेगा ॥ ३७९ ॥

शुभग्रहयुते चंद्रे दृष्टे वास्ते शुभं भवेत् ॥
पापग्रहसमेतेषु छत्रारूढोदयेषु च ॥ ३८० ॥

शुभग्रहसे युक्त वा दृष्ट सप्तम चंद्र होवे तो शुभ फलहै । छत्र आरूढ लग्न पापग्रहोंसे युक्त होवे तो ॥ ३८० ॥

प्रष्टा प्रश्नाश्रितः किन्तु तदस्त्रेण हतो भवेत् ॥
अथवा कलहात्खड्गं परेणापहृतं भवेत् ॥ ३८१ ॥

पृच्छक उसी हथियारसे मारा जावे । अथवा तकरारसे दूसरा पुरुष शस्त्र छीनलेगा ॥ ३८१ ॥

तेषु स्थानेषु सौम्येषु खड्गस्तु शुभदो भवेत् ॥
प्रदर्शितस्य खड्गस्य लग्नेस्ते पापसंयुते ॥ ३८२ ॥

पूर्वोक्त स्थानोंमें शुभग्रह होवे तो खड्ग शुभको देनेवालाहै । प्रदर्शित याने बताया हुआ जो खड्ग उसके प्रश्न लग्नमें सप्तममें पापग्रह होवे तो ॥ ३८२ ॥

खड्गस्यादौ व्रणं ब्रूयात्त्रिकोणे पापसंयुते ॥
शस्त्रभंगस्ततो व्योम्नि चतुर्थे पापसंयुते ॥ ३८३ ॥

खड्गके आदिमें खंडित कहना । नवम पंचम पापग्रह होवे तो शस्त्रका भंग कहै । चौथे दशवें पापी होवे तो ॥ ३८३ ॥

खड्गस्य भंगो मध्ये स्यादिति ज्ञात्वा वदेत्सुधीः ॥
एकादशे तृतीये च पापे शस्त्राग्रभंजनम् ॥ ३८४ ॥

बीचमें खड्गका भंग कहै । एकादशमें तृतीयमें पापग्रह होवे तो शस्त्रके अग्रका भंजन होवे ॥ ३८४ ॥

मित्रस्वात्युच्चनीचारिवर्गानधिगता ग्रहाः ॥
तत्तद्वर्गस्थलायांतं शस्त्रमित्यभिधीयते ॥ ३८५ ॥

मित्रके घरका अपने घरका उच्च शत्रुक्षेत्री और नीचक्षेत्री इन

स्थानोंमेंसे जिस स्थानका ग्रह हो उसी स्थानसे खड्ग लाया कहै इसी प्रकारसे सब जानो ॥ ३८५ ॥

सन्मुखो यदि खड्गी स्यात्तदीयं खड्गमुच्यते ॥
तिर्यङ्मुखश्चेत्तच्छस्त्रमन्यदीयमितीरयेत् ॥ ३८६

तलवार लेकर सामने आवे तो जानो कि, तलवार उसीकी है । तिरछा मुख उसका होवे तो वो हथियार दूसरेकाहै ॥ ३८६ ॥

अधोमुखश्चेत्संग्रामे च्युतमाहृतमुच्यते ॥
तत्तश्चेष्टानुरूपेण स्वान्याहरणविस्मृतिः ॥ ३८७ ॥

इति ज्ञान० क्षुरकांडंत्रयोविंशतितमम् ॥ २३ ॥

युद्धमें नीचे मुख करे तो गिरा हुआ टूटा हथियार जानो । इसी प्रकार सब जानो ॥ ३८७ ॥

इति ज्ञान० क्षुर० ॥ २३ ॥

शल्यप्रश्ने तु तत्काले पादभा वसुनेत्रयुक् ॥
अभ्यस्तान्नृपसंख्याप्तं शेषाणां फलमुच्यते ३८८

शल्य उसका नामहै कि, खोदनेसे जमीनमें जो पदार्थ मिले । ऐसे शल्य विषयमें प्रश्न करे तो उसी समय अपने पादकी छाया गिनकर उसमें अट्ठाईस जोड़े जो संख्या होवे उसमें सोलहका भाग देवे बचेंगे उन्होंका फल जानो ॥ ३८८ ॥

कपालास्थीष्टकालोष्टकाष्ठदेवविभूतयः ॥
शवांगारकधान्यानि धनपाषाणदर्दुराः ॥ ३८९ ॥
गोस्थिश्वास्थिपिशाचादिक्रमाच्छल्यानिषोडश॥
एषु शल्येषु मंडूकस्वर्णगोस्थिषु धान्यकम् ३९०

जैसे एक बचे तो कपाल यानी आदमीकी खोपडी, दोसे हड्डी, तीनसे ईंटें, चारसे मृत्तिका, पाँचसे लकड़ी छैसे देवताकी मूर्ति,

सातसे भस्म, आठसे मुर्दा, नौसे कोयला, दशसे नाज ग्यारहसे धन, बारहसे भाठा, तेरहसे मंडूक, चौदहसे गायकी हड्डी, पंद्रह बचे तो कुत्ताकी हड्डी, सोलहसे भूत आदि इनोंमें मंडूक सुवर्ण गायकी अस्थि और नाज ॥ ३८९ ॥ ३९० ॥

दृष्टं चेदुत्तमं चान्ये सर्वेस्युरशुभास्तथा ॥
अष्टाविंशतिकोष्ठेषु वह्निधिष्ण्यादिकं न्यसेत् ३९१
यत्र भे तिष्ठति शशी तत्र शल्यमुदाहृतम् ॥
उदयर्क्षादिकं न्यस्येदष्टाविंशतिकोष्ठके ॥ ३९२ ॥

यह शुभफलके दाताहैं अन्य शल्य अशुभहै । अब अहिबल चक्र कहतेहैं ज्ञानप्रदीपमें शल्यप्रकरण अतिसंक्षेपसे लिखाहै इस लिये इस विषयको सविस्तर वर्णन करनेके लिये नृपतिजयचर्या-के २७ श्लोक भाषानुवादसहित लिखे जातेहैं अहिबलचक्र आगे लिखाहै इसमें कृत्तिकानक्षत्र पर जो सर्पकी सूरत बन रहीहै उसका नाम शेषका मस्तकहै. जिस जगहमें धनकी शंका हो उस स्थानकी लंबाई चौड़ाईके अनुकूल पृथ्वीपर रेखा खींचकर इतना बड़ा चक्र बनाना जो उस जगहमें मासके इस चक्रसे शल्य और धन अथवा शून्य मालूम होगा। जिस जगह धन होवे उस जगह चक्र स्थापन करे । स्थानके दरवाजेपर यंत्रका मुख करे ॥ ३९१ ॥ ३९२ ॥

"गणयेच्चंद्रनक्षत्रं तत्र शल्यं प्रकीर्तितम् ॥
अहिचक्रं प्रवक्ष्यामि यथा सर्वज्ञभाषितम् ॥ १ ॥
द्रव्यं शल्यं तथा शून्यं येन जानाति साधकः ॥
ऊर्ध्वं रेखाष्टकं लेख्यं तिर्यक्पंच तथैव च ॥
अहिचक्रं भवत्येवमष्टाविंशतिकोष्ठकम् ॥ २ ॥

इसप्रकार यंत्र बनावे दरवाजेके नजीक दोनोंतरफ मघा और भरणी तथा बीचमें कृत्तिका आवे । तिरछी पाँच रेखा और सूधी आठ ऐसे अट्ठाईस कोठांकों यंत्र बनावे ॥ १ ॥ २ ॥

निधिर्निवर्तनैकस्थः संभ्रांतो यत्र भूतले ॥
तत्र चक्रमिदं स्थाप्यं स्थानद्वारमुखस्थितम् ॥ ३ ॥

जहाँ धनहै ऐसा वहम हो वहाँ ये यंत्रस्थापन करे जहाँ निधिका दरवाजाहै वहाँ उस यंत्रको इस ढबसे रक्खे कि, दरवाजेपर कृत्तिका आवे ॥ ३ ॥

तत्र पौष्णाश्वियाम्यर्क्षं कृत्तिका पितृभाग्यकम् ॥
उत्तराफाल्गुनी लेख्यंपूर्वपंक्त्यां भसप्तकम् ॥ ४ ॥

अब यंत्रमें सूधे नक्षत्र भरे । रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफल्गुनी इस प्रकार ऊपरके पंक्तिमें लिखना ॥ ४ ॥

अहिर्बुध्न्यादिपादर्क्षं शातभं ब्रह्मसार्पभम् ॥
पुष्यहस्तं समालेख्य द्वितीयां पंक्तिभास्थितम् ५
विधिविष्णुधनिष्ठाख्यं सौम्यं रौद्रपुनर्वसू ॥
चित्राभं च तृतीयायां पंक्तौधिष्ण्यस्य सप्तकम् ६
विश्वर्क्षं तोयभं मूलं ज्येष्ठामैत्रविशाखिके ॥
स्वाती पंक्तं चतुर्थ्यां च कृत्वा चक्रं विलोकयेत् ॥७॥
एवं प्रजायते चक्रे प्रस्तारपन्नगाकृतिः ॥
द्वारशाखे मघायाम्ये द्वारस्था कृत्तिका मता ॥ ८ ॥

उत्तराभाद्रपदा, पूर्वाभाद्रपदा, शततारका, रोहिणी, आश्लेषा, पुष्य, हस्त इस प्रकार दूसरी पंक्तिमें । अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, मृग, आर्द्रा, पुनर्वसु, चित्रा इस प्रकार तीसरी पंक्तिमें । उत्तराषाढा,

पूर्वाषाढा, मूल, ज्येष्ठा, अनुराधा, विशाखा, स्वाति चौथे पंक्तिमें इस प्रकार यंत्र करके देखे यह प्रस्तार शेषके समान होता है। दरवाजेपर कृत्तिका दोनों तरफ मघा भरणी ये नक्षत्र लिखना ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

अश्वीशपूर्वाषाढादित्रिकं पंच चतुष्टयम् ॥
रेवती पूर्वाभाद्रेंदोर्भानि धिष्ण्यानि भास्वतः ॥ ९ ॥

अथ अहिबलचक्रम् ।

रे.चं.	अ.चं	भ.चं.	कृ.चं.	म.चं.	पू.चं.	उ.	
उ.	पू.चं	श.	रो.	आ.चं	पु.चं.	ह.	
अ.	श्र.चं.	ध.चं.	मृ.	आ.चं	पु.चं.	चि.	
उ.चं.	पू.चं.	मू.	ज्ये.	अ.	वि.	स्वा.	

अश्विनीसे तीन, आर्द्रासे पांच, पूर्वाषाढासे चार, रेवती, पूर्वाभाद्रपदा इतने नक्षत्र चंद्रके हैं बाकीके सूर्यके हैं ॥ ९ ॥

उदयादिगता नाड्यो भघ्नाः षष्ट्याप्तशेषके ॥
दिनेंदुभुक्तयुक्तोसौ भवेत्तत्कालचंद्रमाः ॥ १० ॥
षष्टिघ्नंतं निशानाथं शरवेदाप्तकं पुनः ॥
युगः शेषं भवेद्यत्तत्प्रागादि चक्रवक्रगम् ॥ ११ ॥

अब तात्काल चंद्रकरनेकी विधि कहतेहैं । वर्त्तमान चंद्रनक्षत्रकी भुक्त घटीको २७ से गुणना और गुणनफलमें ६० का भाग देना जितनी लब्धि आवे उतनेही नक्षत्र वर्त्तमान नक्षत्रसे आगे गिनलेना जो आवे वही तत्काल चंद्र है और शेषमें १५ का भाग देना लब्धिसे वर्त्तमान नक्षत्रका गतचरण समझना । उदाहरण—इष्टोपरि मृगाशिर नक्षत्रकी भुक्त घटी ५२ है इनको २७ से गुणा तो १४०४ हुवे ६० के भाग देनेसे २३ लब्धि आई आर्द्रासे [illegible] नक्षत्र अश्विनी है तो मालूम हुआ कि तत्काल मेषका [illegible]पर है इसतरह तत्काल चंद्रमा होताहै । अब दिशाका

साधन । उस चंद्रको साठसे गुणा करना और पैंतालीससे भाग लब्धिको चारसे भाग नौ बचे वो दिशा. एक बचे तो पूर्व, दो बचे दक्षिण इस प्रकार दिशा जानो । चंद्रके समान सूर्यका भी साधन करे । बुद्धिसे जैसा चंद्रका साधन करा है ऐसा ही सर्यका करके ॥ १० ॥ ११ ॥

चंद्रवत्साधयेत्सूर्यमृक्षस्थं चेष्टकालिकम् ॥
पश्चाद्विलोकयेत्तौ च स्वर्क्षे वा चान्यभे स्थितौ १२
चंद्रऋक्षे यदार्कंदू निधिस्तत्र न संशयः ॥
भानुऋक्षे स्थितौ तौ चेत्तदा शल्यं च नान्यथा १३॥
स्वस्वभे द्वितयं ज्ञेयं नास्ति किंचिद्विपर्यये ॥
स्थितं न लभते द्रव्यं चंद्रे क्रूरग्रहान्विते ॥ १४ ॥
पुष्टे चंद्रे भवेन्मुद्रा क्षीणे चंद्रेल्पको निधिः ॥
ग्रहदृष्टिवशात्सोपि विज्ञेयो नवधा बुधैः ॥ १५ ॥
हेम तारं च ताम्रारं रत्नं कांस्यायसं त्रपु ॥
नागं चंद्रे विजानीयाद्भास्करादिग्रहेक्षिते ॥ १६ ॥

फिर देखना कि, चंद्र सूर्य अपने नक्षत्रमें है या नहीं। चंद्रके नक्षत्रमें चंद्र सूर्य दोनों होवें तो निश्चयसे निधि कहना । यदि सूर्यके नक्षत्रमें दोनों होनेसे शल्य कहै । चंद्र और सूर्य अपने अपने नक्षत्रमें होवें तो शल्य और निधि दोनों हैं । क्षीणचंद्रसे थोड़ा धन । पुष्टचंद्रसे बहुत धन । ग्रहोंकी दृष्टिसे धातु जानै । सूर्यसे हेम चंद्रसे मोती मंगलसे ताम्र बुधसे पीतल गुरुसे रत्न शुक्रसे कांसा शनिसे लोहा राहुसे रांगा केतुसे सीसा इस प्रकार जानै । सब ग्रहोंकी दृष्टिसे बडी निधि ! शुभग्रहके घरमें चंद्र होवे तो लाभ क्रूरक्षेत्रमें होवे तो लाभ नहीं होवेगा ॥१२॥१३॥१४॥१५॥१६॥

मिश्रैर्मिश्रं भवेद्द्रव्यं शून्यं दृष्टिविपर्यये ॥
सर्वग्रहेक्षिते चंद्रे निर्दिशेत्सैं ...